शोध संचयन

Half yearly, Bilingual (हिन्दी & English)
ISSN 0975 1254 (Print)
ISSN 2249 9180 (Online)

Vol. 11, Issue 1 & 2, 15 July, 2020

An Internationally Indexed Peer Reviewed Refereed Research Journal
And a complete Periodical dedicated to
Humanities & Social Science Research

मुख्य सम्पादक :
डॉ. योगेन्द्र प्रताप सिंह

सम्पादक :
डॉ. सुनीता सिंह

सह सम्पादक :
डॉ. प्रदीप कुमार राव

www.shodh.net

Contact us with ;

शोध संचयन

Vol. 11, Issue 1 & 2, 15 July, 2020

मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान पर केन्द्रित अर्द्धवार्षिक शोध जर्नल

प्रकाशकीय कार्यालय :

B-9, द्वितीय तल, गगन अपार्टमेंट,
गगन विहार एक्सटेंशन, दिल्ली, 51
E-mail : shodhsanchayan@gmail.com
info@shodh.net
URL : www.shodh.net

संपादकीय पत्र व्यवहार :
डॉ0 सुनीता सिंह, संपादक
409, शांतिवन अपार्टमेन्ट
2A/244A, आजाद नगर कानपुर- 208002
सम्पर्क : +919415050808

मूल्य : रु0 150/-

SUBSCRIPTION FEE OF JOURNAL

Individual :				
	One Year	**Three Year**	**Five Year**	**Life***
Rs.	Not Available	800	1400	3000
US$	15	30	60	200

Institutional :				
	One Year	**Three Year**	**Five Year**	**Life***
Rs.	400	1100	1800	4000
US$	25	50	100	300

Bank Draft or Crossed Cheque (CBSB Branches for out station cheque) accepted in Favour of "**Shodh Sanchyan**" payable at **Kanpur**. Overseas subscribers can subscribe by electronic transfer. For detail visit **www.shodh.net.** Excluding Postage.

*Subscription fee may be revised according to Editorial Board Decision. Life subscription is for ten years or servival of the journal, which is less. Postage charge excluded.

नोट : प्रकाशित आलेखों के विचारों से सम्पादक की सहमति अनिवार्य नहीं है। समस्त वाद क्षेत्र कानपुर होगा।

संपादक, प्रकाशक एवं मुद्रक डॉ0 सुनीता सिंह द्वारा शिवा प्रिंटिंग वर्क्स, A-21/11 नारायणा इण्डस्ट्रियल एरिया, फेस-II नई दिल्ली, 98 से मुद्रित कराकर B-9, द्वितीय तल, गगन अपार्टमेंट, गगन बिहार एक्सटेंसन, दिल्ली–51 से प्रकाशित

लेखकों से अनुरोध

शोध संचयन सामाजिक विषय एवं मानविकी का अर्द्धवार्षिक शोध-जर्नल है जिसमें उपरोक्त विषयों से संबंधित सभी उपविषयों के मौलिक शोध-पत्र, शोध समीक्षा, विचार, लेखों आदि का प्रकाशन किया जाता है। शोधकर्ता हिन्दी अथवा अंग्रेजी भाषा में अपने शोध पत्र भेज सकते है।

शोध पत्र भेजते समय कृपया निम्न बिन्दुओं पर ध्यान दें:-

1. शोध-पत्र अधिकतम 4000-5000 शब्दों तक में हो तथा 150 शब्दों का सार संक्षेप एवं विषय संकेतक (Key Words) भी प्रेषित करें। प्रचलित शब्दावली का व्यवहार अपेक्षित है।
2. संदर्भ ग्रन्थ सूची का उल्लेख अवश्य करें। संदर्भ ग्रन्थ सूची में लेखक का उपनाम, मुख्य नाम, पुस्तक का नाम, प्रकाशन का वर्ष एवं पृष्ठ संख्या अंकित होना चाहिए। पत्रिका के संदर्भ में लेख का शीर्षक, पत्रिका का नाम, अंक, पृष्ठ क्रम एवं प्रकाशन वर्ष दें।
3. शोध-पत्र A4 साइज के कागज पर कम्प्यूटर से एक तरफ मुद्रित हो।
4. शोध-पत्र एम.एस. वर्ड अथवा पेज-मेकर पर हिन्दी में Krutidev 10 के Font size 12 तथा अंग्रेजी में Times New Roman में Font size 10 में टाइप करवाकर भेजें।
5. ई-मेल द्वारा प्रपत्र भेजने पर भी आलेख **तीन प्रतियों में (Hard Copy)** तथा **सीडी में** अवश्य भेजें। जिससे प्रूफ रीडिंग सम्बन्धी कमियों को दूर किया जा सके।
6. शोध-पत्रों की स्वीकृति एवं अस्वीकृति का अन्तिम निर्णय संबंधित विषय के दो विशेषज्ञों की राय से सम्पादक मण्डल द्वारा किया जाता है। इस सम्बन्ध में अन्तिम अधिकार प्रधान सम्पादक को प्राप्त है जो सभी सदस्यों को मान्य होगा
7. शोध-पत्र के प्रकाशन हेतु सम्पादक के नाम पत्र होना चाहिए, जिसमें स्पष्ट रूप से शोध-पत्र के सम्बन्ध में ''मौलिक एवं अप्रकाशित'' शब्द लिखा होना चाहिए और उसे अन्यत्र न भेजे जाने की पुष्टि हो। www.shodh.net से सर्टिफिकेट ऑफ ओरिजिनलिटी प्राप्त करें और लेख के साथ भरकर भेजें।
8. शोध-पत्र में सारणी एवं चित्रों का प्रयोग लेख के बीच में न करते हुए अंत में संदर्भ या संलग्नक के रूप में करें।
9. शोध-पत्र ई-मेल द्वारा हमारे ई-मेल पते पर और डाक द्वारा निम्न पते पर भेजे जा सकते हैं-

shodhsanchayan@gmail.com
info@shodh.net

डॉ० सुनीता सिंह, संपादक शोध संचयन,
409, शान्तिवन अपार्टमेंट
2A/244A आजाद नगर, कानपुर-208002 (उ०प्र०)

अपने आलेख को लिखते समय कृपया ध्यान दें:-
(शोध आलेख में होने वाली सामान्य त्रुटियाँ)

1. आलेख में नई एवं मौलिक उद्भावनाओं/अवधारणा के प्रतिपादन का अभाव एवं पूर्व स्थापित अवधारणा/मान्यता, स्थापना आदि का पिष्टपेषण
2. शोध आलेख का तार्किक एवं श्रृंखलाबद्ध न होना और शब्दजाल की अनावश्यक उपस्थिति।
3. संदर्भ साहित्य का अपर्याप्त अध्ययन।
4. त्रुटिपूर्ण तथ्यों एवं आँकड़ों का उल्लेख
5. पाठ में उल्लिखित संदर्भ का लेख के अन्त में दी गयी संदर्भ सूची में न लिखा जाना
6. संदर्भ में पुस्तक के संस्करण का न लिखा जाना
7. पाठ में व्याकरणिक त्रुटियों का होना
9. वाक्य में काल का असंगत होना
10. प्रस्तुति में असंगतता
11. लेखक के द्वारा आलेख शुद्ध करते समय शब्द/पद/वाक्य का लोप हो जाना
12. लेख का अपेक्षाकृत बड़ा हो जाना
13. विषय प्रतिपादन में विषय का अस्पष्ट होना
14. तथ्यों, भावों या विचारों की पुनरावृत्ति

Abstract:-

The researchers must give Abstract of their papers/Articles. It must be concise, clear and perfect in itself and should not be the repetition of paragraphs given research papers.

शोध सारांश :-

अनुसंधाता द्वारा अपने शोध-पत्र/ शोध-आलेख का आलेख सार (Research Article Abstract) अधिकतम 150 शब्दों में अवश्य दिया जाए। आलेख सार बनाते समय इस बात का ध्यान रखा जाये कि वह अपने आप में संक्षिप्त, स्पष्ट एवं पूर्ण हो तथा मूल शोध-आलेख के अनुच्छेदों की पुनरावृत्ति न हो।

Key Words :-

Keywords of research paper/article must be given at the beginning of the paper. It should not be in more than 5 words.

विषय संकेत :-

शोध-पत्र/लेख के विषय का सम्पूर्ण परिचय प्रस्तुत करने वाले शब्दों को अवश्य दें। इनकी संख्या पाँच से अधिक नहीं होनी चाहिए।

Be Research Journalist

Be a Research Journalist and join us. Send research based News, information, reports and photographs of Seminars etc.

RESEARCH FLOURISHES THROUGH PUBLICATION & EFFICIENT ACADEMIC NETWORKING

CHIEF EDITOR :
Prof. Yogendra Pratap Singh
Professor, Dept. of Hindi & Modern Indian Languages, Allahabad University, Prayagraj

EDITOR & PUBLISHER :
Dr. Sunita Singh
Dept. of M.Ed., V.S.S.D. College, Kanpur

ASSOCIATE EDITOR :
Dr. Pradeep Kumar Rao,
Principal, M.P. Degree College, Gorakhpur

NEWS EDITOR :
Dr. A.K. Singh
Dept of Journalism & Mass Communication
Baba Saheb Bheem Rao
Ambedkar, Central University, Lucknow
Dr. Ramesh Verma,
Senior Journalist, Kanpur

EXECUTIVE EDITOR :
Dr. Bipin Chandra Kaushik,
Dept. of Pol. Science, D.B.S. College, Kanpur
Dr. Vikas Mishra,
Dept. of B.Ed., Akbarpur Degree College, Akbarpur, Kanpur- Dehat

HINDI LANGUAGE EDITOR :
Dr. Vibha Singh,
Dept. of Hindi, D.A-V College, Kanpur

ENGLISH LANGUAGE EDITOR :
Dr. Suman Singh,
Dept. of English, P.P.N. College, Kanpur

TRANSLATION EDITOR :
Dr. Rajendra Prasad Pandey,
Dept. of Translation Studies, I.G.N.O.U., Dehli

CONVENER & CO-CONV. REVIEW COMMITTEE :
Dr. Raj Saran Shahi,
Dept. of Education, Budh P.G. College, Kushinagar
Dr. Jyoti Yadav,
Dept. of English, M.K.R. Gov.College, Ghaziabad.

ASSISTANT EDITOR
Mr. Vinod Kumar Verma
Dept. of Law, V.S.S.D. College Kanpur
Mr. Devendra Pratap Singh
Dept. of M.Ed., V.S.S.D. College Kanpur
Mr. Nitesh Verma
Asst. Lib., Central Library, Baba Saheb Bheem Rao Ambedkar, Central University, Lucknow
Nivedita Singh, *R.S., A. U., Prayagraj*
Richa Singh, *R.S., A. U., Prayagraj*

EDITORIAL ADVISORY BOARD

Prof. Ram Chandra,
Dept. of Hindi, J.N.U., Delhi
Dr. Tribhuwan Singh,
Principal, B.A.D. College, Ballia
Dr. Lalit Singh,
Dept. of Humanities, Registrar,M.G.C.G. Vishwavidyalya, Chitrakot, Satana
Dr. Pawan Agrawal,
Dept. of Hindi, Lucknow Univ., Lucknow
Dr. Jai Veer Singh,
H.O.D, Hindi, R.M.P.P.G., College, Sitapur
Dr. Krishna Kanti Dixit,
Dept. of Hindi, D.A-V. College, Kanpur
Dr. Mahesh Diwakar,
President, Akhil Bhartiya Sahitya Kala Manch, Mooradabad
Dr. Gayatri Singh,
Principal, Armapore Degree College, Kanpur
Dr. Kusum Singh,
Dept. of Humanities, M.G.C.G. Vishwavidyalaya, Chitrakot, Satna
Dr. Jacob Kurion,
Professor of In ternational Economics at the Johns Hopkins University Center for Advanced International Relations (SAIS) in Nanjing, China.

शोध संचयन

Vol. 11, Issue 1 & 2, 15 July, 2020

अनुक्रम

फेक समाचारों का अध्ययन (कोविड-19 के संदर्भ में)

डॉ. अरविन्द कुमार सिंह......07

A Questionnaire Based Study To Assess Awareness &General Knowledge Regarding Covid-19 Pandemic Among UG Students Of Degree Collages Of Kanpur, Uttar Pradesh

Dr. Ranju Kushwaha 16

कोविड 19 का राजनीतिक प्रभाव: चिंतन, चुनौती एवं संभावनाएँ

डॉ. लता धुपकरिया 21

Role of Covid-19 epidemic in disrupting Indian Education System

Rajni Kant Dixit 24

विधि विरुद्ध बालकों के मानवाधिकारों के परिप्रेक्ष्य में कोविड-19 महामारी की प्रभावशीलता

कमलकान्त जोशी......28

सामान्य जन-जीवन को संक्रमित करता 'कोरोना काल'

गंगा कोइरी......33

कोरोना काल में जड़ता के विरुद्ध सामर्थ्य और आत्मविश्वास कविता 'प्रार्थना'

नेहा साव 38

Study on Measures to Revitalize State Financial Corporations

D r Neena Tandon......43

महाकवि भवभूति की काव्यकृतियों में सामाजिकौचित्य

डॉ. वन्दना कुमारी......49

Portrayal of women on OTT video streaming platform in India

Sagar Kanojiya, Dr. Kaushal Tripathi 54

वर्तमान संन्दर्भ में साहित्य से अपेक्षाएँ

प्रो0 यशवंत सिंह......62

जाति का प्रश्न और हिंदी दलित आत्मकथाएं

प्रो0 रामचंद्र......66

नरेंद्र कोहली के रामकथा आधारित उपन्यासों में उत्तर आधुकिता

डॉ० राजनारायण शुक्ला, डॉ०बीना शुक्ला 77

हृदय की भावपूर्ण अभिव्यक्ति हैं ''लॉकडाउन''की कविताएँ

डॉ0 योगेन्द्र नाथ शर्मा......80

An honest warning to research contributors

The writing of research papers is a very common phenomenon in the academic world. But now-a-days this is done without giving due care to the norms and ethics accepted for writing research papers. Even a small mistake spoils the reputation of the concerned person. We come across several stories of the violation of accepted norms. With the help of Electronic Editing, it is very common to cut ,copy and paste in Research article / thesis formation without giving a reference of the original work. We should always keep in mind that it is not a fare practice. While reviewing, sometimes we come across such malpractices. Such stories suggest that research scholars must be very honest and sincere in their work and must give proper attribution in case they quote any content from any original work.

Editor

Key-points which you have to keep in mind

Your research article is no doubt relevant and important. But we are need of your help.
Please review your article according to our specified format and send it.
There are certain key-points which you have to keep in mind-
*Article must have any research problem.
**Title of the research article should reflect research problem.
*** Research Abstract about research work should be presented in max. 100 words.
**** Abstract:- Abstract of the paper/Articles must be concise, clear and perfect in itself and should not be the repetition of paragraphs from given research papers.

शोध सारांश:-

अनुसंधाता द्वारा अपने शोध पत्र/शोध आलेख का सारांश अधिकतम 100 शब्दों में दिया जाना अपेक्षित है। आलेख सार बनाते समय इस बात को ध्यान में रखा जाना अपेक्षित है कि वह अपने आप में संक्षिप्त, स्पष्ट एवं पूर्ण हो तथा मूल शोध आलेख के अनुच्छेदों की पुनरावृत्ति न हो।

* Approx. 5 keywords for online searching the article
Key Words:-

Keywords of research paper/article must be given at the beginning of the paper. It should not to be in more than 5 words.

विषय संकेत :-

शोध पत्र के विषय का सम्पूर्ण परिचय प्रस्तुत करने वाले कुछ शब्दों को अवश्य दें, जिससे आपके आलेख को इन्टरनेट पर सहजता से खोजा जा सके।

*References should be proper, relevant and abundant.
References must be in end-note style as given bellow-
Author's name, Book's name, Publisher, Place, Year, Page no.

फेक समाचारों का अध्ययन (कोविड-19 के संदर्भ में)

बीज शब्द :

कोविड-19, फेक समाचार, सोशल मीडिया

सूचना समाचार की दुनिया में फेक समाचार आज एक बहुत ही सुपरिचित शब्द बन गया है। डिजिटल तकनीक एवं सोशल मीडिया के उदय के साथ ही फेक समाचारों का प्रचार प्रसार भी काफी व्यापक तौर पर होने लगा है। सोशल मीडिया पर फेक समाचार आडियो, वीडियो, फोटो, टेक्स्ट आदि सभी रूपों में पाये जाते हैं। इस प्रकार के समाचारों की उत्पत्ति एवं प्रसार के कारण प्रायः काफी समस्याओं का सामना करना पड़ता है। इससे निपटने के लिए कई स्तरों पर प्रयास भी लगातार किये जा रहे हैं। कोविड बीमारी के दौरान भी सोशल मीडिया पर फेक समाचार काफी अधिक संख्या में सतत् दिये जाते रहे हैं। प्रस्तुत शोध में सोशल मीडिया पर कोविड समाचार के सन्दर्भ में डाले गये फेक समाचारों का अध्ययन किया गया है। इसके अन्तर्गत यह पता लगाने का प्रयास किया गया है कि कोविड से सम्बन्धित किस प्रकार के फेक समाचार दिये गये हैं। इसी के साथ यह भी पता लगाने की कोशिश की गयी है कि फेक समाचार देने के पीछे क्या कारण हैं और इस प्रकार के समाचारों का प्रभाव क्या है तथा इसे रोकने के लिए क्या प्रयास किये जाते हैं। इस गुणात्मक अध्ययन के लिए द्वितीयक सामग्री का मुख्यतः उपयोग किया गया है।

*****

अरविन्द कुमार सिंह
पत्रकारिता एवं जनसंचार संस्थान,
बाबासाहेब भीमराव अंबेडकर विश्वविद्यालय, लखनऊ

शोध संचयन
A Refereed Research Journal
And a complete Periodical dedicated to
Humanities & Social Science Research
ISSN 0975 1254 (PRINT)
ISSN 2249-9180 (ONLINE)
www.shodh.net
Vol. 11
Issue 1&2
15 July 2020

फेक समाचारों का अध्ययन(कोविड-19 के संदर्भ में)

फेक समाचार का भिन्न भिन्न लोगों के लिए भिन्न भिन्न अर्थ हो सकता है। इसे विविध प्रकार से परिभाषित किया गया है। विभिन्न मीडिया प्लेटफार्म पर झूठे सूचनाओं को दिया जाना ही फेक समाचार कहलाता है।[1,2] ये कई प्रकार के हो सकते हैं।[3] जनमाध्यमों में फेक समाचारों का प्रकाशन किसी भी प्रकार से कोई नयी बात नही है। सोशल मीडिया पर फेक समाचार आडियो, वीडियो, फोटो, टेक्स्ट आदि सभी रूपों में पाये जाते हैं। यूनाइटेड स्टेट आफ अमेंरिका जैसे देश में मौसम बदलाव की सूचना में भी काफी झूठी बातें बतायी जाती हैं और उससे लोग प्रभावित भी होते हैं।[4] भारतीय जनमाध्यमों में एक लंबे समय से फर्जी समाचार प्रकाशित किए जाते रहे हैं। पहले इनकी संख्या सीमित होती थी और कुछ लोग ही इस कार्य को कर पाते थे।

फेक समाचारों के प्रकाशन के पीछे विविध प्रकार के उद्देश्य होते हैं।[5] कई बार वे अपने मंतव्य में सफल भी हो जाते रहे हैं। फेक समाचार सभी विषयों से जुड़ करके दिये जा रहे हैं। इसमें स्वास्थ्य एवं बीमारी के संदर्भ में फेक समाचार का दिया जाना भी शमिल है। प्रशासन, डाक्टर और मेडिकल के क्षेत्र में कार्य करने वाले अन्य लोगों के लिए हमेशा से फेक समाचार एक चुनौती के रूप में रहे हैं। विभिन्न बीमारियों और उनके इलाज के संदर्भ में बहुत सी झूठी बातें काफी पहले से प्रकाशित होती रही हैं।[6] कुछ अवसरों पर इस प्रकार के झूठे समाचार बढ़ भी जाते हैं। खास करके जब किसी प्रकार की कोई आपदा या बीमारी आती है और लोग उससे परेशान हो जाते हैं तथा उसके समाधान के तलाश में रहते हैं तो इस प्रकार के समाचारों की भी बाढ़ सी आ जाती है। यह भी देखा गया है कि फेक समाचारों के आधार पर राजनीतिक क्षेत्र में काफी लम्बे समय तक विवाद चलते रहते हैं।[7] राजनीतिक क्षेत्र में फेक समाचारों की प्रायः भरमार लगी रहती है।[8] धार्मिक क्षेत्र में भी फेक समाचार दिये जाते हैं। ऐसे समाचार एक वायरस की तरह से हैं जो कि सत्य समाचार की तुलना में काफी तेज गति से दूर दूर तक विभिन्न सोशल मीडिया पर ये फैलते हैं और यह इन पर काफी दिनों तक टिके रहते हैं।[9] वहीं दूसरी तरफ, यह भी सत्य है कि कई बार किसी समाचार को कई कारणों से फेक समाचार कह करके प्रचारित किया जाता है और बाद में वह सत्य साबित होता है।[10]

समस्या का वर्णन- वर्ष 2019 के दिसम्बर माह से कोविड की समस्या एक बहुत ही भयानक समस्या के रूप में सम्पूर्ण मानव के समक्ष परिलक्षित हुई है। मानव समाज के इतिहास में इस प्रकार की समस्या सदियों में कभी कभी इस रूप में आती रही हैं जिसमें कि सभी मानव जाति अपने को असहाय रूप में महसूस करती हैं। ऐसी स्थिति में कही से भी किसी प्रकार की जब कोई आशा की किरण दिखती है तो फिर वे उस तरफ उम्मीद भरी नजरों से देखते हैं। किन्तु ऐसे अवसरों पर ही उन लोगों की भी कमी नही है जो कि अपने निहित क्षुद्र स्वार्थो के लिए झूठे समाचारों को प्रचारित एवं प्रसारित करते हैं। कोविड बीमारी के आगमन के साथ ही बहुत बड़ी संख्या में इसके बारे में जनमाध्यमों और विशेष तौर पर सोशल मीडिया पर झूठे समाचार भी दिये जाने आरम्भ हो गये।[11] इन समाचारों का काफी प्रभाव भी पड़ा है। इस प्रकार के समाचार देने के पीछे निश्चित रूप से कुछ कारण होते हैं जिन्हे कि समझने और जानने की आवश्यकता है। कोविड आपदा के समय एक झूठा समाचार जो कि सभी जगहों पर आया है, वह कोविड के इलाज एवं कोविड-19 टीकाकरण के खिलाफ रहा है। कोविड के दौरान फेक समाचारों की संख्या लगातार बढ़ती ही रही है। ऐसे समाचारो में से कई समाचार विश्व स्तर पर प्रचारित और प्रसारित होते हैं। भारत ही नही, दुनिया के अन्य देशों में भी फेक समाचार की समस्या से लोग परेशान हैं। डिजिटल तकनीक ने कोविड के दौरान फेक समाचारों के दायरे का काफी व्यापक बना दिया है। गाई बर्गर(2021) जो कि यूनेस्को में संचार एवं सूचना के नीति एवं रणनीति से जुड़े मामलों के निदेशक हैं, उनका मानना है कि कोविड से सम्बन्धित झूठे समाचार बहुत ही सामान्य बात हो गयी है।[12] विज़य के अनुसार फेक समाचारों की व्यापकता भी कम या अधिक होती है। सोशल मीडिया पर फेक समाचारों का प्रसारण व्यक्ति एवं समाज पर बहुत ही नकारात्मक प्रभाव डालता है। इसलिए इस विषय पर अध्ययन लोगों का काफी ध्यान खींच रहा है।[13]

साहित्य अध्ययन- फेक समाचार के बारे में शुरू से ही काफी अध्ययन किये गये हैं जो कि इससे विविध पक्षों से जुड़े हुए हैं। इन अध्ययनों में आनलाइन प्लेटफार्म पर कोविड से जुड़े अफवाह एवं साजिशों और उससे सम्बन्धित विषय सामग्री का और फिर इस प्रकार के गलत सूचनाओं से निपटने और टीकाकरण कार्यक्रम को बढ़ावा देने के लिए उस सन्दर्भ में किये जाने वाले कार्यक्रमों का अध्ययन किया गया है। इस्लाम(2021) द्वारा किये गये अध्ययन में यह पाया गया कि कुल 637 टीका सम्बन्धी समाचारों में 91 प्रतिशत अफवाह एवं 9 प्रतिशत कन्सपायरेसी

सिद्धान्त से जुड़ करके समाचार दिये गये थे। ये समाचार कुल 52 देशों से लिये गये थें। इसमें 578 समाचार अफवाह से जुड़े थे, जब कि 36 प्रतिशत टीकाकरण कार्य की उपलब्धता और पहुँच के विविध पहलुओं से जुड़ करके रहे और 20 प्रतिशत समाचार रोग और मृत्यु दर से जुड़ करके रहे। 8 प्रतिशत समाचार सुरक्षा पहलु से और शेष समाचार अन्य पक्षों से सम्बन्धित रहे। इन कुल 637 समाचारों में सिर्फ पॉच प्रतिशत समाचार सत्य रहे जबकि शेष समाचार झूठे रहें। इसी प्रकार से इसमें 10 प्रतिशत समाचार गुमराह करने वाले थे जबकि 2 प्रतिशत समाचार को बढ़ा चढ़ा करके बताया गया था।[14] एक अन्य अध्ययन सलमान(2020) द्वारा किया गया है जिसमें कि स्वास्थ्य से जुड़ करके सोशल मीडिया पर दिये गये फेक समाचारों का लोगों के स्वास्थ्य पर पड़ने वाले बुरे प्रभाव का विश्लेषण किया गया है।[15] मुहम्मद सैयद अल जमन(2021) द्वारा किये गये अध्ययन में पाया गया है कि फेक समाचारों के छः मुख्य विषयवस्तु रहे हैं। इसमें स्वास्थ्य, धर्म, राजनीति, मनोरंजन, अपराध एवं अन्य प्रकार के मिले जुले समाचार हैं। इसमें स्वास्थ्य से सम्बन्धित फेक समाचार सबसे अधिक पाये गये हैं, यह 27.2 प्रतिशत रहा। इसी प्रकार से धर्म से सम्बन्धित फेक समाचार 25.1 प्रतिशत और राजनीति से सम्बन्धित फेक समाचार 24.3 प्रतिशत रहे हैं। इस अध्ययन में इन तीनों विषयों को जोड़ करके कुल 76.6 प्रतिशत समाचार पाये गये हैं। इसमें मनोरंजन से सम्बन्धित समाचार सबसे कम दिया गया हैं।[16]

वायर समाचार संगठन द्वारा एक जनवरी से 24 दिसम्बर 2020 के बीच किये गये अध्ययन में पाया गया कि भारत के समाचारपत्र, समाचार चैनल, वेबसाइट एवं समाचार एजेंसी द्वारा कई राष्ट्रीय मुद्दों पर फेक समाचार दिये गये। इसमें कोविड से सम्बन्धित फेक समाचार प्रमुख फेक समाचार के तौर पर रहे।[17] इन सब अध्ययनों से स्पष्ट है कि फेक समाचार के विविध पक्षों पर सतत् अध्ययन किये जा रहे हैं। ऐसी स्थिति में प्रस्तुत अध्ययन का महत्व काफी बढ़ जाता है।

अध्ययन का उद्देश्य– *प्रस्तुत अध्ययन का मुख्य उद्देश्य सोशल मीडिया पर कोविड के बारे में दिए जाने वाले उन समाचारों का अध्ययन करना है जो कि असत्य और फेक होते हैं, वे सत्य और वास्तविक रूप में बना करके प्रस्तुत किए जाते रहे हैं और इन्हे फेक समाचार के रूप में जाना जाता है। इन कोविड समाचारों के कुछ प्रमुख पक्षों का गुणात्मक ढंग से विश्लेषण करना इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य है। इस सन्दर्भ में निम्न बातों को जानने का प्रयास किया गया है –*

– किस प्रकार के फेक समाचार दिये जाते हैं? – ऐसे संदेशों के पीछे क्या मंतव्य होते हैं?

– फेक समाचारों का प्रसार कैसे होता है?

– इन समाचारों का क्या प्रभाव पड़ता है?

– इससे किस प्रकार की समस्या उत्पन्न होती है?

– फेक समाचारों को रोकने हेतु क्या उपाय किए गए हैं?

– फर्जी समाचारों के मूल स्रोत क्या हैं?

– समाचारों की जांच कौन करता है?

अध्ययन पद्धति– प्रस्तुत अध्ययन के लिए गुणात्मक निरीक्षण विधि का उपयोग किया गया है। इसमें विविध को द्वि तीयक सूचना सामग्री स्रोतों का निरीक्षण करके अध्ययन के उद्देश्य को ध्यान में रख करके इनके उत्तर जानने का प्रयास किया गया है। इस अध्ययन के लिए बहुत बड़ी संख्या में विविध प्रकार के स्रोतों को लिया गया है जिसमें गूगल, गूगल फैक्ट चेक, फेसबुक, यूट्यूब, विविध टीवी एवं समाचार पत्र के वेबसाइट एवं अन्य विविध रिपोर्ट शामिल हैं। अध्ययन में निर्धारित किये गये उद्देश्य को ध्यान में रख करके इसकी जानकारी द्वितीयक स्रोतों से ही ली गयी है।

अध्ययन की सीमा– इस अध्ययन को कोविड बीमारी से जुड़ करके दिये जाने वाले फेक समाचारों के सन्दर्भ में विशेष तौर पर तैयार किया गया है।

–इस अध्ययन में सोशल मीडिया पर दिये जाने वाले फेक कोविड समाचारों को ही लिया गया है।

–सोशल मीडिया के उन फेक समाचारों को विशेष तौर पर लिया गया है, जिनका जिक्र अन्य माध्यमों पर फेक समाचार के तौर पर किया गया है।

–इस अध्ययन में साइबर अपराध सम्बन्धित समाचार शामिल नही किये गये हैं।

–इस अध्ययन में अन्य देशों के सन्दर्भों को लिया गया है, किन्तु यह अध्ययन भारत के सन्दर्भ में मुख्य तौर पर किया गया है।

फेक समाचार के विषयवस्तु– विभिन्न प्रकार के फेक समाचार का अध्ययन करने के बाद कई तथ्य उभर करके सामने आये हैं। कोविड के भिन्न भिन्न पक्षों के बारे में चर्चा की गयी है। फेक समाचारों के विषयवस्तु में कोविड से बचाव एवं कोविड टीका सबसे मुख्य विषय रहे हैं। एक फेक समाचार में कोविड से बचाव के सन्दर्भ में कहा गया है कि आधी प्याज कमरे में रखने पर कोविड के वायरस को वह पकड़ लेगा। इसी प्रकार धूप से

कोविड से बचाव की बात भी कही गयी है।[18]
वैसे आनलाइन माध्यमों पर स्वास्थ्य एवं धर्म के बारे में अधिक फेक समाचार प्रकाशित किये जाते हैं।[19] कोविड से सम्बन्धित समाचार काफी पोस्ट किये गये। यह पाया गया है कि अधिकतर फेक समाचार कोविड बीमारी के विविध पहलुओं से जुड़ करके हैं। एक अध्ययन में तो पाया गया कि अधिकतर फेक कोविड समाचार राजनीतिक विषय सन्दर्भ से जुड़े रहे और कोविड के मरीजों एवं उससे मरने वालों की संख्या और रोक थाम तथा इलाज के तरीकों के बारे में दिये गये हैं। फेसबुक आदि सोशल मीडिया पर कोविड फेक समाचार में कोविड बचाव के बारे में काफी सामग्री दी गयी है। कोविड बीमारी कैसे फैल रही है, इससे सम्बन्धित किसी भी प्रकार के तथ्य को जानने की सबमें उत्सुकता होती है। यह अपेक्षाकृत हर प्रकार से नई घटना थी, इसके पूर्व इस प्रकार की न किसी बीमारी का नाम सुना गया था, न ऐसी किसी स्थिति का सामना किया गया था। इसके बारे में सभी लोग अधिक से अधिक बातें जानने के लिए उत्सुक रहे हैं। यह एक समस्या के रूप में थी, इसलिए इससे जुड़ी बातों को जानने की सबकी मजबूरी भी रहती थी। इसके बारे में किसी को कोई खास समझ नही रही थी। इस हालत में कोविड-19 के बारे में कुछ भी जानकारी बहुत तेजी से वायरल होती थी।

फेक समाचारों का प्रसार- फेक समाचारों के प्रसार के पीछे कई कारण हैं। फेक समाचार सोशल मीडिया के द्वारा ही मुख्य रूप से फैलता है। यह लोगों की पहुॅच में है। यह एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति तक होता हुआ एक बहुत बड़े समुदाय तक पहुॅचता है। हम सामान्य तौर पर जिन लोगों के साथ सोशल मीडिया से जुड़े रहते हैं, उन पर अधिक विश्वास करते हैं, इसलिए इस पर भागीदारी की जाने वाली किसी भी प्रकार की सामग्री पर भी कहीं अधिक विश्वास करते हैं। अन्य की तुलना में फेसबुक सोशल मीडिया सामान्य तौर पर कोविड फेक समाचार के लिए कही अधिक उपयुक्त प्लेटफार्म रहा है।[20] बार्सीलॉस एवं अन्य (2020) द्वारा गये शोध से ज्ञात हुआ कि कोविड से सम्बन्धित अधिकतर फेक समाचार फेसबुक और वाट्सएप द्वारा फैलाये गये थे।[21]

सोशल मीडिया पर अक्सर लोग उनसे बातचीत करते हैं जो कि उनके विचारों से मेल खाते हैं। इसलिए जब सोशल मीडिया पर किसी ऐसे समाचार को देखा जाता है जो कि किसी व्यक्ति के पूर्व विचारों की पुष्टि करता है तो उस समय वह उसको वह सीधे विश्वास कर लेता है। इस प्रकार कोविड पर दिये गये फेक समाचार सोशल मीडिया द्वारा ही सबसे अधिक फैलाया जाता रहा है।

फेक समाचारों की विशेषताएं- फेक समाचार की कई प्रकार की विशेषताएं होती हैं। इसके बारे में काफी शोध भी किये गये है।[22] इन्टरनेट आधारित जनमाध्यम पर फेक समाचार एक बहुत ही महत्वपूर्ण घटना बन चुकी है।[23] फेक समाचार की सबसे मुख्य विशेषता तो यह है कि ये तथ्यात्मक तौर पर असत्य होते हैं। इसे इस ढंग से बनाया गया रहता है कि लोग एक दूसरे के साथ इसे आसानी के साथ भागीदारी कर सके। इस तरह की सूचनाओं में लोगों की काफी उत्सुकता होती है। इसी के साथ यह लोगों के भावनाओं के साथ खिलवाड़ करने का एक साधन भी है। फेक समाचार सनसनी खोज हो सकती है। ये प्रायोजित विषय सामग्री के साथ या फिर कुछ तथ्यों के साथ दिये गये हो सकते है। फर्जी सूचनाओं के संदर्भ में एक बहुत ही महत्वपूर्ण बात यह भी होती है कि वे सूचनाएं अधिक दी जाती हैं जो कि वर्तमान से जुड़ करके होती हैं। उदाहरण के लिए टीका लगवाने की जब प्रक्रिया आरम्भ हुई तो फिर कोविड के लिए टेलीग्राम अकाउंट से पंजीकरण का संदेश सोशल मीडिया पर वायरल होता रहा, जबकि इस पर ऐसी कोई सुविधा नही दी गयी थी। इसी तरीके से व्हाट्सएप पर एक मैसेज वायरल हुआ कि टीका लगवाने के लिए व्हाट्सएप के जरिए पंजीकरण कराया जा सकता है। यह भी एक झूठा समाचार था।[24]

विविध प्रकार के फेक समाचार- पूरी दुनिया में बहुत ही अधिक मात्र में फेक समाचार प्रकाशित किये जाते हैं। इससे इस महामारी के खिलाफ संघर्ष और भी कठिन हो जाता है।[25] कोविड से बचाव का मास्क एक बहुत ही कारगर उपाय माना गया है। स्वास्थ्य विशेषज्ञ इसे लगाने के लिए लगातार सलाह देते रहे हैं। घर से बाहर निकलने पर डबल मास्क लगाने का भी सलाह दिया गया है। उधर सोशल मीडिया पर फेक समाचार में मास्क लगाने पर शरीर में कार्बन डाइआक्साइड की मात्र बढ़ जाने और आक्सीजन की मात्र कम हो जाने की बात कही गयी है। यह पोस्ट लोगों के मन में डर, आशंका और हैरानी पैदा किया। इस पोस्ट में यह भी कहा गया कि एक व्यक्ति को दिन भर में 550 लीटर आक्सीजन की जरूरत होती है, किन्तु मास्क लगाने पर उसे 250 से लेकर के 350 लीटर ही आक्सीजन मिल पाती है। और शरीर में आक्सीजन कम हो रही है।[26] इस वायरल पोस्ट पर पी आम्र बी द्वारा खंडन किया गया है और करोना बचाव के लिए मास्क को सही तरीके से लगाने को आवश्यक बताया गया है।[27] कोरोना बीमारी की दूसरी लहर के दौरान सोशल मीडिया

पर इस बीमारी से निपटने के लिए विभिन्न प्रकार के उपायों के बारे में जानकारी दी जा रही है। इसमें से एक उपाय फिटकरी के पानी के सेवन की भी बात कही गयी है। इसमें बताया गया है कि इससे करोना बीमारी के संक्रमण से बचा जा सकता है। इससे वायरस शरीर में प्रवेश नही करता है। यह दावा भी बाद में झूठा पाया गया।(28) एक फेक समाचार के अन्तर्गत यह बताया गया था कि विश्व स्वास्थ्य संगठन ने भारत में लॉक डाउन के सन्दर्भ में चार चरणीय प्रोटोकाल एवं प्रक्रिया को जारी किया है। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने इस समाचार का खंडन करते हुए लोगों से कोविड से सम्बन्धित समाचार एवं सत्य तथ्य को जानने के लिए भारत के स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय के वेबसाइट को देखने के लिए कहा।(29)

सोशल मीडिया पर फेक समाचार- सोशल मीडिया लोगों को अपने विचारों को व्यक्त करने की सहुलियत प्रदान की है। किन्तु इसी के साथ यह झूठे एवं फर्जी समाचारों का एक बहुत ही बड़ा प्लेटफार्म बन गया है। कोविड के दौरान सोशल मीडिया पर फर्जी ढंग से वैक्सीन के बारे में प्रचार का भी प्रयास किया गया।(30)

विभिन्न जगहों पर कोविड के बारे में दिये गये फेक समाचारों की सूची भी दी गयी है जिसे देख करके इसकी विविधता का अनुमान लगता है।(31) यह लोगों को भ्रमित भी करता है और लोगों को यह समझ में नही आता है कि क्या करें और क्या न करें। सोशल मीडिया किसी भी सूचना पर काफी अधिक नियंत्रण रखती है। झूठे समाचारों के लिए फेसबुक कहीं अधिक उपजाउ जगह है।(32) अमेरिकी राष्ट्रपति ने सोशल मीडिया पर आरोप लगाया है कि कोविड एवं वैक्सीन के बारे में फेक समाचार के माध्यम से वह लोगों का जीवन समाप्त कर रहा है।(33)

फेक समाचार के कारण लोगों की धारणा भी बदल जाती हैं। इस प्रकार के समाचार प्रायः चिकित्सा विज्ञान के मानक कार्यों के विपरीत प्रचार करते हैं। इस कारण उन्हें अपने कार्यों के निर्वहन में समस्या आती हैं। कोविड-19 के दौरान जबकि विभिन्न स्वास्थ्यकर्मी भी बीमारी के निस्तारण के बोझ तले दबे हुए हैं, ऐसी स्थिति में काई भी झूठा समाचार उन्हें अपने कार्यों को सही प्रकार से करने में अवरोध के तौर पर ही कार्य करता है। इसका उन पर भी बहुत ही नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। यह काम के प्रति लगाव कम करता है और उनकी सुरक्षा की भी समस्या खड़ी हो जाती है और वह असुरक्षा की भावना से ग्रस्त हो जाते हैं। यह डाक्टरों के लिए एक बहुत ही चिन्ता का विषय बन गया है।(34) कई बार ऐसा भी हुआ है कि जब ग्रामीण व कस्बाई क्षेत्रें में स्वास्थ्यकर्मी की टीम कोविड-19 की जॉच करने के लिए गयी है तो संबंधित क्षेत्रें में लोगों के बीच कोविड संबंधित भ्रांतियों के कारण उन पर पर हमला किया गया है और लोग कार्य को कुशलतापूर्वक नही कर पाते हैं।(35)

फेक समाचार का कारण- फेक समाचारों के प्रसार के अनेक कारण हैं। पारम्परिक माध्यमों में गेटकीपिंग की व्यवस्था है, किन्तु सोशल मीडिया पर ऐसा कुछ भी नही है। इस प्रकार के फेक समाचार के न रूकने के पीछे एक बड़ा कारण यह भी रहा कि इसे रोकने के लिए किसी प्रकार का कोई बहुत प्रभावी तंत्र विकसित नही किया जा सका है। भारत में सोशल मीडिया को सेफ हार्बर का दर्जा प्राप्त है। इस कारण से सोशल मीडिया की ऐसे फेक समाचारों के प्रति किसी प्रकार की कोई जिम्मेदारी नही होती है और उनका कोई नुकसान नही होता है। इसके विपरीत यदि कोई विवादपूर्ण अथवा शरारतपूर्ण समाचार होता है तो वह खूब वायरल भी होता रहता हैं, इस कारण से उसके दर्शक बढ़ते हैं और सोशल मीडिया कम्पनियों को आर्थिक लाभ होता है। बहुत से सूचनाओं को देने के पीछे लोगों की व्यक्तिगत जानकारी प्राप्त करना भी है। जिससे कि बाद में उसका वह दुरुपयोग कर सके। उदाहरण के लिए सोशल मीडिया पर एक ऐसा संदेश वायरल हुआ है जिसमें कि कोविड-19 प्लान के अंतर्गत 10,000 लोगों को नकद धनराशि वितरित किए जाने की बात कही गई है। स्पष्ट है कि वे इस प्रकार की धनराशि देने की बात कह करके पंजीकरण के नाम पर लोगों से उनके व्यक्तिगत निजी सूचनाओं को प्राप्त किया जा सकता है।(36)

फेक समाचारों की चुनौती- वास्तव में झूठे समाचार चुनौती बनते जा रहे है। इस संदर्भ में सरकार के विभिन्न इकाईयॉ फेक समाचार को रोकने के लिए प्रयास कर रही हैं। फेक समाचार के बारे में जानकारी एकत्र करके पूर्व उसे स्पष्ट करने का प्रयास किया जाता है। कोविड-19 के प्रसार के दौरान भी सरकार द्वारा प्रयास किए गए हैं। सोशल मीडिया पर भ्रामक और झूठी बातों को फैलने से रोकने के लिए मुंबई पुलिस द्वारा कानून बनाया गया है। इससे व्हाट्सऐप, फेसबुक, इंस्टाग्राम जैसे सोशल मीडिया पर संदेशों और फोटो के द्वारा झूठी सूचनाओं के प्रसार पर रोक लगाया गया है। यह भी एक रोचक बात है कि मुंबई पुलिस द्वारा पारित किये गये आदेश के खिलाफ कुछ लोगों ने मुंबई हाईकोर्ट में याचिका भी दायर की है।(37) कोविड बीमारी के प्रसार एवं बचाव के सन्दर्भ में विविध प्रकार के समाचार जनमाध्यमों में दिये जाते रहे हैं। किसी एक समाचार में कहा गया था कि जूते एवं चप्पल से कोविड-19 फैल सकता है। दूसरी तरफ, जनमाध्यम ही इस

प्रकार के फेक समाचारों के बारे में स्पष्टीकरण भी देते रहे हैं।(38)

इसी प्रकार से यह समाचार भी काफी वायरल हुआ जिसमें कि कहा गया कि भारत में 5जी मोबाइल के जरिए कोरोना वायरस फैलता है, डब्ल्यूएचओ द्वारा इस बात को स्वीकार नही किया गया और उसने बताया कि कोविड उन देशों में भी फैला है जहां पर 5जी मोबाइल नेटवर्क नही है। अभिनेत्री जूही चावला द्वारा 5जी नेटवर्क के कथित दुष्प्रभाव को रोकने के लिए दिल्ली हाईकोर्ट में याचिका डालने के कारण इस प्रकार के विश्वास को बढ़ावा मिलता है कि 5जी नेटवर्क के कारण कोविड बीमारी फैल रही है। यह बात दूसरी है कि सुनवाई के दौरान उच्च न्यायालय ने न केवल उस याचिका को खारिज कर दिया, वरन् याचिकाकर्ता पर 20 लाख रूपये का जुर्माना भी लगाया।(39)

इसी प्रकार से इंडियन काउंसिल आफ मेडिकल रिसर्च (आईएमसीआर) की तरफ से एक फेक गाइडलाइन की एक लिस्ट सोशल मीडिया पर घूमती रही है, जिसमें कि कोविड के दौरान क्या करें और क्या न करें, इसके बारे में जानकारी दी गयी थी। यह लोगों के बीच में काफी अधिक प्रचारित हुई। किन्तु आईसीएमआर ने बताया कि उसकी तरु से इस प्रकार की कोई लिस्ट नही जारी की गयी है।(40)

फेक समाचार का प्रभाव- फेक समाचारों की प्रकृति के अनुसार इसका अलग अलग प्रभाव पड़ता है। इसके बारे में काफी अध्ययन किये गये हैं। फेक समाचारों का क्या प्रभाव पड़ता है, इसका इसी बात से अन्दाजा लगाया जा सकता है कि दुनिया में वर्ष 2020 में प्रथम तीन माह में लगभग 6000 लोग अस्पताल में भर्ती हुए। इस दौरान लगभग 800 लोगों की गलत सूचनाओं के कारण मृत्यु हुई। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने ऐसी गलत सूचना को इन्फोडेमिक नाम से संबोधित किया है जिसमें कि ऐसी सूचनाओं की बाढ़ आ जाती है, और जिसमें कि कुछ सही और कुछ गलत सूचनाएं दी गई रहती हैं। यह सूचना इस बीमारी के फैलने के साथ ही आरंभ हुई हैं। डिजिटल जोन में किसी भी प्रकार की बहुत ही प्रसारित होता है यह अनिश्चितता का संचार करता है।(41)

कोविड फेक समाचारों के प्रभाव के बारे में काफी अध्ययन भी किये गये हैं। फर्जी समाचारों का प्रभाव हर प्रकार से समाज, सरकार एवं व्यवस्था पर नकारात्मक ही पड़ता है। एक झूठी सूचना समाज में (खराब) तरीके से अपना प्रभाव छोड़ती हुई आगे बढ़ती है। समाचारों का जैसा भाव और विषय रहता रहा, उसी के अनुसार लोगों में उससे आशा, निराशा, आक्रोश या अन्य प्रभाव उत्पन्न होते हैं। झूठी बातों से समाज गुमराह होता है। जो बातें कही गई रहती है, उसी अनुसार वे कार्य में जुट जाते हैं। फेक समाचारों में कही बातें प्रायः जन समाज के हित को (शन्ति) हुए कही गई रहती हैं। किंतु वह कुल मिला करके समाचार समाज में समस्या उत्पन्न करती हैं। फर्जी खबरों से आम लोगों के मन में डर का भाव होता है। इसका मनोवैज्ञानिक असर यह होता है कि किसी भी केमिस्ट की दुकान पर बहुत बड़ी मात्र में लोग अनावश्यक दवा लेते दिख जाते रहे हैं। वाट्सएप पर चल रही दवाओं की लिस्ट देख करके भी लोग दवा ले रहे हैं। सोशल मीडिया एक खास प्रकार का माहौल तैयार कर दे रही है।

कई बार इन समाचारों के कारण कानून व्यवस्था की भी समस्या खड़ी होती है और विभिन्न विभागों को अपने स्तर से उसकी सत्यता स्पष्ट करने की आवश्यकता पड़ती है। इसमें काफी श्रम, समय, धन व्यय होता है। फेक समाचार में बतायी गयी बात को ध्यान में रख कर लोग उसी के अनुसार कार्य भी करते हैं। कई समाचार ऐसे भी दिए जाते रहे जिसमें कि किसी महत्वपूर्ण व्यक्ति को संर्न्दभित करके भ्रामक समाचार दिया गया। एक समाचार ऐसा दिया गया जिसमें बताया गया था कि चाय पीने से कोरोना वायरस पर लगाम लग सकता है। इस कारण चीन के अस्पतालों में कोविड-19 मरीजों को दिन में तीन बार चाय देना शुरू किया गया, जिससे कि करोना वायरस समाप्त हो। इसके पक्ष में तमाम प्रकार की बातें बताई गई हैं। यह समाचार पूरी तरीके से भ्रामक था।

टीकाकरण पर फेक समाचार का प्रभाव- कोविड-19 के बारे में विभिन्न प्रकार के झूठे समाचार दिए जाते रहे, किंतु उसमें से झूठे समाचार जो सभी जगहों पर एक समान तौर पर दर्ज हुआ था, वह कोविड-19 से बचने के लिए लगाये जाने वाले टीका को ले करके रहा। टीका के सन्दर्भ में सभी जगहों पर भ्रांतियां रही। टीका लगाने के विरोध में यूरोप के विकसित देशों में भी प्रदर्शन होते रहे। सोशल मीडिया पर कोविड टीकाकरण के खिलाफ पोस्ट की गयी बातों का कम्पेन काफी फैलता फूलता रहा है। इस प्रकार के फेक समाचार एक देश द्वारा एक दूसरे के खिलाफ अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर भी चलाये जाने का आरोप लगा है।(42)

यूरोप के फांस और जर्मनी जैसे देशों में तो 10 प्रतिशत लोगों ने कहा कि वे कोविड-19 का टीका नही लगवाएंगे। इसी तरह से भारत के कई जगहों पर कोविड टीका लगवाने विरोध में काफी लोगों ने अपने विचार व्यक्त किए।(43) अन्धविश्वास और गलत सूचनाओं के कारण बोलिबिया में कोविड टीकाकरण कार्यक्रम प्रभावित हो रहा है। वहॉ टीकाकरण केन्द्र आधी खाली

होने की समाचार है।[44]

फेक समाचार को पहचानना एवं जाँचना–फेक समाचारों की समस्या को देखते हुए इनकी पहचान करने के सन्दर्भ में कुछ उपायों का वर्णन किया गया है। किसी समाचार को ऑख मूँद कर पहचानने के बजाय थोड़ा आलोचनात्मक अन्दाज अपनाना चाहिए। इसके समाचार स्रोत की जॉच की जा सकती है। जो विश्वसनीय समाचार स्रोत होते हैं, उससे दिये गये समाचार कहीं अधिक सही होते हैं। वे समाचार माध्यम या स्रोत जो कि कभी सुने गये नही रहते है या अनजान होते हैं, उसके बारे में विशेष जॉच कर ली जानी चाहिए। किसी भी समाचार के सन्दर्भ में प्रमाणों की जॉच की जा सकती है।[45] फेक समाचार के सन्दर्भ में फेसबुक ने उसे पहचानने के कुछ उपाय बताये हैं, जिससे कि उन्हे पहचानने में मदद मिल सकती है। इसमें फेक समाचारों के शीर्षक, उसका यूआरएल, समाचार स्रोत, असामान्य फार्मेटिंग, फोटो, तारीख, प्रमाण दूसरी रिपोर्ट को देख करके फेक समाचार की जॉच कर सकते हैं।[46] अन्य सोशल मीडिया ने भी इसी प्रकार से उपाय अपनाया है।

कई अन्य जनमाध्यमों ने स्वयं अपने स्तर से लोगों में जागरूकता फैला करके इस प्रकार के फेक समाचारों से सतर्क रहने के लिए कहा है। इसमें लेखक, लिंक, डोमेन नाम, शब्दों की वर्तनी आदि की जॉच करके इसके बारे में पता लगाया जा सकता है। गलत सूचना को विविध प्रकार से दिया जा सकता है। उदाहरण के लिए व्यंग्य में ऐसी सामग्री देना जो कि भले ही गलत इरादे से न लिखी गयी हो, किन्तु वह प्रभावित करने की क्षमता रखती है। शीर्षक, कैप्शन आदि में गलत संयोजन करके प्रस्तुत किया जाता है जिसका कि उस सामग्री से कोई वास्ता न हो। इसी प्रकार से भ्रामक सामग्री के द्वारा दिये गये किसी सूचना के आधार पर नया मामला खड़ा किया जाता है। इसी तरह से फेक समाचार के अन्तर्गत किसी वास्तविक सूचना का दूसरे सन्दर्भ में इस्तेमाल किया जाता है। फेक समाचार के अन्तर्गत ही पूरी तरह से झूठी सामग्री गढ़ कर किसी वास्तविक सामग्री को इस ढंग से रखा जाता है जिससे कि वास्तविकता छिप जाती है।[47]

फेक समाचारों की जॉच– फेक समाचारों की जॉच के लिए कई प्रकार के उपाय किय गये हैं। इसकी जॉच फैक्ट चेकर से की जा सकती है। कोविड से सम्बन्धित कितने अधिक भ्रामक समाचार दिये गये हैं, वह इस बात से ही स्पष्ट है कि इन्टरनेशनल फैक्ट चेकिंग नेटवर्क के सहनिदेशक क्रिस्टीना टार्डागिला ने कहा है कि फैक्ट चेकर को कोविड से सबसे अधिक चुनौती मिली है।[48] किसी भी स्वतंत्र फैक्ट चेकर से इन खबरों की जॉच आसानी के साथ की जा सकती है। फेक समाचार के बारे में गूगल ने फैक्ट चेकर की व्यवस्था की है।[49] फेक समाचारों की जॉच के सन्दर्भ में अब तो बहुत बड़ी संख्या में फैक्ट चेकर एवं टूल आ गये हैं। इनकी मदद से किसी भी प्रकार के समाचार के तथ्यों की जॉच की जा सकती है। वर्तमान में बड़ी संख्या में समाचार माध्यम विभिन्न प्रकार के फेक समाचारों की जॉच करके उसकी भी जानकारी देते रहते है। समाचार माध्यम के आनलाइन पोर्टल पर भी सोशल मीडिया पर घूम रहे फेक समाचारों की जॉच करके उसके बारे में बताया जाता है। इसी प्रकार से टीवी माध्यम पर भी फेक समाचार के बारे में फैक्ट की जॉच करके उसे दिया जाता है। वे फेक समाचार जो कि काफी अधिक वायरल होते हैं, उसके बारे में जनमाध्यम प्रायः अपने ढंग से जॉच करके समाचार देते हैं। टाइम्स आफ इंडिया ने टाइम्स वेरिफायड कालम आरम्भ किया है।[50]

फेक समाचारों पर रोक के प्रयास– फेक समाचार काफी लम्बे समय से दिये जा रहे हैं। इस कारण इसे रोकने के सन्दर्भ में किये जा सकने वाले प्रयास को ले करके काफी लेख एवं शोध किये जाते रहे हैं। फेक समाचारों को रोकने के लिए सम्बन्धित देशों में कानून बने हुए हैं। कई बार सम्बन्धित देश की सरकारें इसे रोकने के लिए सोशल मीडिया को निर्देश देती हैं।[51] भारत सरकार ने कोविड संकट के दौरान सभी सोशल मीडिया को कई बार एडवाइजरी जारी की है। इसमें उनका सहयोग भी मॉगा गया है।[52] आलोचनाओं के बाद समय समय पर फेसबुक सोशल साइट फेक समाचार रोकने के लिए प्रयास किया है। फेक समाचारों से परेशान हो करके उसने बूम के साथ मिल करके यह कदम उठाने की तैयारी की है। इस प्रकार की पहल वह कई अन्य देशों में भी किया है।[53]

कोविड फेक समाचार की समस्या को हल करने लिए विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा अपने आनलाइन कोरोना वायरस सुझाव पेज पर एक मिथबस्टर सेक्शन जोड़ा गया है। इस पर कोरोना से जुड़े विविध प्रकार के कोरी कल्पनाओं का खंडन दिया गया है। उदाहरण के लिए इसमें इस बात का खंडन किया गया है कि अल्कोहल पीने या फिर अत्यधिक गर्मी या ठंडी में कोरोना वायरस को मर सकते हैं।[54]

सोशल मीडिया पर फैलाये जा रहे फेक समाचारों को रोकने के लिए विभिन्न वेबसाइट पर लेख दिये जाते रहे हैं। स्वयं सोशल मीडिया ने कई प्रकार के कदम पहले से ही उठाये।

वाट्सएप ने जिस सन्देश को कोई स्वयं न तैयार करके किसी के द्वारा पाने के बाद उसे दूसरे को देता है या आगे बढ़ाता है, उस पर फारवर्डेड टैग लगा देता है, जिससे कि कम से कम उसे पाने वाला व्यक्ति यह समझ जाये कि सन्देशदाता ने उसे स्वयं न तैयार करके किसी से प्राप्त करके बाद आगे बढ़ाया है। इसी प्रकार से सन्देश को सीमित व्यक्ति तक ही प्रेषित करने का प्रावधान कर दिया है और संदिग्ध एकाउन्ट को बन्द करने का भी प्रावधान किया गया है। इसने डिजिटल लिटरेसी कोर्स भी आरम्भ किया है।

इसी प्रकार से ट्विटर ने किसी सन्देहप्रद एकाउन्ट को रोक देने या फिर उसकी नजर में झूठे या अप्रमाणित सन्देश के साथ टैग लगाने का प्रावधान भी किया है। किन्तु ट्विटर के इस पहल में समानता एवं एकरूपता नही होती है। सरकार की तरफ से भी फेक समाचार के सन्दर्भ में लोगों को जागरूक करने के लिए कई प्रकार के कदम उठाये गये हैं। सरकारी स्कूलों में इस सम्बन्ध में कार्यक्रम आयोजित किये जाते रहे हैं। भारत सरकार द्वारा ट्विटर, फेसबुक एवं अन्य इन्टरनेट मीडिया पर डाले गये ऐसी पोस्ट हटाने का निर्देश दिया है, जिसमें महामारी को ले करके भ्रामक सूचनाएं फैलायी जा रही हैं। ल्यूमेन डेटा के हिसाब से ट्वीटर ने ऐसे 50 से ज्यादा पोस्ट हटाये।

विश्व स्वास्थ्य संगठन ने विभिन्न सोशल मीडिया का सहयोग लेकर कोविड से सम्बन्धित फेक समाचारों की मानीटलरग शुरू की है। विभिन्न देशों में कोविड से संबंधित फेक न्यूज रोकने के लिए एक न्यूज़ ग्रुप में तैयार की गई है। विश्व स्वास्थ्य संगठन ब्रिटिश सरकार के साथ सहयोग करके कोरोना बीमारी के बारे में किसी प्रकार की गलत एवं झूठी सूचना के खतरे के प्रति जागरूकता कम्पेन शुरू किया। स्टाप दी स्प्रेड एक ग्लोबल कम्पेन है जिसका उद्देश्य कोविड बीमारी के बारे में गलत सूचना के खतरे के प्रति जागरूकता उत्पन्न करना है। इसी के साथ, लोगों को विश्वसनीय स्रोत जैसे विश्व स्वास्थ्य संगठन आदि से किसी भी प्रकार की सूचना को कई बार जॉच करने की भी बात कही गयी है। यह कम्पेन कई देशों में आरम्भ किया गया है।

निष्कर्ष-

इस अध्ययन से निम्न मुख्य निष्कर्ष प्राप्त हुए हैं।

-कोविड बीमारी के दौरान विविध प्रकार के फेक समाचार प्रसारित किये गये हैं।

-फेक समाचारों को अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर दिया गया है।

-फेक समाचार के पीछे विविध प्रकार के कारण होते हैं।

-इस प्रकार के कोविड समाचार कोविड बीमारी के हर पहलू के बारे में दिये गये हैं, किन्तु कोविड से बचाव एवं एवं टीका लगाने के सन्दर्भ में सबसे अधिक दिये गये हैं।

-सोशल मीडिया फेक समाचारों का एक बहुत ही महत्वपूर्ण प्लेटफार्म बना हुआ है।

-फेक समाचारों को रोकने के लिए विविध प्रकार से प्रयास किये जा रहे हैं।

-फेक समाचारों की जॉच कई प्रकार से की जा सकती है। इसके लिए फैक्ट चेकर भी आ गये हैं।

-कई सोशल मीडिया एवं अन्य जनमाध्यम फेक समाचार के विरूद्व जागरूकता का कार्य रहे है।

-फेक समाचारों के प्रसार को रोकने के लिए जनजागरण की आवश्यकता है।

सन्दर्भ सूचीः-

1. Fake news, https://www.dictionary.com/browse/fake-news- Evaluating the fake news problem at the scale of the information ecosystem , Jennifer Allen, , Baird Howland , Markus Mobius, David Rothschild and Duncan J. Watts , Science Advances, 03 Apr 2020: Vol. 6, no. 14, eaay3539, DOI: 10.1126/sciadv.aay3539
2. 2. Watts ,Nicola, 5 Types of 'Fake News' and Why They Matter, Ogilvy, 7 May, 2018,
3. https://www.ogilvy.com/ideas/5-types-fake-news-why-they-matter
4. Christopher, Bergland ; Fake News 'Vaccine' Inoculates Against 'Alternative Facts' New 'inoculation theory' could protect the masses from epidemics of fake news. Posted January 22, 2017
5. Four Reasons Why Fake News is So compelling, Turnitin , 27 August 2020, https://www.turnitin.com/blog/4-reasons-why-fake-news-is-socompelling
6. Zadrozny ,Brandy ; Social media hosted a lot of fake health news this year. Here's what went most viral.,U.S.News, Dec. 29, 2019, 5:39 PM IST, https://www.nbcnews.com/news/us-news
7. Fake news: a threat to public health, UICC NEWS, https://www.uicc. org/news/fake-news-threat-public-health, 1 April , 2020, updated 25 November, 2020
8. Allcott, Hunt, and Matthew Gentzkow. 2017. "Social Media and Fake News in the 2016 Election." Journal of Economic Perspectives, 31 (2): 211-36.
9. Diego Arguedas Ortiz, Could this be the cure for fake news? BBC, 14 November 2018, https://www.bbc.com/future/article/20181114could-this-game-be-a-vaccine-against-fake-news
10. Chengli Wang, Haifeng Huang, Comparative political studies, Volume: 54 issue: 5, page(s): 753-778, online: https://journals.sagepub.com/ doi/full/10.1177/0010414020957672?af=R&ai=1gvoi&mi=3ricys , September 14, 2020; Issue published: April 1, 2021
11. Sander van der Linden, Jon Roozenbeek and Josh Compton , Inoculating Against Fake News About COVID-19 12. During this coronavirus pandemic, 'fake news' is putting lives at risk: UNESCO, UN News, Global perspective Human stories,13 April , 2020. 13. Kai Shu etl, Fake News Detection on Social Media: A Data Mining
12. During this coronavirus pandemic, 'fake news' is putting lives at risk: UNESCO, UN News, Global perspective Human stories,13 April , 2020. 13. Kai Shu etl, Fake News Detection on Social Media: A Data Mining
13. Kai Shu etl, Fake News Detection on Social Media: A Data Mining Perspective,, ACM SIGKDD Explorations Newsletter, Volume 19Issue 1June 2017, pp 22–36, https://doi.org/10.1145/3137597.3137600
14. Islam MS, Kamal A-HM, Kabir A, Southern DL, Khan SH, Hasan SMM, et al. (2021) COVID-19 vaccine rumors and conspiracy theories: The need for cognitive inoculation against misinformation to improve vaccine adherence. PloS ONE 16(5): May 12 ,2021 , e0251605. https://doi.org/10.1371/journal.pone.0251605
15. Salman Bin Naeem , Rubina Bhatti , Aqsa Khan , An exploration of how fake news is taking over social media and putting public health at risk, 2021 Jun;38(2):143-149. Doi: 10.1111/hir.12320.

Epub 2020 Jul 12
16. Al-Zaman, Md. S. (2021). Social Media Fake News in India. Asian Journal for Public Opinion Research, 9(1), 25–47. https://doi.org/10.15206/ajpor.2021.9.1.25
17. Here Are the Biggest Stories the Media Got Wrong in 2020, 30 December 2020. https://thewire.in/media/here-are-the-biggest-storiesthe-media-got-wrong-in-2020
18. Can coronavirus-related fake news actually change people's behaviour?, Here's what a first-of-its-kind study found. Ciara Greene, The Conversation, Jul 05, 2021 • 09:30 pm
19. Al-Zaman, Md. S. (2021). Social Media Fake News in India. Asian Journal for Public Opinion Research, 9(1), 25–47. https://doi.org/10.15206/ajpor.2021.9.1.25
20. Lisa Marshall Who shares the most fake news ? New study sheds light, CU Boulder Today, June 17, 2020.
21. Barcelos et al., Analysis of fake news disseminated during the COVID-19 pandemic in Brazil , Pan American Journal of Public Health,. https://www.paho.org/journal/en/articles/analysis-fake-newsdisseminated-during-covid-19-pandemic-brazil, Retrieved on July 20,2021
22. H. S. Al-Ash and W. C. Wibowo, "Fake News Identification Characteristics Using Named Entity Recognition and Phrase Detection," 2018 10th International Conference on Information Technology and Electrical Engineering (ICITEE), 2018, pp. 12-17, doi: 10.1109/ICITEED.2018.8534898.
23. Maria D. Molina etl , "Fake News" Is Not Simply False Information: A Concept Explication and Taxonomy of Online Content, American Behavioral Scientist, Vol 65, Issue 2, 2021,First published 14 October 2019
24. Shubham Singh, Beware! WhatsApp messages on COVID-19 vaccine are fake: Here's how to find out, Zee news, Apr 25, 2021, https:// zeenews.india.com/technology/beware-whatsapp-messages-oncoronavirus-vaccine-are-fake-here-s-how-to-find-out-2357443.html
25. Murali Krishnan, Fake news complicates fight against pandemic,DT Next , EPublished: May 05, 20210
26. jkBkSj] uouhr] D;k T;knk nsj rd ekLd yxk, jgus ls 'kjhj esa हो जायेगी आक्सीजन की कमी ? जानिए सच्चाई, अमर उजाला, 11 मई 2021
27. PIB Fact check website 28. क्या गर्म पानी पीने से कोरोना से होता है बचाव ? जानिए क्या है सच, इंडिया टीवी, 8 मई 2021
28. 29. Ministry for Health and Family welfare website. 30. Max
29. Fisher, Disinformation for hire, a shadow industry, is quietly booming, New York Times, Last Updated: Jul 26, 2021, , https://economictimes.indiatimes.com/news/international/business/disinformation-for-hire-a-shadow-industry-is-quietly-booming/ 31. Lytvynenko , Jane ; Here's A Running List of The Latest Hoaxes Spreading About The Corona virus, Buzz feed news, Last updated on March 24, 2020, https://www.buzzfeednews.com/article/ janelytvynenko/coronavirus-fake-news-disinformation-rumorshoaxes
30. Lisa Marshall Who shares the most fake news ? New study sheds light , CU Boulder Today, June 17, 2020. 33. Chaturvedi, Anumeha ;Fake news around coronavirus vaccine on the wane, but still a concern, Economic Times, Last Updated: Aug 06, 2021,
31. Lytvynenko , Jane ; Here's A Running List of The Latest Hoaxes Spreading About The Corona virus, Buzz feed news, Last updated on March 24, 2020, https://www.buzzfeednews.com/article janelytvynenko/coronavirus-fake-news-disinformation-rumorshoaxes
32. Lisa Marshall Who shares the most fake news ? New study sheds light , CU Boulder Today, June 17, 2020. 33.
33. Chaturvedi, Anumeha ;Fake news around coronavirus vaccine on the wane, but still a concern, Economic Times, Last Updated: Aug 06, 2021 34. Sandeep Unnithan , Covid second wave: Why doctors are alarmed over attacks on medical staff 34. Sandeep Unnithan , Covid second wave: Why doctors are alarmed over attacks on medical staff ,
34. India Today Insight,Delhi,May 3, 2021,UPDATED: May 4, 2021, https://www.indiatoday.in/india-todayinsight/story/covid-second-wave-why-doctors-are-alarmed-overattacks-on-medical-staff-1798489-2021-05-03
35. Ujjain villagers attack medical team believing vaccines are fatal, leave one injured, India Today Web Desk ,, Ujjain May 25, 2021, Updated: May 25, 2021.
36. WhatsApp Message Claiming That 10,000 People Will Get Cash Reward From WHO Under COVID-19 Relief Plan Is Fake, Know Truth Behind Fake Message Going Viral,Yahoo News, 20 May 2021
37. Lkks'ky ehfM;k ij >wB iQSykuk iM+sxk Hkkjh]eqacbZ iqfyl ds leFkZu esa gkbZdksVZ dk iQSlyk] vej mtkyk] eqacbZ]15 vizSy]2020
38. Tiwari, Pushkar ; Do shoes spread COVID-19? Does COVID-19 transmit through houseflies or mosquitoes? Read 18 corona virus facts and myths, Zee news, Dec 05, 2020,
39. 39-Poonam Sharma, Attempt to gain publicity': Delhi HC dismisses Juhi Chawla's plea against 5G network, imposes Rs 20 lakh fine , India Today, New Delhi, June 4, 2021 , UPDATED: June 4, 2021
40. 40-dksjkuk ok;jl dh iQsd ,Mokbtjh lks'ky ehfM;k ij gks jgh ok;jy] vkbZlh,evkj us crk;k lp] fgUnqLrku] ubZ fnYyh] 7 ebZ 2021]
41. Fighting misinformation in the time of COVID -19, one click at a time, WHO website , 27 April 2021.
42. Jimenez ; Darcy , Covid-19 vaccines: the role of social media in disinformation, Pharmaceutical-Technology, 04 Jun 2021 (Last Updated July 5th, 2021, , https://www.pharmaceutical-technology. com/features/covid-19-vaccine-disinformation-social-media/
43. . El-Elimat T, AbuAlSamen MM, Almomani BA, Al-Sawalha NA, Alali FQ (2021) Acceptance and attitudes toward COVID-19 vaccines: A cross-sectional study from Jordan. PLoS ONE, 16(4): e0250555. https://doi.org/10.1371/journal.pone.0250555
44. Vaccines are satanic': Bolivia battles fake news in inoculation drive, Reuters, Reuter.com, May 21, 2021, https://www.reuters.com/world/ americas/vaccines-are-satanic-bolivia
45. How to Spot Real and Fake News, Mindtools, https://www.mindtools. com/pages/article/fake-news.htm
46ण फेसबुक बता रहा है कैसे पहचाने कौन सी खबर है असली और कौन सी है फर्जी? खबर न्यूज डेस्क, एनडीटीवी, इंडिया, अपडेटेड 22 सितम्बर, 2017 तनिश्क, इंटरनेटनेट पर फेक न्यूज की भरमार, सूचना असली है कि र्ज़ी, bu rjhdks ls [kqn djsa igpku] Jagran.com,, jagran.com/news/national-fake-news-on-internetinformation 13 Feb 2021
47. Dr. J. Scott Brennen ,Felix Simon,Dr Philip N. Howard,Prof. Rasmus Kleis Nielsen, Types, sources, and claims of COVID-19 misinformation, 7 April 2020, https://reutersinstitute.politics.ox.ac.uk/types-sourcesand-claims-covid-19-misinformation, Retrieved on July 20,2021
48. https://toolbox.google.com/factcheck/explorer
49. Stop the spread of fake news, TNN / Times of India , Apr 30, 2021,
50. Akhilesh Sharma, Roobina Mongia, Edited by Chandrashekar Srinivasan "Twitter Move Not For Criticism, But Fake Covid News": Government Sources , NDTV, Updated: April 25, 2021 , https://www. ndtv.com/india-news/india-coronavirus-centre-says-twitter-postsdeleted-for-spreading-fake-news-not-criticism-2421324
51. Advisory to curb false news / misinformation on corona virus by Government of India Ministry of Electronics and Information Technology Electronics Niketan, 6, CGO Complex, New Delhi – 110003, Website: www.meity.gov.in to all social media plteforms
52ण फेक न्यूज को बैन करने के लिए फेसबुक उठायेगा यह कदम, एनडीटीवी इंडिया, 19 जुलाई, 2018
53. 54. WHO websi

◆◆◆

शोध संचयन

A Refereed Research Journal
And a complete Periodical dedicated to
Humanities & Social Science Research

ISSN 0975 1254 (PRINT)
ISSN 2249-9180 (ONLINE)
www.shodh.net

Vol. 11
Issue1&2
15 July 2020

A Questionnaire Based Study To Assess Awareness &General Knowledge Regarding Covid-19 Pandemic Among Ug Students Of Degree Collages Of Kanpur, Uttar Pradesh

Key words :

Pandemic, Covid-19, UG Students

In the wake of covid-19 outbreak entire mankind across the globe was suffering andyear 2020 will be remembered in future for covid-19 pandemic because it is such a big threat to human being as it can cause severe illness more likely in elderly patients and those with certain underlying medical conditions. The disease transmits by droplets and a small airborne particle of Virus.

*****

Dr. Ranju Kushwaha
Associate Professor
Juhari Devi Girls PG College, Kanpur,UP

Abandoned Children and their Human Rights in India

Covid-19 is a transmissible viral disease caused by severe acute respiratory syndrome coronavirus 2 (SARS-CoV-2). The first human case was reported by officials in Wuhan City, China in December 2019. Since then it has been spread worldwide leading to the ongoing pandemic. The common symptoms of covid-19 are fever, cough, muscles pain, sore throat, loss of smell and taste, breathing problem. We should enhance the body's natural defence system i.e. immunity,because it plays an important role in optimizing our health. The threat of the pandemic is not going away, so it is more important for all of us to become aware regarding protection and prevention from covid-19.

This study is conducted to analyse the knowledge and awareness of covid-19 among undergraduate students of Juhari Devi Girls PG College and other colleges of Kanpur Districts. There fore, a question naire based online survey was conducted and obtained data was analysed and results were calculated in percentage. Mostly students wereaware and updated regarding Covid-19 infection protocols and preventive measures. We can say that this survey is helpful in slowing and stopping the covid-19 infection chain in the society by our students.

Introduction:-

In the wake of covid-19 outbreak entire mankind across the globe was suffering and year 2020 will be remembered in future for covid-19 pandemic because it is such a big threat to human being as it can cause severe illness more likely in elderly patients and those with certain under lying medical conditions. The disease transmits by droplets and a small airborne particle of Virus. Recommended preventive measures includes social distancing, wearing face mask in public places, frequently handwashing and quarantining symptomatic people. Symptoms of covid-19 are variable ranging from mild symptoms to severe illness. Common symptoms include loss of smelland taste, nasal congestion, muscles pain, fever, cough, sore throat and difficulty in breathing. We all knows that “prevention is better than cure”. While there is no medicine for covid-19 as of now, it will be good to take preventive measures such as immunity booster which will boost our immunity during this time. Enhancing the body’s natural defence system (immunity) plays an important role in maintaining optimum health. Minster of Aayush recommends the selfcare guidelines for preventive health measures and boosting immunity like drinking warm water frequently and lemon for VitaminC, Turmeric(haldi) with hot milk (also knwn as Golden Milk), other spices like Dalchini, Kalimirch, Tulsi etc. Government and public health agencies are taking appropriate step to stop and slow the virus spread at local as well National levels. Study of the world’s history has suggested that the pandemic in the past had increased over century globally because of increased travel, migration and exploitation of the natural environment. So, Covid-19 Pandemic will be continuing in more and more coming years the threat of the pandemic is not going away. It is more important for all of us to become aware regarding protection and prevention from covid-19. It is our duty to aware our society through easily accessible platforms.This study is conducted withan objective, to analyse the knowledge and awareness of Covid-19 among under graduate students of Juhari Devi Girls’ P.G College, Kanpur and other colleges of Kanpur District. Material and method: A questionnaire-based study conducted among 300 UG students of Degree collage. Online 20 questions were provided to students in google form. Questions were about general facts of Covid-19 pandemic.

Results

Total 300 students of J.D.G.P.G collegeand other colleges of Kanpur District were selected for the

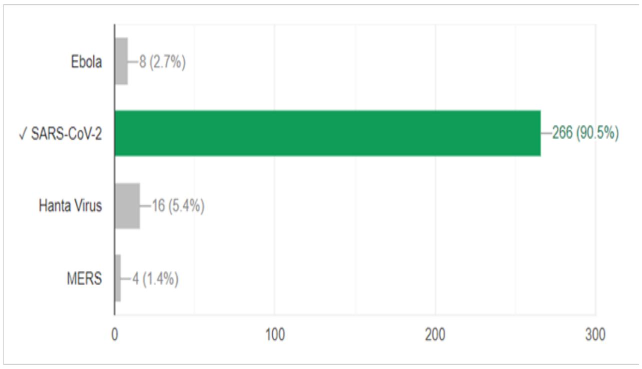

Fig. 1

Fig 2: Most students, about 70.90% of the total students were aware about the percentage of alcohol should be present in sanitizer used by them.

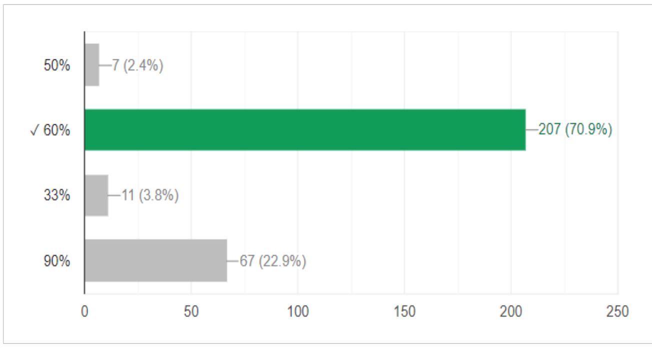

Fig 2

Fig 3; Most students, 270(91.8%) are aware about the origin place of corona virus i.e. Wuhan, China.

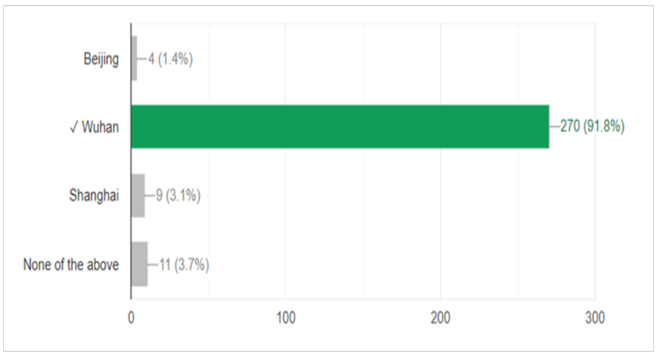

Fig. 3

Fig 4: Almost all students knew the prevention methods of corona virus.

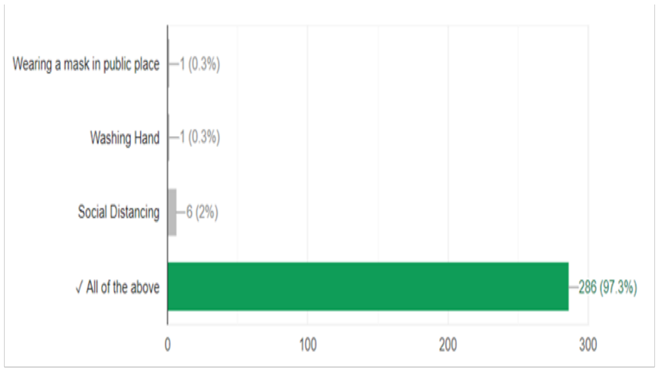

Fig. 4

Fig 5: 93.90% of the students were aware about the major symptoms of COVID-19 which is very important for their knowledge and as they can self-diagnosethemselves at a personal level.

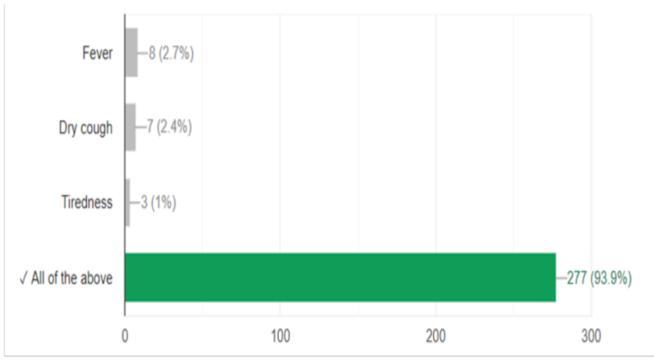

Fig. 5

Fig 6: 107(36.5) students were confused about common mode of transmission of Covid-19. Only 189(63.9%) students knew it. They too were about the origin place of the virus

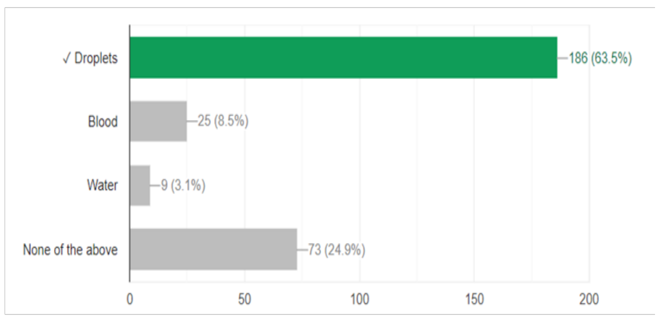

Fig. 6

Fig 7: Students hardly knew about eating habits for boosting their immunity.

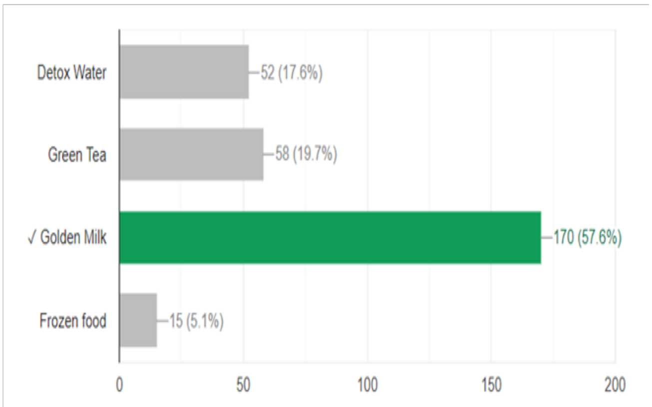

Fig. 7

Fig 8: Only 30% student were aware of rich source of Vitamin C which is helpful to boost immunity and recovery of COVID-19.

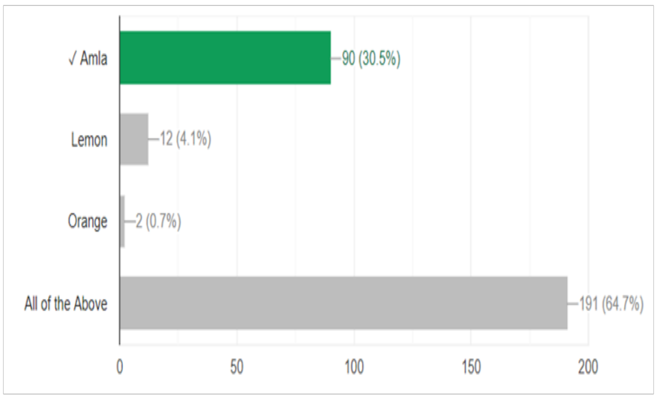

Fig. 8

Fig.9: Out of 295 responders more than 80% students were aware about Corona Virus.

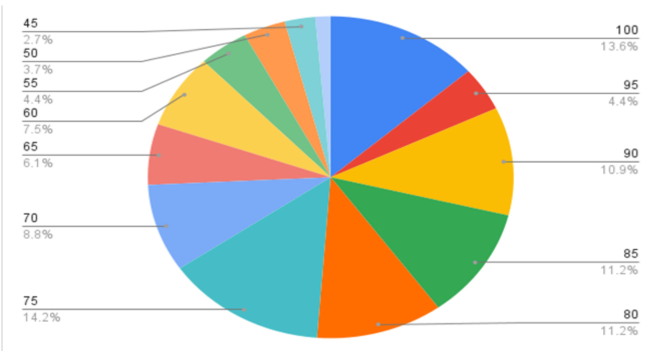

Fig. 9

Discussion:

Observing and Analysing the results, it tells us that most of the students are aware of the Covid-19 virus. They were pretty much familiar with the origin place of the virus (SARS-CoV-2) and the prevention from getting Covid virus like wearing marks in public places, washing hands frequently and keeping proper distancing between them, etc. If you know the mode of transition of the virus then you are at least aware how to take measures if someone near you is a positive candidate, in our survey, most of the students(63.5%) were aware but this is not sufficient to stop the spread of Corona Virus whereas 94% of the students knows the symptoms of the Covid-19 virus which it is good till some extend (Fig.5). Immunity plays a key role in this pandemic so does immunity boosters and Vitamin-C rich food but seeing 58.10% of students being aware of Golden Milk (Turmeric Milk) as an immunity booster and most of them unaware(69.50%; Fig.8) of Amla(Indian gooseberry) being a highly rich source of Vitamin-C is really not a good response.

Suggestion andconclusion:

Government has been running various programmes to enhance awareness regarding prevention & protection from Covid-19. So, awareness about Covid-19 is good among UG students of degree collage and general public as well. This study was conducted among UG students of degree collage, out of which more then 80% of students were familiar with the Covid-19 and its protocols.

According to the above results and discussion, we can say that most of the students are aware of the Covid-19 Virus, unfortunately there is still some percentage left who are not so aware about Covid-19 Virus and this percentage is in which we need to put our efforts. Some students are still not aware about the role of Immunity during this pandemic. Students along with the people should be made aware about the key role of our body's immunity, they should know how to boost up their immunity and what are the sources that can provide their immunity (like Golden milk, Amla, Lemon etc) and there is a need to adverts immunity boostersthrough advertisement on Television, Radio and social media etc.

REFERENCE

1. Nutritional science 6th edition Sri Lakshmi page number 373.
2. Wikipedia- Covid-19 (https://en.m.wikipedia. org/wiki/ COVID-19).
3. About Golden Milk (https://www.healthline.com/ nutrition/ golden-milk-turmeric#:~:text=In%20 India%2C%20 golden%20milk%20is,and%20 fight%20infections%20(%20 50%20))
4. How to test for Corona Virus (https://www. narayanahealth. org/blog/coronavirus-testinghow-to-test/#:~:text=There%20 are%20 different%20types%20of,with%20a%20light%20 suction)
5. About Alcohol Hand Sanitizer (https://www. medicalnewstoday. com/articles/how-muchalcohol-should-hand-sanitizer-contain)
6. All about precautions (https://www.
7. 7. Transition of Corona Virus (https://www. webmd.com/lung/ coronavirus-transmissionoverview#:~:text=Experts%20 believe%20 the%20virus%20that,is%20the%20most%20 common%20transmission)
8. Summary and Origin of Corona Virus (https://academic.oup. com/ofid/article/7/7/ ofaa228/5856718)

◆◆◆

ISSN 0975 1254 (PRINT)
ISSN 2249-9180 (ONLINE)
www.shodh.net
Vol. 11
Issue 1&2
15 July 2020
A Refereed Research Journal
And a complete Periodical dedicated to
Humanities & Social Science Research
शोध संचयन

कोविड 19 का राजनीतिक प्रभावः चिंतन, चुनौती एवं संभावनाएँ

बीज शब्द :

कोविड-19, महामारी, राजनीतिक प्रभाव

सन 2020 में कोविड 19 शायद विश्व का सबसे अधिक बोलने, सुनने अधिक प्रचलन में आने वाला शब्द बन गया हैं। जिसके उच्चारण मात्र से ही भय की अनुभूति होती है। यह समस्या किसी एक राष्ट्र की समस्या न होकर सम्पूर्ण विश्व की समस्या है। इसके जन्म के समय यह एक स्वास्थ्य समस्या थी लेकिन जैसे ही अपनी सीमाऐं लांध कर यह सम्पूर्ण मानव समाज को प्रभावित करने लगी तब यह एक सामाजिक समस्या का रूप लेने लगी। इसके उन्मूलन के लिये जब बड़े स्तर पर धन की आवश्यकता महसूस होने लगी तब इसे आर्थिक समस्या के रूप में देखा जाने लगा। हर वह समस्या जो संपूर्ण राष्ट को प्रभावित करती है, एक राष्ट्रीय समस्या होती है। जिसका समाध ान करना किसी भी राष्ट्र का एक नैतिक कर्तव्य होता हैं। इसी नैतिक कर्तव्य के साथ कोविड 19 के राजनीतिक पक्ष का प्रारंभ होता हैं। वर्तमान समय में इस महामारी की तुलना 1918 में आयी स्पेनिज़ "लु नामक महामारी से की जा रही हैं। उस समय जो बड़ा राजनीतिक परिर्वतन हुआ था। वैसा ही राजनीतिक परिर्वतन कोविड 19 के बाद आने की संभावना हैं। निश्चय ही आने वाला इतिहास कोविड 19 को आधार मानकर राजनीतिक व्यवस्था का आंकलन करेगा तथा चिंतन के साथ कई चुनौती एवं संभावनाओं को भी जन्म देगा।

*****

डॉ. लता धुपकरियाा
सहायक प्राध्यापक, राजनीति शास्त्र कृ.प.शा.
स्नातकोत्तर महाविधाालय, देवास (उ0प्र0)

कोविड 19 का राजनीतिक प्रभावः चिंतन, चुनौती एवं संभावनाएँ

सन 2020 में कोविड 19 शायद विश्व का सबसे अधिक बोलने, सुनने अधिक प्रचलन में आने वाला शब्द बन गया हैं। जिसके उच्चारण मात्र से ही भय की अनुभूति होती है। यह समस्या किसी एक राष्ट्र की समस्या न होकर सम्पूर्ण विश्व की समस्या है। इसके जन्म के समय यह एक स्वास्थ्य समस्या थी लेकिन जैसे ही अपनी सीमाऐं लांध कर यह सम्पूर्ण मानव समाज को प्रभावित करने लगी तब यह एक सामाजिक समस्या का रूप लेने लगी। इसके उन्मूलन के लिये जब बड़े स्तर पर धन की आवश्यकता महसूस होने लगी तब इसे आर्थिक समस्या के रूप में देखा जाने लगा। हर वह समस्या जो संपूर्ण राष्ट्र को प्रभावित करती है एक राष्ट्रीय समस्या होती है। जिसका समाधान करना किसी भी राष्ट्र का एक नैतिक कर्तव्य होता हैं। इसी नेतिक कर्तव्य के साथ कोविड 19 के राजनीतिक पक्ष का प्रारंभ होता हैं। वर्तमान समय में इस महामारी की तुलना 1918 में आयी स्पेनिज़ "लु नामक महामारी से की जा रही हैं। उस समय जो बड़ा राजनीतिक परिर्वतन हुआ था। वैसा ही राजनीतिक परिर्वतन कोविड 19 के बाद आने की संभावना हैं। निश्चय ही आने वाला इतिहास कोविड 19 को आधार मानकर राजनीतिक व्यवस्था का आंकलन करेगा तथा चिंतन के साथ कई चुनौती एवं संभावनाओं को भी जन्म देगा।

उद्देश्यः- *शोध पत्र का उद्देश्य वर्तमान समय में प्रचलित कोरोना महामारी के राजनीतिक प्रभाव का अध्ययन प्रस्तुत करना हैं। तथा उन चुनौती एवं संभावनाओ को खोजना है जो राजनीतिक परिदृश्य को परिर्वतित करेगी।*

शोध.प्रविधिः- *उक्त शोध पत्र में वर्णनात्मक, गणनात्मक शोध पति का उपयोग किया गया हैं एवं तथ्य संकलन हेतु द्वितीयक स्त्रोत को माध्यम बनाया गया हैं। जिसके अंर्तगत समाचार पत्र पत्रिकाओ का सहारा लिया गया हैं। कोविड 19 के राजनीतिक प्रभाव का आंकलन करने के लिये चिंतन के स्तरो का निम्नलिखित विभाजन किया गया है।*

केन्द्र स्तरः- *भारत में संसदात्मक शासन प्रणाली को अपनाया गया हैं। यहां देश का वास्तविक मुखिया प्रधानमंत्री होता हैं। इसमें कोई सजिश नहीं हैं कि वर्ष 2020 एवं 2021 का समय भारतीय प्रधानमंत्री के लिये हर मोर्चे पर चुनौतियों का काल रहा हैं। जिसमें* जिसमें सबसे बड़ी चुनौती कोविड-19 हैं। निश्चय ही इस महामारी से निपटने में केन्द्र सरकार द्वारा हर स्तर पर सराहनीय प्रयास कियें गये हैं। चाहें वह 20 लाख करोड़ के आर्थिक पैकेज की घोषणा हो या भारत को आत्म निर्भर बनाने का अभियान। लेकिन कोविड 19 की दिशा में केन्द्र सरकार द्वारा किये गये इन कार्यो को सत्ता पक्ष दल उसे दलीय रुप देने का प्रयास कर रहा हैं अर्थात आगामी लोकसभा चुनाव में सत्ता पक्षी दल इन कार्यो को आधार बना कर मतदाता से वोट मांगने का प्रयास करेगा इसे अपने दल की उपलब्धि के रुप में प्रचारित व प्रसारित करेगा। कहने का तात्पर्य यह हैं कि कोरोना महामारी एक मार्मिक विषय हैं लेकिन इसे भी राजनीतिक रंग में रंगने का प्रयास राजनीतिक दलों द्वारा किया जा रहा हैं। चाहे वह प्रवासी मजदूरों का मुद्दा हो, मुक्त अनाज वितरण या कोरोना सें संम्बन्धित कोई सहायता। हर विषय को राजनीतिक बहस का मुददा बनाया गया हैं। वही दूसरी तरफ विपक्षी दल इस प्रयास में लगा हुआ हैं कि केन्द्र सरकार कोविड 19 से लड़ने में कहा कमजोर साबित हो रही हैं। उस कमजोरी को विपक्ष अपने अनुसार भुनाने का प्रयास करेगा।

केन्द्र-राज्य स्तर परः- भारतीय संविधान में केन्द्र सूची, राज्य सूची, समवर्ती सूची के माध्यम से केन्द्र एवं राज्य के मध्य शक्तियों का बंटवारा किया गया हैं। कोविड 19 की बात की जाए तो केन्द्र पर यह आरोप लगते रहे है कि इस महामारी से लड़ने में केन्द्र सरकार विपरीत दल वाले राज्यों की उनकी आवश्यकता के अनुसार मदद नहीं कर पा रही हैं यदि किसी भी रुप में केन्द्र सरकार इन राज्यों की सहायता करती भी हैं तो उसे केन्द्र की उपलब्धि एवं संबधित राज्य की किलता के रुप में प्रचारित किया जा रहा हैं। अप्रत्यक्ष रुप से यह मानस तैयार किया जा रहा हैं कि सत्तापक्षीय दल एवं उस दल से संम्बन्धित राज्य कोविड 19 से लड़ने में अधिक सफल हुए हैं जबकि अन्य दल उतने कामयाब नहीं हुऐ हैं। इसके अतिरिक्त विपरीत दल वाले राज्यों में कोरोना संक्रमितों की संख्या अधिक देखी जा रही हैं इसे भी राजनीतिक रंग देने का प्रयास इस दौरान किया गया हैं। चूंकि भारतीय संघवाद में केन्द्र-राज्य के मतभेद, आरोप-प्रत्यारोप एक राजनीतिक संस्कृति के रुप में देख सकते हैं बावजूद इसके केविड 19 के दौरान भारतीय संघ ने सहयोगात्मक संघवाद का परिचय दिया हैं। यही कारण हैं कि जब देश के प्रधानमंत्री के द्वारा जनता करर्यू लगाने, एक साथ दीप प्रज्वलन व शंखनाद करने की अपील की जाती है तो संपूर्ण राष्ट्र की सभी इकाईया अखंडता के धागे में बंधी मोतियों की माला के रुप में एकजूट नजर आती हैं।

अंतर्राष्ट्रीय स्तरः-कोविड19 का सबसे अधिक राजनीतिक प्रभाव अंर्तराष्ट्रीय स्तर पर देखा जा सकता हैं। तथा कथित यह आरोप लगते रहे हैं। कि कोविड19 का जन्म एक साजिश के तहत चीन की बुहान लैब में हुआ हैं, जिसने अमेरिका, इटली, स्पेन सहित

कई विकसित राष्ट्रों को अपनी शिकांजे में लिया हैं। इस महामारी ने शक्ति की राजनीति की अवधारणा को आहत किया हैं तथा महाशक्ति अमेरिका के गुरुर को तोड़ा है इसे चीनी सांजिश मानते हुए अमेरिका ने विश्व स्वास्थ्य संगठन को अर्थिक सहायता बंद करने व इस संगठन से अलग होने का निर्णय लिया। अमेरिका का यह निर्णय विश्व राजनीति में शक्ति संतुलन के एक नये समीकरण का संकेत दे रहा हैं। जिसमें अमेरिका-चीन एक दूसरे के विरोधी नजर आ रहें है वहीं दूसरी ओर भारत-अमेरिका मित्रता की एक नई परिभाषा लिख रहे है। इस बढ़ती मित्रता से चीन की बोखलाहट को गवलन घाटी में घुसपैठ के रुप में देख सकते हैं। निश्चित ही इस महामारी में भारत एक सशक्त राष्ट्र बनकर उभरा है जिसने अमेरिका को भारत से औषिधिय सहायता लेने के लिये विवश किया तथा चीन के 59 एप्स को बंद करने जैसा महत्वपूर्ण निर्णय लिया। कोविड 19 के दौर में संपूर्ण विश्व की राजनीति भारत-अमेरिका-चीन त्रिकोण के इर्द गिर्द घुमती नजर आ रही हैं।

चुनौती:- कोरोना महामारी के कारण बदले सामाजिक, आर्थिक तथा राजनीतिक परिदृश्य ने भारत के समक्ष कई चुनौतियो को जन्म दिया हैं जो इस प्रकार हैं:-

1. कोरोना के कारण भारत के समक्ष उपजी सबसे बड़ी चुनौती बेरोजगारी हैं लॉंकडाउन के कारण बदली जीवनशैली ने बेरोजगारी को बढ़ाया हैं। जिसने निपटना एक बड़ी चुनौती हैं।
2. दूसरी बड़ी चुनौती अप्रत्यक्ष रुप से व्याप्त आर्थिक मंदी से निपटना हैं।
3. इस महामारी को देखते हुए बड़े स्तर पर स्वास्थ्य सुविधाओ का विस्तार करना हैं।
4. अन्य देशों के साथ वस्तुओं के आयात निर्यात में सावधानी रखना।
5. लॉकडाउन के पश्चात हर स्तर पर जीवन स्तर को पहले की तरह सामान्य बनाना।
6. कोरोना की विध्वंसकारी दूसरी लहर से निपटना।
7. भारत जैसै विशाल देश में कोरोना से बचाव के लिये टीकाकरण अभियान को सफल बनाना। निश्चित ही उक्त समस्याए किसी भी राजनीतिक व्यवस्था के लिये गंभीर चुनौतियां हैं।

संभावनाएं:- हर संकट एक नये परिवर्तन की दस्तक भी लेकर आता हैं ठीक वैसे ही कोविड 19 के संकट ने हमारे समक्ष कई संभावना को जन्म दिया हैं।

1. वर्तमान समय में चीन के प्रति अंतर्राष्ट्रीय जगत की नाराजगी को भारत अपने पक्ष में भुनाते हुए सुरक्षा परिषद में स्थायी सदस्यता के लिये एक माहौल तैयार कर सकता हैं।
2. जिन भारतीय प्रतिभाओ के कारण अन्य राष्ट्र विकसित बने है। किंतु कोविड-19 के कारण जब ऐसी प्रतिभाए अपने देश में लौट रही हैं। तब एसे समय में भारत के लिये ये स्वर्णिम अवसर है कि वह इन प्रतिभाओ को भारत में रुकने के लिये अवसर और आकर्षण को निर्मित करें।
3. कोविड 19 के कारण निश्चित ही राजनीतिक संस्कृति में भी परिवर्तन संभव है। अर्थात अब चुनावी रैली, चुनाव प्रचार-प्रसार, चुनाव के तरीके, विधायिका में बैठक व्यवस्था, संसद के सत्र आदि में डिजिटल संस्कृति का चलन बढ़ेगा तथा सामाजिक दूरी, मास्क, सेनेटाइजर जैसे शब्द एक आदत बन जाएगें।
4. अब चुनावी मुद्दों मे भी बदलाव संभव है स्वास्थ्य मुख्य चुनावी मुद्दा बन सकता है। मतदाताओं के मतदान व्यवहार में भी परिवर्तन संभव है हो सकता है मतदाता ऐसे दल को मत देने के लिये प्रेरित हो जो अधिक स्वास्थ्य सेवाऐ उपलब्ध कराए। कोविड 19 के प्रकोप के कारण हो सकता है अब बजट निर्माण में भी स्वास्थ सं बंधी पक्ष कुछ एहमियत मिलें।

निष्कर्ष:- कोविड 19 निश्चित ही एक ऐसी विस्मयकारी घटना हैं। जिसे सम्पूर्ण मानव जाति कभी भूल नही सकती लेकिन मनुष्य का यह स्वभाव है। कि वह हर चुनौती के बीच एक नया रास्ता खोज ही लेता है। ये भारत के कुशल नेतृत्व, दूरदृष्टि एवं सुनियोजित नीति का ही परिणाम है, कि भारत स्वयं को इस संकट से बाहर निकालने के लियें कई चुनौतियों के साथ आगे बढ़ रहा है। जिसका उदाहरण कोरोंना वेक्सीन का निर्माण एवं टीकाकरण अभियान हैं। लेकिन यह सफलता निश्चिततंता कि नहीं वरन स्वास्थ्य के प्रति सावधानी एवं सतर्कता की अपेक्षा रखती है।

संदर्भ:-

1. 1 नई दुनिया, जून 2020
2. 2 दैनिक भास्कर , जुलाई 2020
3 इंडिया टुडे 2020

◆◆◆

शोध संचयन
A Refereed Research Journal
And a complete Periodical dedicated to
Humanities & Social Science Research
ISSN 0975 1254 (PRINT)
ISSN 2249-9180 (ONLINE)
www.shodh.net
Vol. 11
Issue1&2
15 July 2020

Role of Covid-19 epidemic in disrupting Indian Education System

Key words :

Covid-19, Online Classes, disruption in Education, Social Distancing

COVID-19 epidemic has disrupted the whole world. It developed in China and is now spreading globally. This epidemic is a health crisis affecting the economic development of each nation. This epidemic has disrupted the normal daily life of each nation. The Government of India has declared a lockdown across the country, along with promoting social distance to control the spread of COVID-19. All schools, colleges and Universities have been declared closed due to the epidemic. This is disrupting the entire education system. Policy makers are facing a number of problems in formulating policy related to education system. Teaching is going online from offline. Teaching system, students, teachers and parents are facing many problems due to this change. The present paper describes various factors that hamper the education system due to COVID-1 9.

*****

Rajni Kant Dixit
Research Scholar, Department of Education
Khwaja Moinuddin Chishti Language, University Lucknow

Role of Covid-19 epidemic in disrupting Indian Education System

The COVID-19 as a pandemic was declared by the WHO on 11 March 2020. This outbreak pandemic was evolved in Wuhan city of China and has affected many countries. The epidemic has greatly hampered the development of countries where cases of Novel Corona virus have been reported a lot. To reduce congestion, countries are taking various measures like lockdown, absence in workplace, school closure, stoppage of transport facilities etc. COVID-19 epidemic has temporarily shut down educational institutions around the world. More than 90 percent of the world's student population is affected by this nationwide lockdown. India is also suffering from this epidemic COVID-19. Government of India has taken various measures to control the infection such as 'Janta Curfew' announced by the Prime Minister on 22nd March, 2020 later on due to increasing cases of Covid-19, a total lockdown was announced for 21 days. The lockdown was carried forward by the Government of India on 14th April, 2020 till 3rd May, 2020. This decision is affecting the various sectors in the country. The education sector is also affected by the lockdown which is a critical determinant of the economic future of the country. As per the directives of the government, all school, colleges and universities are closed. Whole education system is disrupted by the pandemic COVID-19.

2. Impact of COVID-19 on education system:- State governments started the closure of schools and colleges across the country in order to control the spread of the novel coronavirus. It was announced in the second week of March as a temporary measure to avoid the crowd. Initially, for a month closure of schools was announced by the government but gradually the time of closure was extended and it is uncertain when they will reopen. During this period, there are various activities take place which are very crucial such as competitive exams and entrance tests of various universities, board examination and semester examinations in universities as well as admission process in universities and schools. In fact in India the closure of school and university will not only have a short-term impact on the continuity of learning of young learners but it will have a large effect on the economic growth of the country as well as having large effect on the society.

3. Impact of COVID-19 on Schools:- In order to raise the skills, best public policy tool available is going to school. School is a place where children can have fun and raise social awareness and social skills. The main motive of going school or being in school is that it enhances the ability of the child. On the other side missing the school or not attending the school will have negative effect on the skill growth .The closure of the schools has affected the structure of learning and schooling. First of all it affected the teaching and assessment methodologies. Generally online teaching methods are adopted by the few private schools that are handful in taking online classes. Generally in those schools children are taking classes online. On the other side low-income private and government schools have complete closure and not having the access to e-learning solution. It is disrupting the learning of students. In fact Parents are facing various issues because of the change in teaching methodology.

4. Impact of COVID-19 on Higher Education: The shutdown of universities has also affected the student's learning in universities. One immediate measure is essential n order to ensure the

continuity in institutes and universities. In order to conduct the class smoothly, online teaching methodology is adopted. Learning management software and open-source digital learning solutions are adopted by the universities to run online classes. Higher education is considered as a critical determinant of the economic future of the country and higher education of our sector has significantly affected by the pandemic as well. Many students from India's different states enrol in universities abroad. Due to the global closure of the institutes and universities, it is expected that it will reduce the demand for the international higher education.

The main concern regarding this which is coming in the mind of everyone is the effect of the pandemic on the rate of employment. Because of the current situation, graduates who have recently completed their graduation are fearing from the withdrawal of job offers from corporate. Teaching methodology in institutes and universities has also transformed due to the lockdown in India. Defiantly it has been replaced the old chalk-talk model with the new technology. E-learning solutions are making teaching and learning possible in this situation but engagement is a big problem attached with the e-learning. The policy makers are trying to solve the problem of engagement of students and tackling the digital divide. In order to manage the crisis in Indian education section, a multi-pronged strategy is necessary in the long term. An effective education and well rounded practices are needed in India to build the capacity of young minds in this time of crisis. To ensure the overall progress in India, It will drive employability, well-being, health and productivity through the development of skills.

5. Impact of COVID-19 on online classes:- In order to maintain the attendance or not missing out too much, children are forced to continue their education at home and the major drawback of this condition creating a situation where Students generally have not been sent out from the home to play. Bjorklund and Salvanes (2011) have told that the major inputs into a child's learning is provided by the families as these are treated as a central to education. Parents are facing issues in understanding the new methodology of teaching. Some parents are not very techno friendly. In this way they are not able to guide their ward to take classes online. Connectivity of internet is also a big challenge in front of all teachers, students and parents. There are many disturbances have to face due to the poor connectivity.

6. Assessments;- The teaching for students is not only interrupted by the closure of schools, colleges and universities. Janta Curfew also affected the assessment of the students all around the world. Many exams and assessments have been cancelled or postponed because of the closure of educational institutions. This is a new era of the education for both Teachers and Students. Many colleges and universities of India have shifted their traditional classes system to the online classes as well as the examination system also has been shifted from offline to online.

Defiantly Teachers are using online assessment tools for evaluation. Online assessment tools are not free from the limitations. They have also various draw backs. There are various errors related to the measurement are reported in online assessment tools in comparison to the usual measurement. et al. (2020) showed in their research that educational credentials are used by the employers to assess the applicants such as grade point averages and degree classifications to sort applicants. Thus, the lockdown is also affecting the placement of the new graduates on labour market. Matching efficiency of the new

graduates is reducing due to the increment in the disruptions in the signals of the applicants which is leading higher job separation rates and slower earning growth. According to Fredriksson and Ihlen (2018), this is costly both to the individual and also to society as a whole.

7. **Conclusion:** Due to covid19 closure of Schools, Colleges, Universities is creating great difficulties for Students and also disrupting the internal assessment and public assessments for qualifications. The traditional method of teaching has been replaced by the online teaching. One side online teaching is providing opportunity to the students for learning another side there are various issues are attached with the new methodology of teaching. Education institutions are searching the ways to solve the issues which arose due to the lockdown and putting their efforts to fill the loss of learning. In order to rebuild the loss in learning at the time when they will be reopened, schools need resources. This is really a big challenge for indian education system. In fact the internal assessment of the students related to the learning should not be skipped. It should be postponed for further instructions. New policies should be formed by the Governments to support students in their entry to the Job and other Business. up their immunity and what are the sources that can provide their immunity (like Golden milk, Amla, Lemon etc) and there is a need to adverts immunity boosters through advertisement on Television, Radio and social media etc.

References:

1. Bjorklund, A and K Salvanes (2011), “Education and Family Background: Mechanisms and Policies”, in E Hanushek, S Machin and L Woessmann (eds), Handbook of the Economics of Education, Vol. 3.
2. Fredriksson, M., & Ihlen, Ø. (2018). Introduction Public Relations and Social Theory 1. In Public Relations and Social Theory (pp. 1-16). Routledge.
3. Piopiunik, M, G Schwerdt, L Simon and L Woessman (2020), "Skills, signals, and employability: An experimental investigation", European Economic Review 123: 103374.
4. World Health Organization. (2020). WHO DirectorGeneral's opening remarks at the media briefing on COVID-19-11 March 2020. Geneva, Switzerland.
5. Pravat Ku Jena. Online learning during lockdown period for Covid-19 in India. International Journal of Multidisciplinary Educational Research. 2020c; 9, 5(8):82-92.
6. UGC notice (29 April, 2020). UGC Guidelines on Examinations and Academic Calendar in view of COVID-l9 Pandemic Retrieved on April 5, 2021. from https://www.ugc.ac.in/pdfnews/5369929 Letterregarding-UGC-Guidelines-on-Examinations-andAcademic-Calendar.pdf
7. WHO Coronavirus Disease (COVID-19) Dashboard. Retrieved on June 3, 2020. Fromhttps:// covid19.who.int/
8. Wikipedia. Covid-19 Pandemic in India. Retrieved on March 20, 2021 fromhttps://en.wikipedia.org/wiki/COVID-19_pandemic_in_India
9. DNS Kumar (29 April 2020). Impact of COVID-19 on Higher Education. Retrieved on March 25, 2021 from https://www.highereducationdigest.com/impact-ofcovid-19-on-higher-education

◆◆◆

शोध संचयन
A Refereed Research Journal
And a complete Periodical dedicated to
Humanities & Social Science Research
ISSN 0975 1254 (PRINT)
ISSN 2249-9180 (ONLINE)
www.shodh.net
Vol. 11
Issue 1&2
15 July 2020

एक अध्ययन बालकों का मानवाधिकारों के परिप्रेक्ष्य में कोविड-19 महामारी की प्रभावशीलता

बीज शब्द :

महामारी, मानवधिकार, किशोर न्याय, लॉक डाउन

ऐतिहासिक विवरणों के माध्यम से ज्ञात होता है कि मानव सभ्यताओं ने मानव जाति व मानव संस्कृति के इतिहास में अनेक अप्रत्याशित विभिषिकाओं का सामना किया है। वैश्विक स्तर पर अनेक बार आपदायें आई जो मानव जाति के नियंत्रण से बाहर थी पर मानव ने अपने विवेक, साहस तथा धैर्य से उन आपदाओं पर विजय प्राप्त की एवं अपने विकास रूपी चक्र को सदा गतिशील रखा। समय के साथ अपने सम्मुख उत्पन्न संकटों को चीरते हुए आगे बढ़ने का साहस मानव में मानव सभ्यता के मूल मंत्र ''संकल्प से सिद्धि'' के भाव के साथ आता है। यह मूल मंत्र संदेश देता है कि मानव द्वारा जो लक्ष्य निर्धारित किया जाता उसकी पूर्ति सम्भव है।

भारत में वर्तमान की भाँति पूर्व में 1918 की स्पैनिश फ्लू नाम की महामारी का प्रभाव हमारे परिवेश में पड़ा। एक अनुमान के अनुसार स्पैनिश महामारी से देश में 1.8 करोड़ लोगों की मृत्यु हुई थी जो उस समय की आबादी का 6 प्रतिशत था। आज की इस वैश्विक महामारी की तुलना वॉल स्ट्रीट जर्नल के एक लेख में स्पैनिश फ्लू से की गई है तथा यह भी कहा गया है कि पूर्व की भाँति मृत्यु दर वर्तमान में उतनी नहीं होगी क्योंकि संसाधानों की उपलब्धता के कारण संसार भर में अनेक बदलाव हुए हैं।

*****

कमल कान्तजोशी
शोध छात्र : राजनीति विज्ञान
राधे हरि राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, काशीपुर

विधि विरुद्ध बालकों के मानवधिकारों के परिप्रेक्ष्य में कोविड-19 महामारी की प्रभावशीलता

ऐतिहासिक विवरणों के माध्यम से ज्ञात होता है कि मानव सभ्यताओं ने मानव जाति व मानव संस्कृति के इतिहास में अनेक अप्रत्याशित विभिषिकाओं का सामना किया है। वैश्विक स्तर पर अनेक बार आपदायें आई जो मानव जाति के नियंत्रण से बाहर थी पर मानव ने अपने विवेक, साहस तथा धैर्य से उन आपदाओं पर विजय प्राप्त की एवं अपने विकास रूपी चक्र को सदा गतिशील रखा। समय के साथ अपने सम्मुख उत्पन्न संकटों को चीरते हुए आगे बढ़ने का साहस मानव में मानव सभ्यता के मूल मंत्र ''संकल्प से सिद्धि'' के भाव के साथ आता है। यह मूल मंत्र संदेश देता है कि मानव द्वारा जो लक्ष्य निर्धारित किया जाता उसकी पूर्ति सम्भव है।

भारत में वर्तमान की भाँति पूर्व में 1918 की स्पैनिश फ्लू नाम की महामारी का प्रभाव हमारे परिवेश में पड़ा। एक अनुमान के अनुसार स्पैनिश महामारी से देश में 1.8 करोड़ लोगों की मृत्यु हुई थी जो उस समय की आबादी का 6 प्रतिशत था। आज की इस वैश्विक महामारी की तुलना वॉल स्ट्रीट जर्नल के एक लेख में स्पैनिश फ्लू से की गई है तथा यह भी कहा गया है कि पूर्व की भाँति मृत्यु दर वर्तमान में उतनी नहीं होगी क्योंकि संसाधनों की उपलब्धता के कारण संसार भर में अनेक बदलाव हुए हैं।

बच्चों के अधिकारों के संदर्भ में यदि हम विश्व पटल पर दृष्टि डाले तो सर्वप्रथम ''लीग ऑफ नेशन्स'' ने 1924 में जेनेवा घोषणा पत्र के अंतर्गत बच्चों को अधिकार तत्व स्वास्थ्य, भोजन शोषण से मुक्ति आदि की उपलब्धता प्रदान की गयी। बाद के वर्षो में बच्चों के अधिकार संरक्षण हेतु मानवधिकारों का सार्वभौमिक घोषणा पत्र 1948, बीजिंग नियम 1985 तथा बाल अधिकार प्रसंविदा 1989 आदि ऐसे प्रपत्र हैं जिनमें बच्चों के अधिकारों का वर्णन किया गया है। भारत ने बाल अधिकार प्रसंविदा को 1992 में स्वीकारा तथा वर्तमान में किशोर न्याय अधिनियम, 2015 इनका आधार है। इसका उद्देश्य भारतीय संविधान के अनुच्छेद 15, 39ई, 45 व 47 में वर्णित उद्देश्यों का परिपालन करना है जो बच्चों के सुखमय जीवन जीने हेतु आवश्यक है।

बच्चों को प्राप्त यह अधिकार किसी भी स्थिति में उनके सुखमय जीवन जीने हेतु आवश्यक हैं तथा उनकों इन से विमुख नहीं किया जा सकता है।

उद्देश्यः- प्रस्तुत शोध पत्र का मूल ध्येय कोविड 19 महामारी की प्रभावशीलता का विधि विरूद्ध बालकों के मानवधिकारों पर क्या प्रभाव पड़ा इसके परिप्रेक्ष्य में जनमानस को जानकारी प्रदान कराना है।

विधिः- प्रस्तुत शोध पत्र में द्वितीय स्रोतों के माध्यम से तथ्यों का संकलन कर उसका वर्णनात्मक विश्लेषण किया गया है।

परिकल्पनाः- महामारी के दौर में भी विधि विरूद्ध बालकों के मानवधिकारो का संरक्षण सम्भव है।

प्रस्तुत शोध पत्र को निम्न बिन्दुओं के आधार पर रेखांकित किया गया है -

1. ऐतिहासिक पृष्ठभूमि।
2. किशोर न्याय अधिनियम के अनुरूप विधि विरूद्ध बालकों के मानवधिकार कोविड के दौर में।
3. कोविड 19 महामारी के दौर में न्यायालय द्वारा निर्देशित दिशा निर्देश विधि विरूद्ध बालकों के परिप्रेक्ष्य में।

1. **ऐतिहासिक पृष्ठभूमिः-** कोविड 19 महामारी के परिप्रेक्ष्य में यह कहाँ जा सकता है कि आधुनिक विश्व में यह कोई प्रथम महामारी नहीं इससे पूर्व 1918-1920 में स्पेनिश फ्लू, 1957 में एशियाई फ्लू ने कई देशो में अपने आप को स्थापित किया, 1968 में हॉन्ग कॉन्ग फ्लू ने कहर बरपाया, 2002 में सार्स वायरस तो 2009 में एस1एन1 फ्लू की महामारी फैली और वर्ष 2016-2018 के दौरान पश्चिमी अफ्रीका में इबोला वायरस ने अपना प्रकोप दिखाया। ये समस्त महामारी आज की महामारी की भाँति भौगोलिक दायरे में नहीं फैली थी इसलिए अन्य महामारियों से कोविड 19 महामारी कुछ अलग है क्योंकि विश्व के समस्त देशों में यह फैली। पूर्व की अन्य महामरियों का भौगोलिक क्षेत्र का दायरा इतना व्यापक नहीं था, उन्होंने क्षेत्रीय स्तर पर अपना कहर बरपाया तथा इसके बाद विश्व परिदृश्य में परिवर्तन हुआ। आने वाले कल में कोविड 19 महामारी के बाद अनेक परिर्वतन समाज में होंगे तथा इतिहासकार उसकी प्रभावशीलता के लिए उसे याद करेंगे।

वाशिंगटन पोस्ट की रिपोर्ट के अनुसार कोरोना वायरस कोई साजिश का परिणाम नहीं बल्कि यह प्राकृतिक वायरस है। 'नेचर मैगजीन' में क्रिस्टियान एंडरसन के पब्लिश रिसर्च पेपर में इस वायरस के प्राकृतिक होने की बात कही गयी है तथा वुहान शहर के प्राफेसर शी झेंगली की रिसर्च रिपोर्ट के अनुसार उनके द्वारा 28 गुफाओं में जाकर चमगादड़ों का मल एकत्रित कर चमगादड़ो के वायरसों का पूरा आर्काइव तैयार किया जिसमें

कोरोना वायरस का जिक्र किया गया था जो हॉर्सजू प्रजाति के चमगादड़ों में पाया गया था। प्राफेसर शी झेंगली ने चीन में इस वायरस के संक्रमण फैलने के बाद वायरस का बायोस्ट्रक्चर तैयार किया और उसे पब्लिश किया इस आधार पर चीन ने कोरोना वायरस के टीके बनाने की अनुसंधान प्रक्रिया प्रारम्भ की तथा वैश्विक स्तर पर टीके पर कार्य प्रारम्भ हो गया। वर्ष 2020 के अंत में वैश्विक स्तर पर अनेक देशों ने टीकाकरण पर कार्य प्रारम्भ किया। भारत में भी 16 जनवरी 2021 से टीकाकरण प्रारम्भ हुआ जो अपने आप में इस वायरस के विरूद्ध लड़ाई में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करेगा ऐसी उम्मीद की जा सकती है। इसके अतिरिक्त 3 जनवरी 2022 से 15 से 18 वर्ष के किशोरों का टीकाकरण प्रारम्भ हो गया।

2. **किशोर न्याय अधिनियम के अनुरूप विधि विरूद्ध बालकों के मानवधिकार कोविड के दौर में-** किशोर न्याय अधिनियम 2015 की धारा 2(13) के अनुसार विधि विरूद्ध बालकों की संज्ञा उन्हें दी गयी है, जिन्होंने अपराध के दिन तक 18 वर्ष की आयु पूर्ण नहीं की है।

धरातल पर जन्म लेने वाला प्रत्येक मानव अपनी जीवन यात्रा को प्रारम्भ एक अबोध शिशु के रूप में करता है। आज के बच्चे कल का भविष्य है इस आधार पर बच्चों के अधिकारों का संरक्षण करना समाज का केन्द्रीय दायित्व बन जाता है क्योंकि **बच्चे अपनी उपेक्षा और पीड़ा को ठीक ढंग से व्यक्त नहीं कर पाते हैं** और प्रौढ़ भी बच्चे समझकर उनकी भावनाओं को उतना महत्व नहीं देते हैं जितना कि दिया जाना चाहिए यही से **बच्चों के अधिकारों का हनन् होना प्रारम्भ हो जाता है।**

विधि विरूद्ध बच्चों के अधिकारों के संरक्षण की बात करे तो **किशोर न्याय अधिनियम,** 2015 **की धारा** 10 **के अनुसार** 18 वर्ष से कम उम्र के बच्चे जिन्होंने कोई कानून विरूद्ध कार्य किया है, ऐसे बच्चों को पुलिस द्वारा अपनी अभिरक्षा में लेने के 24 घण्टे के भीतर **किशोर न्यायिक बोर्ड** के समक्ष प्रस्तुत करना आवश्यक है तथा **किशोर न्याय अधिनियम,** 2015 **की धारा** 12 **के अनुसार** न्यायिक बोर्ड के समक्ष प्रस्तुत करने के बाद बच्चों को जमानत पर छोड़कर घर भेजने का प्रावधान भी है। यदि जमानत नहीं दी जाती है तो बच्चे को **संप्रेक्षण गृह** में रखा जाता है तथा वहीं पर उसकी काउंसलिग व उचित परामर्श के साथ आगे की कार्यवाही की जाती है तथा किशोर न्याय की अवधारणा को मूर्त रूप प्रदान किया जाता है।

किशोर न्याय अधिनियम, 2015 **की धारा** 3 के अंतर्गत विधि विरूद्ध बच्चों के मानवधिकार संरक्षण हेतु 16 सिद्वान्त जो कोविड 19 महामारी के दौर में उनके हित संवर्धन हेतु आवश्यक है, उनका वर्णन इस प्रकार है -

निर्देशित की अवधारण का सिद्धान्त- इसके अंतर्गत 18 साल के व्यक्ति, जिसे यह कानून बच्चा मानता है को आपराधिक आशय का दोषी नहीं माना जाएगा। **गरिमा व योग्यता का सिद्धान्त-** इसके अंतर्गत सभी मनुष्यों के साथ गरिमापूर्ण व अधिकारों में समान बर्ताव किया जाना चाहिए।

भाग लेने (सहभागिता) का सिद्धान्त- इसके अंतर्गत प्रत्येक बच्चे को अपनी बात कहने व उसके सुने जाने का व उसके हितों को प्रभावित करने वाली हर प्रक्रिया व निर्णयों में सहभागी होने का अधिकार प्राप्त है।

सर्वोत्तम हित का सिद्धान्त- इसके अंतर्गत बच्चों से सम्बंधित हर प्रक्रिया इस सिद्धान्त पर आधारित होनी चाहिए। यह प्रक्रिया बच्चों के सबसे ज्यादा हित में है और बेहतरी के लिए है।

कौटुम्बिक जिम्मेदारी का सिद्धान्त- इसके अंतर्गत बच्चे की देखरेख, उसके पोषण व उसकी सुरक्षा की सबसे पहली जिम्मेदारी उसके परिजन-परिवार की है।

सुरक्षा का सिद्धान्त- इसके अंतर्गत यह सुनिश्चित करना है कि बच्चा सुरक्षित रहें। देखरेख व संरक्षण की प्रक्रिया में रहते हुए तथा उसके बाद भी उसे हानि नहीं पहुंचे, उसके साथ दुर्व्यवहार नहीं हो तथा बुरा बर्ताव नहीं किया जाए। सुरक्षा के पर्याप्त इंतजाम किये जाएँ।

गैर- कलंकीय शब्दार्थो का सिद्धान्त- इसके अंतर्गत बच्चों के सम्बन्ध में ऐसे शब्दों का उपयोग नहीं किया जाएगा, जो उन्हें अभियोगी बताते हो या उनके प्रतिकूल हो। अधिकारों का त्याग नहीं किये जाने का सिद्धान्त इसके अंतर्गत बच्चों के अधिकारों को किसी भी परिस्थिति में सीमित नहीं किया जाएगा इसका प्रावधान है।

समानता का विभेद नहीं किये जाने का सिद्धान्त इसके अंतर्गत किसी भी बच्चे के खिलाफ किसी भी आधार पर भेदभाव नहीं किया जाएगा व हर बच्चे को पहुँच, अवसर व बर्ताव में समानता का हक प्राप्त है।

एकान्त व गोपनीयता का अधिकार सिद्धान्त इसके अंतर्गत हर बच्चे को सभी तरीकों से पूरी न्यायिक प्रक्रिया में निजता व गोपनीयता की सुरक्षा का अधिकार प्राप्त है।

संस्थागत संरक्षण का सिद्धान्त यानी हर बच्चे को प्रकरण में जॉच के बाद बिना किसी देरी के संस्थागत देखरेख में रखा जाएंगा।

परिवार, कुटुम्ब, समुदाय में फिर से मिलने-बसने का अधि

कार यानी किशोर न्यायिक प्रक्रिया में हर बच्चे को जल्दी से जल्दी अपने परिवार कुटुम्ब में फिर से मिलने व उसी सामाजिक-आर्थिक-सांस्कृतिक व्यवस्था में फिर से जाने, पुन: बसने का अधिकार प्राप्त है।

नये सिरे से शुरूआत करने का सिद्धान्त यानी कानून के तहत कुछ परिस्थितियों को छोड़ कर, बच्चे के प्रकरण से सम्बन्धित पिछले सभी कागज, अभिलेख नष्ट कर दिए जाने का अधिकार प्राप्त है।

सकारात्मक उपाय का सिद्धान्त इसके अंतर्गत बच्चों के कल्याण को प्रोन्नति, पहचान के विकास और असुरक्षा कम करने के लिए समावेशित वातावरण उपलब्ध कराने के लिए परिवार और समुदाय को गतिमान किया जाना चाहिए। अपयोजन का अधिकार यानी कानून का उल्लंघन करने वाले बच्चे से सम्बन्धित कार्यवाहियों को अविलम्ब निपटाया जाना चाहिए।

नैसर्गिक न्याय का सिद्धान्त यानी सभी व्यक्तियों के लिए न्यायोजित व निष्पक्ष प्रक्रिया के मानकों का (जैसे उचित सुनवाई, निष्पक्षता, समीक्षा आदि) पालन हो।

किशोर न्याय आदर्श नियम 2016 के अंतर्गत राजकीय सम्प्रेक्षण गृह में रहने के दौरान बच्चों के हित संवर्धान हेतु निम्न प्रावधान किए गए है।

नियम 30- राजकीय सम्प्रेक्षण गृह में रहने के दौरान बच्चों को कपड़े, बिस्तर और प्रसाधन के सामान आदि की उपलब्धता का प्रावधान है।

नियम 31- इस नियम के अंतर्गत यह प्रावधान है कि बच्चों को राजकीय सम्प्रेक्षण गृह में स्वच्छता व सफाई की उपलब्धता प्राप्त होगी।

नियम 32(2)- इस नियम के अंतर्गत यह प्रावधान है कि बच्चों के जीवन को अनुशासित बनाने हेतु राजकीय सम्प्रेक्षण गृह की दिनचर्या में रोजमर्रा की क्रियाओं के अन्तर्गत- निजी स्वच्छता, शारीरिक व्यायाम, व्यावसायिक प्रशिक्षण, मनोरंजन तथा नैतिक शिक्षा आदि हेतु विशेष कार्यक्रम होने चाहिए।

नियम 33- राजकीय सम्प्रेक्षण गृह में रहने वाले बच्चो के पोषण व और आहार मानक का उल्लेख किया गया है। नियम 33(8) खण्ड (पप) के अनुसार अस्वस्थ बच्चों को विशेष चिकित्सा भोजन तथा नियम 33(8) खण्ड (पअ) में उल्लेख किया गया है कि छुट्टी और त्यौहार के दिनों में बच्चों को विशेष भोजन देने का प्रावधान है।

नियम 34- इस नियम के अंतर्गत राजकीय सम्प्रेक्षण गृह में रहने के दौरान बच्चों को चिकित्सा व्यवस्था की सुविधा प्राप्ति का अधिकार हैं।

नियम 35(5)- इसके अंतर्गत प्रावधान है कि राजकीय सम्प्रेक्षण गृह में बच्चों के मानसिक स्वास्थ्य हेतु प्रशिक्षित सलाहकारों की सेवाएं मनोवैज्ञानिक आंकलन और रोग निदान के लिए प्राप्त होगी।

नियम 36(1)- इस नियम के अंतर्गत राजकीय सम्प्रेक्षण गृह में बच्चे की आयु और क्षमता के अनुसार शिक्षा प्राप्ति का अधिकार प्राप्त है।

नियम 37(1)- इस नियम के अंतर्गत राजकीय सम्प्रेक्षण गृह में बच्चों को उनकी आयु, रूचि, क्षमता व योग्यता अनुसार व्यावसायिक प्रशिक्षण की प्राप्ति का अधिकार प्राप्त है।

नियम 38(1)- इस नियम के अंतर्गत राजकीय सम्प्रेक्षण गृह में रहने के दौरान बच्चों के मानसिक, बौद्विक व शारीरिक विकास हेतु योग, ध्यान, संगीत, टेलीविजन, पिकनिक हेतु बाहर जाना और सांस्कृतिक कार्यक्रम, बगीचे की देखरेख, पुस्तकालय, डांस आदि की व्यवस्था का अधिकार प्राप्त है।

नियम 74(1)- इस नियम के अंतर्गत बच्चों के अभिभावकों को राजकीय सम्प्रेक्षण गृह में बच्चों के रहने के दौरान सप्ताह में एक बार मिलने का अधिकार प्राप्त है।

नियम 78 - यह नियम राजकीय सम्प्रेषण गृह के खुलापन व पारदर्शिता को रेखांकित करता है।

नियम 78(1)- प्रत्येक नागरिक जो स्वैछिक संस्थाएं, सामाजिक कार्यकर्ता, अनुसंधानकर्ता और शिक्षक है वे अध्ययन हेतु किशोर न्याय बोर्ड या प्रभारी व्यक्ति की अनुमति से यहॉ पर आ सकता है।

3- कोविड 19 महामारी के दौर में न्यायालय द्वारा निर्देशित दिशा निर्देश विधि विरूद्ध बालकों के परिप्रेक्ष्य में:-

बच्चे किसी भी देश के भविष्य निर्धारक तत्व है। उनके मानवधिकारों के संरक्षण हेतु वैश्विक व राष्ट्रीय स्तर पर अनेक कानूनों व अनेक समझौते राष्ट्रों के मध्य समय-समय पर होते रहते हैं, इसके अतिरिक्त बच्चों के अधिकार संरक्षण हेतु देश की न्यायिक प्रणाली द्वारा विशेष परिस्थितियों में या आवश्यकता अनुसार स्वत: संज्ञान लेते हुए निर्देशित किया जाता है कि इस प्रकार से बच्चों के हितों का संवर्धन किया जाए।

21वी सदी की इस वैश्विक महामारी के दौर में न्यायालय ने अपनी जिम्मेदारी का निर्वहन करते हुए बाल देखरेख संस्थाओं तथा विधि विरूद्ध बच्चों के सर्वोत्तम हितों तथा किशोर न्याय की अवधारणा को साकार करने हेतु इस प्रकार के महत्वपूर्ण कदम उठाए जिसका विवरण इस प्रकार है -

देश में वैश्विक महामारी को मदेनजर रखते हुए 22 मार्च

को जनता कर्फ्यू के बाद 25 मार्च 2020 से 14 अप्रैल तक 1 चरण का लॉक डाउन घोषित किया गया था। 3 अप्रैल 2020 कोविड महामारी को ध्यान में रखते हुए बाल देखभाल संस्थाओं में भीड़ कम करने के लिए, सुप्रीम कोर्ट के न्यायमूर्ति एल. नागेश्वर राव और दीपक गुप्ता की खण्ड पीठ ने बाल संरक्षण गृहों की दशा पर स्वत: संज्ञान लेते हुए किशोर न्याय बोर्ड और बाल **न्यायालयों को निर्देश दिया:**- वे उन बच्चों को अस्थाई जमानत पर रिहा करने पर विचार करें, जो कानून के साथ संघर्ष के चलते इन गृहों में रखे गए है तथा जो किशोर न्याय अधिनियम 2015 की धारा 12 के अंतर्गत आते हो। इसके अतिरिक्त पीठ द्वारा बाल देखरेख संस्थाओं में सुरक्षा व व्यक्तिगत स्वच्छता उत्पादों की उपलब्धता सुनिश्चित करने के लिए निर्देशित किया गया।

न्यायालय द्वारा निर्देशित प्रमुख दिशा निर्देश:- जिन बच्चों को उनके परिजनों के पास भेजा जा रहा है, उनके मामलों में दूरभाषा के माधयम से बाल कल्याण समितियों द्वारा निगरानी की जाए व जिला बाल संरक्षण समितियों के माध्यम से समन्वय भी किया जाए।

किशोर न्याय बोर्ड व बाल न्यायालयों द्वारा बच्चों से सम्बंधित पूछताछ तथा **बच्चों से जुड़े मामलों को तेजी से निपटाने हेतु** ऑनलाइन वीडियों सेशन के माध्यम से सुनवाई की जाए।

बाल देखरेख संस्थाओं में कार्यरत कर्मियों द्वारा कार्य अवधि के दौरान किसी प्रकार की चूक होने पर किशोर न्याय आदर्श नियम 2016 के नियम 66(1) के अनुसार सख्त कार्यवाही की जाए।

संस्थाओं में रखे गए बच्चों की नियमित जांच की जाए और हेल्थ रफेरल सिस्टम का पालन किया जाए।

सीसीआई सकारात्मक स्वच्छता व्यवहारों के अभ्यास, प्रचार और प्रदर्शन के लिए आवश्यक कदम उठाएं और उनको अपनाए जा रहा है या नहीं इसकी निगरानी की जाए।

न्यायमूर्ति एल. नागेश्वर राव और दीपक गुप्ता की खण्ड पीठ द्वारा व्यक्त विचार

''ऐसे बच्चे है जिन्हें देखभाल और ध्यान की आवश्यकता होती है, परन्तु उनकों इन होम में रखा गया है। वहीं कानून के साथ संघर्ष कर रहे बच्चों को भी विभिन्न प्रकार के होम में रखा जाता है। ऐसे बच्चे भी होते हैं जिन्हें पालक और रिश्तेदारी की देखभाल में रखा जाता है। इन परिस्थितियों में, यह महसूस किया गया है कि इन बच्चों के हित पर ध्यान दिया जाना चाहिए''।

जमानत पर रिहा बच्चों की शिक्षा हेतु न्यायालय निर्णय -15 दिसम्बर 2020 को सुप्रीम कोर्ट के न्यायमूर्ति एल नागेश्वर राव, हेमन्त गुप्ता व अजय रस्तोगी की पीठ ने सभी राज्य सरकारों को निर्देश दिया कि उनके द्वारा कोविड महामारी के दौरान परिवारों को सौंपे गए बाल देखभाल संस्थाओं के बच्चों को उनकी शिक्षा के लिए हर माह 2 हजार रूपये प्रदान किए जाए।

न्यायालय द्वारा दिया गया यह आदेश बच्चों के शिक्षा के अधिकार प्राप्ति में सहायक का कार्य करेगा जिससे ज्ञानवान जीवन की परिकल्पना को साकार किया जा सकता हैं तथा एक सुखमय व गरिमामय जीवन की अभिलाषा की जा सकती है, जिससे समाज विरोधाी कार्य करने वाले बच्चों को समाज की मुख्य धारा में आसानी से लाया जा सकता है।

सुप्रीम कोर्ट के आदेशानुसार बाल सुधार गृह में रह रहे बच्चों को अंतरिम जमानत पर छोड़ने की प्रक्रिया के अंतर्गत दण्ड से स्पष्ट होता है कि देश में प्रथम लॉकडाउन से पूर्व कितने बच्चे बाल देखरेख संस्थाओं में रह रहे थे व कितनों को अंतरिम जमानत पर रिहा किया गया।

निष्कर्ष:-21 वी सदी की इस वैश्विक महामारी के दौरान न्यायालय ने बाल देखरेख संस्थाओं में रह रहे विधि विरूद्ध बच्चों के हितों को ध्यान में रखकर स्थापित कानूनों व अंतर्राष्ट्रीय अंनुबंधाों के उचित क्रियान्वयन हेतु महत्वपूर्ण दिशा निर्देश जारी किए जो मानवधिकार संरक्षण हेतु आवश्यक था, जिसके अंतर्गत बच्चों से जुड़े मामलों को तेजी से निपटाने हेतु ऑनलाइन वीडियों सेशन के माध्यम से सुनवाई का प्रावधान किया गया, बाल देखरेख संस्थाओं में कार्यरत कर्मियों द्वारा कार्य अवधि के दौरान किसी प्रकार की चूक होने पर किशोर न्याय आदर्श नियम 2016 के नियम 66(1) के अनुसार सख्त कार्यवाही हेतु निर्देश दिया गया तथा अन्य बिन्दुओं के अंतर्गत बच्चों के सर्वोत्तम हित हेतु अनेक दिशा निर्देश न्यायालय द्वारा दिए गये जो मानवधिकार संरक्षण में सहायक हैं।

संदर्भ ग्रन्थ :

1- मिश्रा. डॉ महेन्द्र कुमार, 2008, भारत में मानवधिकार, आत्म राम एण्ड सन्स, जयपुर ।

2- सिंह, डॉ संजय, 2010, मानवाधिकार और दलित, ओमेगा पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली ।

3- भसीन अनीश, 2011, जानिए मानव अधिकारों को, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली ।

4- https://www.nhrc.nic.in

5-https://hindi.livelaw.in/category/news-updates/consider-releasing-children-from-observation-homes-on-interim-bail-amid-covid-19-sc-directs-jjbs-childrens-courts-154771

6-https://www.amarujala.com/india-news/sc-directs-states-to-provide-rs-2000-per-month-to-children-of-care-institutions

7-https://m.jagran.com/world/china-when-and-where-coronavirus-generate-know-more-the-expert-view-jagran-special-20207467.html

8-https://www.orfonline.org/hindi/research/what-will-the-world-be-like-after-the-coronavirus-epidemic-64599/?amp

◆◆◆

शोध संचयन
A Refereed Research Journal
And a complete Periodical dedicated to
Humanities & Social Science Research
ISSN 0975 1254 (PRINT)
ISSN 2249-9180 (ONLINE)
www.shodh.net
Vol. 11
Issue 1&2
15 July 2020

सामान्य जन-जीवन को संक्रमित करता 'कोरोना काल'

बीज शब्द :

कोरोना,प्रौद्योगिकी, मानवीय संवेदना, सामान्य जीवन, सांप्रदायिकता

21वीं सदी में कोरोना महामारी मानव जाति के समक्ष बड़ी चुनौती है, जिसने मानव जीवन को सस्ता और जिंदगी जीना महंगा कर दिया है ।मेडिकल साइंस की आशातीत तरक्की के बावजूद यह समस्या आम जन-जीवन को संक्रमित कर रही है ।इस विकट परिस्थिति में ईश्वर-अल्लाह-गॉड के किवाड़ तो बंद हैं लेकिन साम्प्रदायिकता के दंगे रोज जारी हैं। ऐसे में आधुनिक सोच की सीमा स्पष्ट नजर आने लगी है । इस संकटकालीन स्थिति में समस्त मनुष्यों का एक ही धर्म और एक ही कर्म है 'मानव जाति की रक्षा।'

*****

गंगा कोइरी
सहायक प्राध्यापक (डब्ल्यू. बी. ई. एस.
हिंदी विभागाध्यक्ष
गवर्नमेंट कॉलेज ऑफ एजुकेशन (सी.टी.ई.),
बानीपुर, उत्तर 24 परगना, (प. बं.)

सामान्य जन-जीवन को संक्रमित करता 'कोरोना काल'

दिसंबर 2019 से पहले का दौर मानव इतिहास में भूमंडलीकरण या इक्कीसवीं सदी के नाम से विदित था किन्तु वर्तमान में यह 'कोरोना काल' के नाम से जाना जा रहा है। इस कोरोना ने पूरे विश्व में सन्नाटा बुन दिया है और अब यह संकट विश्व पटल पर 'मानवीय त्रासदी' के रूप में उभर रहा है। इस त्रासदी ने सामान्य जीवन को बुरी तरह से तबाह कर दिया है। आबादी का एक बड़ा हिस्सा सामान्य जीवन ही व्यतीत करता है। आम भाषा में यह 'कामगार' वर्ग है। इस कामगार वर्ग में किसानी करने वालों से लेकर दिहाड़ी मजदूर, ठेले-रिक्शेवाले, बोझा ढोने वाले, कचड़ा बिंधने वाले आदि हैं। यह गंभीर महामारी इनके वर्तमान जीवन में पिछले कई महीनों से इस कदर हावी है कि ये सामान्य लोग मौत के साए तले जिंदगी तलाशने को विवश हो रहे हैं! इस विकट घड़ी में यातायात के सारे साधन बंद हैं। कहीं रेलवे के विरामास्थल में लाखों श्रमिकों का हुजूम रहा तो कहीं निराश-हताश पैदल, साइकिल सवार श्रमिकों की कतारें। महानगरों में जीविका तलाशने वाला यह वर्ग दिशाहीन स्थिति से निजात पाने के लिए अपने कस्बे-गाँवों की ओर लौटने के लिए मशक्कत करता हुआ अपने घर तक लौटा लेकिन अपने परिवार एवं बच्चों के दो वक्त की रोटी के लिए उसे फिर से उसी पश्चिमी देशों के इशारे पर अपने देश की शहरों और फैक्ट्रियों की ओर कदम बढ़ाने पड़ रहे हैं। के. एस. चलम की पंक्तियों से इस तथ्य की पुष्टि की जा सकती है। "भारत में नागरिक समाज के पास अपना कोई एजेण्डा नहीं है, जो हमारी स्थिति और लोकाचार के लिए प्रासंगिक हो और ये विदेश से अपने जनादेश की व्युत्पत्ति कर रहा है।"[1]

कोरोना के इस मंजर में कहीं बेबसी और मायूसी है तो कहीं हँसी और ठहाके का मिला-जुला रूप,जो सिक्के की दो पहलू की तरह जीवन को कहीं रंगीन तो कहीं रंगहीन बना रही है! एक ओर इस लॉकडाउन में सुविधा-संपन्न वर्ग अपने घर की दिवार पर लगी बड़ी स्क्रीन पर परिवार समेत गृहबंदी समय का लुफ्त उठा रहा है, वहीं दूसरी तरफ इसी गृहबंदी जीवन तले बच्चों का बचपन, बुजुर्गों की बैठकें, औरतों की गप्पे और पुरुषों के अड्डे बाजियाँ कोरोना के आतंक से दम तोड़ रही है। इस महामारी ने संक्रमण का जाल केवल मनुष्य मात्र के शरीर पर ही नहीं फैलाया बल्कि मनुष्य का मन भी इस कदर संक्रमित हो गया है कि पृथ्वी के समस्त प्राणी संशय की आगोश में साँसे ले रहे हैं। विश्व स्तर पर सभी देश इसे खत्म करने का भरसक प्रयत्न कर रहे हैं पर हर दिन हजारों-लाखों जानों का जाना मानवता की शिकस्त बनकर सितम ढा रही है। इस महामारी से भविष्य धुंध में नजर आ रहा है। हर देश की सरकार अपने सामर्थ्य के अनुरूप इस महामारी से जंग लड़ रही है। लेकिन यह हर रोज एक नई चुनौती के साथ मानव-जीवन को निगल कर अट्टहास कर रहा है। बार-बार और लगातार ऐसी स्थितियाँ बन रही हैं कि परिजन अपने सगे-सम्बन्धियों के दाह-संस्कार तक नहीं कर पा रहे हैं। ऐसी विडंबना भारत सहित विश्व के अनगिनत देशों की भी है, जिससे उनके संस्कृति-संस्कार प्रभावित हो रही है।

प्रौद्योगिकी एवं भौतिक संसाधनों के दम पर जीने वाला मानव लॉकडाउन या अनलॉक की स्थिति में अपनी पेट की ओर ताकते हुए झोली उठाए सबसे पहले अन्न के लिए दौड़ रहा है। यह कहना अनुचित न होगा कि संक्रमण की घड़ी में किसान 'कोरोना वारियर्स' का अहम हिस्सा है। मौसम की जंग हो या कोरोना का संघर्ष किसान का हल क्वॉरन्टीन् नहीं हुआ। वह जीवन-मृत्यु से परे अन्न उगाए जा रहा है। इस सन्दर्भ मे कमल नयन काबरा की उक्ति समीचीन प्रतीत होती है।" आज हजारों उपक्रम बंद हो चुके हैं। कृषि की हालत ठीक नहीं है। 70 प्रतिशत भारतवासियों को आवश्यकता से कम भोजन मिल रहा है, जबकि औसत खाद्य उत्पादन का चौथाई हिस्सा गोदामों में पड़ा खराब हो रहा है। लोग भूख, गर्मी, सर्दी तथा प्रतिकूल परिस्थितियों के कारण मर रहे हैं।"[2]

उपेक्षित जन-समुदाय के लिए परिस्थितियाँ हरदम प्रतिकूल ही बनी रही है और नीति-निर्धारकों के लिए अर्थव्यस्था का संरक्षण शीर्ष पर रहा है। उत्पादन मूल्यवान बने हुए हैं लेकिन इससे जुड़े उत्पादक मूल्यहीन नजर आते हैं। ऐसा न होता तो इस लॉकडाउन की स्थिति में उसके अनाजों का मंडियों तक न पहुँचना उनके जीवन पर दोहरा संकट खड़ा न करता। किसान की उम्मीद उसकी फसल होती है। भारत में किसानों की स्थिति पहले से ही बदहाल है। खेत से बाजार तक का सफर इस पूर्णबंदी में उनके

माथे पर एक नया बोझ और उनकी जमीन को बंजर बनाने जैसा है, रणविजय सिंह ने लिखा है। "नाबार्ड की रिपोर्ट के आधार पर अगर हम किसानों की सालाना आय देखें तो ये करीब 1 लाख 7 हजार होती है। ये एप्पल कंपनी के एक फोन की कीमत के बराबर है। ऐसे में आप समझ सकते हैं कि किसान की सालाना आय कितनी कम है। इंडिया स्पेंड की रिपोर्ट में कहा गया कि पिछले पाँच सालों में किसानों की मासिक आय में खेती, उत्पादन, पशु धन से होने वाली आय का हिस्सा अनुपातिक रूप से कम हुआ है। इस वजह से किसान कर्ज लेने को मजबूर है।"[3]

विकास की इस गति में इन आंकड़ों से किसानों की दुर्बल स्थिति का पता चलता है। पूरे देश के लिए अन्न उगाने का दायित्व किसान के माथे होता है। साथ ही अपने परिवार समेत मवेशियों के पेट भरने की जिम्मेदारी भी उसके कंधे पर होती है। कृषकों का संघर्ष असीम है। लॉकडाउन के कारण पैदवार की कटाई में दिक्कतें आ रही है। कोरोना वायरस के कारण एक ओर सोशल डिस्टेंसिंग बनाए रखने की मजबूरी में खेतिहर मजदूरों की जगह हार्वेस्टिंग मशीन का प्रयोग कर कटाई परखर्च की बढ़त हो रही है, वहीं दूसरी तरफ उससे निकलने वाले भूसे की कमी से किसान पिस रहा है। कोरोना महामारी ने किसानों के खेत तक पैर पसार लिया है। मशीनों से फसलों की कटाई से किसानी पर आश्रित मजदूरों से उनकी दो जून की रोटी भी छिनती जा रही है। इसके अतिरिक्त साधारण जन-जीवन के व्यापक दायरे में किसान एवं मजदूरों के साथ-साथ विकलांग, भिक्षुक, किन्नर तथा वेश्याएँ भी शामिल हैं, जो देश-काल तथा समाज के उजले दायरे से बाहर हैं। लेकिन भूख के संघर्ष में वे भी शामिल हैं और कहीं न कहीं इस रेस में वे बहुत पीछे छूटते नजर आ रहे हैं।

नित-नूतन अविष्कार हमारे मन को चमत्कृत कर रहा है। आधारभूत आवश्यकताओं से ऊपर उठकर भी हमारी लालसाएँ थमने का नाम नहीं ले रही है। लेकिन हमारा अस्तित्व आधुनिकता की सीमा लाँघकर अत्याधुनिक होने के बावजूद भी कोरोना के समक्ष बौना नजर आ रहा है। निःसंदेह, इस संक्रमण से निपटने के लिए राज्य एवं केन्द्रीय स्तर पर नए-नए नीति एवं योजनाएँ बनाई जा रही हैं, जो सहज ही हम तक पहुँच रही है लेकिन इसकी तत्परता एवं प्रयोजनीयता भी चिंतन का विषय है। डॉ. रामगोपाल अग्रवाल का मानना है। "सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी का विकसित होना शासन में सुधार के लिए एक महत्वपूर्ण आधार बन चुका है तथा इसकी क्षमताओं का सम्पूर्ण उपयोग अवश्य ही करना चाहिए। हालांकि, यह मात्र उसी सीमा तक कार्य करेगा जहाँ तक प्रशासनिक व्यवस्था को उसका उपयोग किए जाने हेतु तैयार किया गया हो।" इन्हीं सीमाओं के कारण इन योजनाओं की ध ज्जियाँ भी उड़ रही है। चहुँओर 'आरोग्य सेतु' से सावधानी बरतने और 'सोशल डिस्टेंसिंग' के जरिये 'जियो और जीने दो' जैसे विचार बुलंद किये जा रहे हैं, वहीं ढुलमुल अर्थव्यवस्था को शराब के राजस्व से दुरुस्त बनाने का सरकारी फैसला गुड़-गोबर जैसा प्रतीत हो रहा है! विविधता के इस देश में साम्प्रदायिकता मानवता को शर्मसार कर रही है परशराब की कतारों में साम्प्रदायिकता के हथियार धर्म-जाति, लिंग-रंग- वर्ण-वर्ग आदि निरस्त नजर आ रहे हैं। रोजमर्रा के जीवन में इस विषाणु ने सांप्रदायिकता के संक्रमण को और बढ़ा दिया है। आज 'सब्जी बेचने वाले' से लेकर 'डेलिवरी बॉय' से उसकी जाति और धर्म पूछ कर सामान खरीदने का चलन शुरू हो गया है। समाज की ये रुग्ण तस्वीरें आधुनिक मानसिकता पर ग्रहण के समान है, जिसपर रोक नहीं लगी तो यह तस्वीरे ंऔर भी भयावह हो जायेंगी।

असल में, युग चाहे कोई भी हो, संघर्ष की घड़ी में हम ईश्वरीय शरण ही स्वीकार करते हैं और तब ऐसा महसूस होता है कि हमारी आधुनिक, वैज्ञानिक सोच तथा विचारधाराएँ भी सुप्त हो गई हैं। सुप्रीम पॉवर कहे जाने वाले देश के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप द्वारा वाइट हाउस में शांति पाठ करवाना इसका उत्तम उदाहरण माना जा सकता है। विश्व के तमाम देश अपने स्तर पर कोरोना को परास्त करने में लगे हैं। ऐसे में अमेरिका का यह कदम कहीं न कहीं ईश्वरीय सत्ता को वैज्ञानिक तर्क-वितर्क से अधिक विश्वसनीय एवं उच्च स्थान देना है। इस समस्यापूण ि परिस्थिति में भारत भी सारे वैज्ञानिक टोटको को अपना कर ध र्म के छावनियों को बंद रखते हुए इस पारम्परिक प्रार्थना पद्धति पर आस्था टिकाये है। आस्तिक मनोवृति के कारण साम्प्रदायिकता की संकीर्ण मानसिकता हमारे भीतर जड़ जमाये है, जो कभी 'जमाती' तो कभी 'पालघर' का मजहबी जामा पहने हमारे समक्ष मानवीय संवेदनाओं को घायल कर रही है। कोरोना जाति या ध

र्म देखकर नहीं आता फिर भी हम जाति-धर्म और सम्प्रदाय का चादर ओढ़े हुए हैं। देश में दलगत राजनीति के बुते साम्प्रदायिकता को बैशाखी बनाकर 'मनुष्य धर्म' के साथ खिलवाड़ किया जा रहा है। जे. पी. सिंह की उक्ति है। "धर्म को मानने में रूचि कम और जानने में रूचि अधिक हो गई है। धर्म का प्रयोग व्यक्तिगत शांति, दार्शनिक चिंतन या राजनीतिक लाभ के निमित्त भी किया जा रहा है।"[5] प्रश्न है कि क्या सारे के सारे शोध एवं अविष्कार इसीलिए हुए थे कि निष्कर्ष के रूप में हम इस कोरोना काल में उन्हीं सांप्रदायिक रूढ़ियों का दामन थामे, जिन्हें काटने के लिए हमने इतना प्रयत्न किया। आज के दौर में मनुष्य अनावश्यक संसाधनों से संपन्न है। अत्याधुनिकता का दंभ भरने वाले लोग अक्सर पचास वर्ष पीछे का हवाला देते हुए इसे आज से तुलना कर वर्तमान को ज्यादा प्रगतिशील मानते हैं। लेकिन हकीकत तो यह है कि आज से पचास वर्ष पूर्व अत्याधुनिकता का वह आधार नहीं था, जो वर्तमान में है। इसके बावजूद विज्ञान की आड़ में हम संप्रदाय के पाशे से मानवीयता को चोटिल कर रहे हैं। जबकि यह प्रमाणित सत्य है कि संसार का कोई भी धर्म 'अधर्म और शत्रुता' का पाठ नहीं पढ़ाता। लेकिन न जाने क्यों हम इस सार्वदेशिक महामारी में सांप्रदायिकता के खड़्ग से अमानवीय कृत्यों को करने से बाज नहीं आ रहे हैं!

इस कोरोना ने आम जन-जीवन पर दीर्घकालिक प्रभाव डाला है। कोरोना काल ने हमारे उत्तर कोरोना काल पर एक बड़ा-सा विराम लगा दिया है, जिस कारण वर्तमान और भविष्य गंभीर चुनौतियों से घिरी नजर आ रही है। इस भयावह संकट से उबरने के सन्दर्भ में युआल नोआह हरारी का कथन महत्वपूर्ण है। "प्रत्येक राष्ट्र के स्तर पर भी हमारे सामने विकल्प मौजूद हैं। सर्वधिकार संपन्न केंद्रीकृत निगरानी व्यवस्था (पूरी तरह सर्विलेंस व्यवस्था) और सामजिक एकजुटता वाले नागरिक सशक्तीकरण में से एक को चुनना है।"[6]

बेशक, उत्तर कोरोनाकाल में इन विकल्पों के चुनाव एवं परिणाम अवश्य नजर आएंगे। लेकिन तत्कालीन परिस्थितियों का तकाजा यह है कि आर्थिक मंदी के कारण न केवल भारत बल्कि विश्व के अन्यान्य विकसित देश भी इस क्षति से अछूते न रह पाएंगे। प्रथम विश्व युद्ध एवं द्वितीय विश्व युद्ध के पश्चात् जिस प्रकार विश्व आर्थिक मंदी और महंगाई का शिकार हुआ था बिल्कुल वही स्थिति पुनरुक्ति प्राप्त करने की दिशा में है। देश सामाजिक-आर्थिक-राजनैतिक-सांस्कृतिक और मनोवैज्ञानिक संकट के दौर से गुजर रहा है। विश्व की एक तिहाई जनता गृहबंदी होने को मजबूर है। देश की रीढ़ 'अर्थव्यवस्था' बुरी तरह से टूट रही है। फलस्वरूप लाखों लोगों के रोजगार पर बन आई है। उनके वर्तमान में भविष्य को लेकर एक गहरी अनिश्चितता है। बावजूद इसके सर्वोच्च प्राथमिकता आज जीवन जीना नहीं बल्कि 'जीवन बचाना' है। नोबेल करोना संक्रमण ने अर्थव्यवस्था की नॉवेल्टी को बुरी तरह झकझोर दिया है। संपत्ति की कीमत और शेयर बाजार में लगातार उतार-चढ़ाव अर्थव्यवस्था को नुकसान पहुँचा रहे हैं, ऐसे में जी.डी.पी. का ऋणात्मक हो जाना सामान्य जीवन को अप्रत्यक्षत: गहन रूप से प्रभावित करने की दिशा में है। जे. सी. चौधरी के अनुसार "वैश्विक अर्थव्यवस्था को 2020 में एक ट्रिलियन डॉलर का झटका लगेगा। यूएनसीटीएडी का मानना है कि भारत को कोरोना वायरस के प्रकोप के कारण 348 मिलियन डॉलर का घाटा होगा। दुनिया में लगभग 25 मिलियन नौकरियों पर गाज गिरेगी।"[7]

कोरोना काल के अंतिम सफर के बाद का समय आम जन-जीवन के लिए और अधिक कठिन और तनावपूर्ण होने वाला है क्योंकि कोरोना के अंतिम छोर से दुनिया की नयी तस्वीर संकुचित और स्वार्थपूर्ण नजर आएगी। हर देश अपनी गिरती आर्थिक अवस्था को सुदृढ़ करने की रफ्तार में आम जीवन के सीमित ढाँचे को कहीं न कहीं और सिकोड़ने का प्रयास करेगा, जिससे मजदूरों और मजलूमों का भविष्य और अधिक विषमताओं से घिरता नजर आएगा। इतना स्पष्ट है कि इस गम्भीर परिस्थिति के उत्तरकाल में सामान्य जन-जीवन की समान्यता पूरी तरह असामान्य बन सकती है। आश्चर्य की बात है कि आर्थिक दृष्टि से विश्व स्तर पर तेजी से उभरते भारतमें वर्ण-वर्ग और लिंग की विषमता का ग्राफ भी उतनी ही तीव्रता से विकासमान रह रहा है। लाखों-करोड़ों के लुभावन पैकेज भर से स्थितियाँ तब तक तंदरुस्त नहीं होंगी जब तक सुविधा को दरकिनार कर आवश्यकता के अनुरूप प्रयोग नहीं किये जायेंगे। अमूमन, लॉकडाउन के पश्चात रोजगार के क्षेत्र में सरकारी एवं प्राइवेट नौकरियों की किल्लत होगी।

मौलिक अधिकारों के तहत स्व रोजगार के विकल्प तो होंगे लेकिन निजी करण और पब्लिक प्राइवेट पार्टनरशिप के कारण महंगाई की मार पर नियंत्रण करना सहज न होगा। कोरोना ने 'शिक्षा, स्वास्थ्य तथा सुरक्षा' पर फिर से सोचने के लिए विवश किया है। ये विचारणीय मुद्दें उत्तर कोरोना काल के प्रबुद्ध भारत में सामरिक दृष्टि से एक नए संकल्प के साथ हमारे समक्ष उपस्थित होंगे। इस संबंध में डॉ. सौमित्र चक्रवर्ती (सी.ई.ओ., इनोवेटिव फाइनेंसियल एडवाइजर्स प्राइवेट लिमिटेड) का भी मानना है। "when we started our relief work we realized] it was nothing like we*ve ever witnessed before] the under privileged community was living under constant economic & social distress created pandemic- We knew the situation demanded collaborative action & ramping up our response was the only way forward]"[8] उपरोक्त कथन के परिपेक्ष्य में देखना यह है कि इन संकल्पों के साथ देश का हर वर्ग एकजुट होकर एक ही साँचे में ढलकर मानव मूल्यों और मानवाधिकारों की रक्षा करते हुए संप्रदाय विहीन होकर क्या सामान्य जन-जीवन को एक बेहतर भविष्य दे पायेगा? परिस्थिति चाहे जितनी भी विकट हो, चाहे हम घरों में दुबककर बाहरी परिवेश से कटकर खुद को क्वॉरन्टीन् रख रहे हैं, फिर भी मन के किसी कोने में उम्मीद की एक लहर हिलोरे मार रही है कि एक न एक दिन ये सफेद कोटधारी कोरोना के इस महाजंग में जीत हासिल कर सम्पूर्ण मानव जाति को रोगाणुमुक्त जीवन का वरदान देंगे।

संर्न्दभ सूची

1. के. एस. चलम, आर्थिक सुधार और सामाजिक अपवर्जन भारत में उपेक्षित समूहों पर उदारीकरण का प्रभाव, सेज पब्लिकेशन, नई दिल्ली, संस्करण। २०१७,पृ.१७२.

2. काबरा, कमल नयन, भूमंडलीकरण के भँवर में भारत, प्रकाशन संस्थान, नई दिल्ली, संस्करण - 2007,पृ114.

3.https://www.gaonconnection-com/desh/nearly-52percent-of-farmers-have&debt-in&india&loan-waiver-2019-lok-sabha-polls-42994

4. अग्रवाल, रामगोपाल, भारत २०५० : स्थायी समृद्धि की योजना, सेज पब्लिकेशन, नई दिल्ली, संस्करण ख्र २०१७, पृ. ८०.

५. सिंह, जे. पी., आधुनिक भारत में सामाजिक परिवर्तन: २१वीं सदी में भारत, पी.एच.आई. लर्निंग प्राइवेट लिमिटेड, दिल्ली, संस्करण ख्र २०१९, पृ. ४३५.

6.https://www.bbc.com/hindi/international-52243699

7. https://www.jagran.com/editorial/apnibaat&covid-19-will-change-the-face-ofworld-jagran-special-52243699-html(retrived on 02/07/2022

8.https://www.aninews.in/news/business/fiinovation-impacts-amillion-lives-amid-coronavirus-pandemic20200611180731(retrived on 20/08/2020)

◆◆◆

शोध संचयन
A Refereed Research Journal
And a complete Periodical dedicated to
Humanities & Social Science Research
ISSN 0975 1254 (PRINT)
ISSN 2249-9180 (ONLINE)
www.shodh.net
Vol. 11
Issue 1&2
15 July 2020

कोरोना काल में जड़ता के विरुद्ध सामर्थ्य और आत्मविश्वास की कविता 'प्रार्थना'

बीज शब्द :

कोरोना काल, जड़ता, ईश्वरीय आस्था, सामर्थ्य, आत्मविश्वास, संघर्ष

सर्वेश्वर दयाल सक्सेना समसामयिक जीवन-शैली में वास्तविकता के आकांक्षी कवि हैं। उनके कविता-संग्रह 'प्रार्थना' का मूल ध्येय जन-मानस में परंपरागत जड़ता के विरुद्ध सामर्थ्य और आत्मविश्वास का संचार करना है। किसी के सम्मुख नत न होकर संकल्पित इच्छाशक्ति के साथ जीवन संघर्ष को अंगीकार करने की क्षमता 'प्रार्थना' कविता का प्राण-तत्व है। कोरोना काल में क्वॉरन्टीन् होती व्यवस्था में यह कविता आधुनिक समाज में पारंपरिक निष्क्रियता के स्थान पर विज्ञानसम्मत, संघर्षवान तथा आत्मनिर्भर होने के लिए उद्वेलित करती है।

*****

नेहा साव
पी-एच.डी. (हिंदी विभाग)
काजी नजरुल विश्वविद्यालय
आसनसोल, (पश्चिम बंगाल)

कोरोना काल में जड़ता के विरुद्ध सामर्थ्य और आत्मविश्वास की कविता 'प्रार्थना'

सृजनात्मकता वह धर्म है जो अपने समाज और समय के बंधन से अतिक्रमण का सामर्थ्य रखते हुए हर युग के साथगतिमान और प्रासंगिक बने रहने का माद्दा रखती है। इस दृष्टि से नई कविता आंदोलन के दौर में अपने रचनाकर्म और उन्मुक्त विचारों के धार से समाज को माँजने वाले सर्वेश्वर दयाल सक्सेना का नाम अविस्मरणीय है। नई कविता में नया क्या है? इस प्रश्न का उत्तर ढूँढ़ने के लिए सर्वेश्वर दयाल सक्सेना की कविताओं की ओर मुखातिब होना होगा। इनकी कविताओं में मौजूद जीवन की सत्यता और उसके प्रति गहरी निष्ठा की स्वीकृति सबसे नवीन तथ्य है, जो जीवन को यथार्थ एवं विश्वास की निगाह से देखने की प्रेरणा देती है। हिंदी साहित्य के छठे दशक में कृतिमान हासिल करने वाले सर्वेश्वर जी आस्था और अंधविश्वास के अति सूक्ष्म पारदर्शी झिल्ली को भंग कर सामर्थ्य तथा आत्मविश्वास के कवि के रूप में प्रतिष्ठित हैं। वस्तुनिष्ठ समाज में राजनैतिक पाखंड, आस्थावादी मनोवृति, धार्मिक लगाव और व्यक्तित्व की अस्थिरता से जूझने वाले सामान्यजन-जीवन की पीड़ा का उत्कृष्ट रूप इनकी कविताओं में प्रतिबिंबित है। अपने कृतियों के दम पर सर्वकालिक जीवन जीने वाले सर्वेश्वर दयाल सक्सेना की चर्चित कविता-संग्रह 'प्रार्थना' का सौंदर्यबोध इस कारण प्रशंसनीय है कि उसमें जीवन के प्रति दृढ़ता और आस्था एक अदम्य साहस के साथ मुखरित हुई है।

कोरोना महामारी के इस नाजुक समय में मनुष्य शक्ति-सृजन-सामर्थ्य एवं आस्था-अंधविश्वास-अकर्मण्यता के पदचाप से गुजर रहा है। विरोधभास के इस अनिश्चित दौर में 'प्रार्थना' कविता-संग्रह व्यक्ति तथा समाज में आत्मक्षमता, प्रज्ञा, साहस, समर्थता एवं सकारात्मकता को जिलाए रखने की पक्षधर है। वर्तमान दौर में मानव और समाज के अंतस जगत में सृजनशीलता का ह्रास हो रहा है और इस सृजन धर्म को संरक्षित करने के क्रम में साहित्य में बहुत कुछ लिखा-पढ़ा जा चुका है, लेकिन 'प्रार्थना-1', 'प्रार्थना-2', 'प्रार्थना-3' और 'प्रार्थना-4'कविता में उपस्थित परम्परा का विरोध और ईश्वरीय कल्पना से मुक्ति की उत्कंठा रचनाकार के भौतिक एवं आध ुनिकतावादी दृष्टिकोण को व्यक्त करता है। मंजु त्रिपाठी का मंतव्य है कि। "सर्वेश्वर जी आधुनिक मनोजगत का विश्लेषण कर के उसे अपनी कविता में उतारने वाले कवि हैं, जिसके लिए अपेक्षित दृष्टिकोण का खुलापन भी उनमें पर्याप्त मात्रा में है। किसी भी पुराने तथ्य को एक नयी मौलिकता के साथ प्रस्तुत कर देना उनकी प्रमुख विशेषता है।"[1] दरअसल, यह कविता परम्परागत ईश्वरीय मिथकों को तोड़ने की एक वैसी ही काव्यात्मक कोशिश है, जैसी कोशिश नीत्से ने 'ईश्वर मर गया है' और कार्ल मार्क्स ने 'धर्म अफीम की तरह है' जैसी दार्शनिक घोषणाओं के साथ की थी। इस कविता में कवि ने न केवल मानवीय शक्ति और सामर्थ्य की महत्ता का निरूपण किया है, बल्कि अप्रत्यक्ष रूप से ईश्वर के अस्तित्व को चुनौती देते हुए बनी-बनाई परिपाटी को तोड़ने का साहस भी दिखाया है। तमाम तकनीकी विकास के बावजूद मनुष्य वैज्ञानिक सोच से अपने आप को जोड़े रख पाने में असक्षम हो रहा है, ऐसे समय में 'प्रार्थना'कविता का औचित्य बढ़ जाता है। डॉ. विजय शर्मा का मानना है।"[1] दर्द के साथ सर्वेश्वर में करुणा का भाव भी बड़ा गहरा है, इसी से कवि पीड़ा को कम करता है । 'प्रार्थना-1', 'प्रार्थना-2', 'प्रार्थना -3' और 'प्रार्थना -4' आदि कविताएँ इसका उदाहरण हैं। प्रार्थना एक कविता में कवि प्रभु से शक्ति नहीं माँगता वरन् जो है उसी में संतोष करता है।"[2] असल में, सर्वेश्वर जी ईश्वरीय सत्ता की असीमता को नकारते हैं, उनकी कविता संतोष नहीं बल्कि विद्रोह की परिभाषा गढ़ती हुई दिखाई पड़ती है।

"मेरे शौर्य और साहस को
करुणामय हों तो सराहिए,
चरणों पर गिरने से मिलता है
जो सुख, वह नहीं चाहिए।"[3] (प्रार्थना 4)

'प्रार्थना' कविता वास्तव में ईश्वर के विरुद्ध एक ऐसी चोट है, जो रूढ़ परम्पराओं को जमींदोज करती है। लीक को छोड़कर अपनी नयी राह गढ़ने की कवायद करती यह कविता एक ऐसी मिशाल है, जिसके आगे तमाम परम्परागत तुकबंध बेजां से प्रतीत होते हैं। बात सिर्फ ईश्वरीय मुखौटे को चुनौती देने की नहीं है, बल्कि सामंती आदर्शों के खिलाफत की भी है। केवल 'प्रार्थना' ही नहीं सक्सेना जी की अन्य महत्वपूर्ण कविताएँ यथा- 'भेड़िया', 'धीरे-धीरे', 'लीक पर वे चले' और 'काठ की घंटियाँ' का स्वर भी परंपरा-विरोधी है। वर्तमान मानसिकता की

अचेतनता ही जड़बद्ध रिवाजों को काँधे पर लादे रखने के लिए उत्तरदायी है। वे जब काठ की घंटियों को बजने के लिए प्रेरित करते हैं, तब वे मानसिक चेतना की जागृति का जोश फूँकते हैं। सदियों से बनी-बनाई रीतियों को सहते-सहते लोग काठ की तरह हो गये हैं, जिनमें न तो कोई स्वर बचा है और न ही चीत्कार, केवल यथास्थिति में बने रहने की गुंजाइश के मध्य कवि ने उठकर-डटकर आवाज बुलंद करने का मन्त्र दिया है। यह सत्य है कि जड़ताओं के विरुद्ध स्वर बुलंद हमेशा हुए लेकिन उनकी गति इतनी मंद रही कि वे किसी भी विस्तृत सामाजिक विस्फोट का कारण नहीं बन सकें। अतः कवि ने आन्दोलन की रफ्तार को तीव्रता देने का हुँकार भरा है। इसी तरह 'भेड़िया' कविता के द्वारा भी एक के बाद एक परम्परा के बनने और समय के साथ उसके जड़ होने का आख्यान है, जिसे तोड़ना ही कवि का उद्देश्य है।

वैज्ञानिक और तकनीकी विकास के सर्वोच्च शिखर को चूमने को बेताब मनुष्य वैज्ञानिक सोच की जमीन से धीरे-धीरे कटता जा रहा है। उसके हाथ भले ही अंतरिक्ष की ऊँचाइयों को छूकर अपनी सफलता के परचम को लहराने में कामयाब हो गए हों, लेकिन पैरों तले की वैज्ञानिक धरातल खिसकती जा रही है। जिस आदर्श और सोच के साथ विविध भौगोलिक खोज एवं वैज्ञानिक शोध की रूपरेखा तैयार की गई थी, वह समय के साथ धूमिल हो रही है और केवल इसका वाह्य उद्देश्य अर्थात् भौतिक उन्नति ही विज्ञान का आधार रह गया है। ऐसे में प्रार्थना 'कविता-संग्रह की स्मृति हो आना सहज ही संभव है। ईश्वर रूपी प्रतिमान से कुछ भी और न माँगने की जिद तथा संघर्ष रूपी सागर को अकेले केदम पार कर, किनारे तक पहुँचने की उत्कंठा कवि की विद्रोही चेतना का परिचायक है। संस्कृति के आरम्भ से लेकर वर्तमान तक आम जन-मानस की समस्त इन्द्रियाँ ईश्वर रूपी छवि को हमेशा अपने मन-मस्तिष्क में महत्वपूर्ण स्थान देती रही है। कोरोना के इस असंतुलित दौर में जन-सामान्य ईश्वरीय अराधना के नाम पर कर्तव्य विमुख बने हुए है। कभी-कभी तो ऐसा प्रतीत होता है कि ईश्वरीय आधार के बिना जीवन की एक भी गति असंभव है। यह सच है कि ईश्वर का भ्रम मन को शक्ति और संबल प्रदान करता है, लेकिन मात्र इसी वजह से सत्य से मुँह फेरना कहाँ तक न्यायोचित कहा जा सकता है? इस सन्दर्भ में' प्रार्थना' कविता-संग्रह सत्य को स्वीकार कर ईश्वरीय सत्ता को चुनौती देती है। इस संग्रह में कवि की मानसिकता मानवीय बुनियाद के धरातल पर समर्थता बोध की इमारत को खड़ा करना है, जिससे नए समाज की परिकल्पना संभव हो सके, जहाँ हर चुनौती के लिए मनुष्य आत्मबल एवं धैर्य का दामन थामे इतना समर्थ हो कि जीवन की तमाम बाधाओं को स्वयं लांघ सके। ऐसे में ईश्वर की काल्पनिकसत्ता के मोह में क्यों पड़ा जाए? डॉ. कपिल देव पाण्डेय का कथन है। "कवि सर्वेश्वर की विश्व-दृष्टि का तकाजा यह है कि सामाजिक-आर्थिक, राजनीतिक-सांस्कृतिक सभी द्वंद्वों और संघर्षों को समाहित कर। चाहे इसके लिए क्रांति ही क्यों न करनी पड़े। नए समाज का निर्माण करें, नए मनुष्य को प्रतिष्ठित करें और नए वैज्ञानिक-दृष्टि को विकसित करें; जिसकी इयत्ता में लोकोत्तर या धार्मिक भ्रम से अलग सहज-सरल, श्रमशील और ईमानदार मानवता की उच्च कोटि का विकास हो।"[4] कर्तव्यविमुखता के साथ सफलता के श्रृंग पर पहुँचने की लालसा भी ईश्वरीय कल्पना को जन्म देने में सहायक रही है। सक्सेना जी ने 'प्रार्थना' के माध्यम से इस मिथ को तोड़ने का प्रयास किया है कि जीवन सिर्फ सत्यम, शिवम् और सुन्दरम का योग है। उनका दृढ़विश्वास है कि जीवन और संसार में जो कुछ भी बुरा और असुंदर है वह भी जीवन का उतना ही महत्वपूर्ण अंग है, जितना कि अच्छा और सुन्दर। सबकी अपनी-अपनी बिसात और अपना-अपना वजूद है। अपनी निजी विशिष्टताओं को त्यागकर किसी अन्य के विशेषणों से स्वयं को अलंकृत करना हास्यास्पद ही माना जाएगा। प्रकृति कभी भी अपनी विशिष्टता से समझौता नहीं करती और अपनी कमियों-खामियों में अपनी पूर्णता का अनुभव करती है। कविता की पंक्तियाँ है।

"कब माँगी गंध तुमसे गंधहीन फूल ने
कब माँगी कोमलता तीखे खिंचे शूल ने"[5] (प्रार्थना १)

प्रकृति की निगाह में यदि गंधहीनता और तीखापन उसका अभिन्न अंग हैं तो मानव सन्दर्भ में उसकी पेकुलिअरिटी को हेय दृष्टि से देखने के पीछे कौन-सा तर्क है? अतः कहा जा सकता है कि सबको उसकी पूर्णता में सहज रूप से स्वीकार करना ही जीवन की पूर्णता है, इसलिए काल्पनिक ईश्वरीय प्रतिरूप से किसी और तत्व की याचना अप्राकृतिक है? जीवन संघर्षों के अनगिनत प्रहारों से मनुष्य अपने सकारात्मक इरादे, लगन तथा कर्म के प्रति विश्वास से विजय प्राप्त कर सकता है किन्तु अपने आतंरिक शक्ति और साहस को बिसार कर ईश्वर के प्रति नत होने में मनुष्य आज संघर्षों से मुक्ति का आभास करता

है। यदि मानव अपनी शक्ति और सामर्थ्य को ज्ञान के आलोक में परखना शुरू करे तो निश्चित ही मनुष्य-जाति द्वारा बनाए गए धर्म, रीति, नीति, जाति और ईश्वर के अस्तित्व पर प्रश्न चिह्न लग जाएगा। बौद्धिकता के दम पर प्रकृति के रहस्य को जानने वाला मनुष्य अपनी दुर्बलताओं से निजात पा सकता है किन्तु 'ईश्वरीय काल्पनिक भय' के कारण वह ईश्वर रूपी अव्यक्त सत्ता के प्रति नतमस्तक हो रहा है। इसी मोहांधता के प्रति कटाक्ष करते हुए सर्वेश्वर दयालसक्सेना जी शक्तिपूर्वक घोषणा करते हैं।

"तुमने जो दिया, दिया,
अब जो है, मेरा है।"[6] (प्रार्थना û)

सर्वेश्वर जी की कविताओं में एक अदम्य ऊर्जा और उत्साह है। वे किसी भी नकारात्मक तथ्य के मध्य सकारात्मक सोच को जीवंत करते हैं। कह सकते हैं कि जिसकी सोच में सकारात्मकता विद्यमान है, वह न तो किसी से डरेगा और न ही किसी के आगे झुकेगा। भारतीय संस्कृति ने ईश्वर के नाम पर एक ऐसे अकर्मण्य मानसिकता को जन्म दिया है, जो धर्म और संस्कृति के नाम पर याचक बने रहने में ही संतुष्ट होता है। डॉ. कपिल देव पाण्डेय की उक्ति है।" यहाँ ईश्वरीय आस्था नहीं है, बल्कि मात्र ईश्वराश्रित कर्महीनता है, जो मध्यकालीन ईश्वरीय मूल्य के विरुद्ध आधुनिक मानवीय मूल्य की स्थापना करता है।"[7] अन्य शब्दों में कहे तो हमने अपनी अकर्मण्यता और कायरता को धर्म, सहिष्णुता और विनम्रता का लबादा ओढ़ा रखा है। इसी लबादे के कारण आजमानव कोरोना महामारी मे अंध-बधिर बना बैठा है जिसके आड़ में समाज के ढोंगी अधर्म और असहिष्णु कृत्यों को करने से बाज नहीं आ रहे हैं। ऐसे प्रतिकूल परिस्थितियों में 'प्रार्थना' कविता इन तमाम जड़ताओं से चुनौती लेता हुआ वास्तविकता से साक्षात्कार करता है एवं जीवन में विद्यमान खीझ, निराशा, आक्रोश, घुटन आदि तमाम मन:स्थितियों को स्वीकार करता हुआ मृत्यु का वरण करना श्रेयस्कर मानता है।

"अपने साहस को भी मैं कंधों पर लादे
चलता जाऊँ जब तक तू यह तन पिघला दे
अमर सृजन तेरे हों
मृत्यु वरण मेरे हों"[8] (प्रार्थना २)

यह काव्य-कृति थोथे आदर्शों और कोरी कल्पनाओं को मूल्यहीन सिद्ध करती है। वर्तमान परिदृश्य में अगर कविता का मूल्यांकन किया जाए तो कवि की दूरदर्शिता स्पष्ट हो जाती है। देश के भविष्य के रूप में बच्चों और युवाओं की बात की जाती है। शिक्षा ज्ञान का आधार है और ज्ञान मन में समर्थताबोध लाती है। लेकिन दिन के शुरुआत में ही बच्चों को हाथ जोड़कर किसी काल्पनिक अदृश्य शक्ति के समक्ष नतमस्तक कर दिया जाता है, जहाँ वे तथाकथित दयानिधि की कृपा पर ही ज्ञान के लिए आश्रित हो जाते हैं। यह परम्परावादी विचार क्या स्वयं के प्रति अविश्वास पैदा नहीं करता, क्या यह 'प्रार्थना' भविष्य मां माँगने की प्रवृति का प्रसार नहीं करती और क्या यह याचना कर्मविमुखता का चिह्न नहीं है? ये तमाम प्रश्न इस कोरोना काल मंश प्रासंगिक बने हुए हैं। यह सच है कि जिन पेड़ों में फल लगते हैं उन्हीं पेड़ों की शाखाएँ झुकती हैं, लेकिन आज हम किस तरह के बच्चों और युवाओं की पौध को रोप रहे हैं, जिनमें फल लगने के साथ ही उनकी शाखाएँ ही नहीं, तने और जड़ भी धराशायी हो रहे हैं। स्कूलों, कॉलेजों में हम बच्चों को कैसी शिक्षा दे रहे हैं? कक्षा आरम्भ होने के पहले ही उन्हें प्रार्थना गीतों के माध्यम से याचक की भाँति भाग्यवादी होने की सीख दी जा रही है। इन जीर्ण होते मूल्यों को पुनर्परिभाषित करने की आवश्यकता है। इसलिए सर्वेश्वर जी दृढ़ता के साथ स्पष्ट कहते हैं कि हमें किसी भी ईश्वर की आवश्यकता नहीं हैं और न ही उसके शरण की।

"रोकूँगा पहाड़ गिरता
शरण नहीं माँगूँगा
नहीं-नहीं प्रभु तुमसे
शक्ति नहीं माँगूँगा।"[9] (प्रार्थना १)

इसके विपरीत आज सर्वत्र ही अपनी समस्याओं से भागने और ईश्वर की शरण की तलाश ही मूल उद्देश्य रह गया है। कुकुरमुत्ते की भाँति यत्र-तत्र-सर्वत्र उग आये आश्रम इसके उदाहरण हैं, जहाँ आध्यात्म, मोक्ष और ईश्वर जैसे बेतुके और निरर्थक शब्दों के मायाजाल में फँसकर तथाकथित बाबाओं द्वारा मतिभ्रम करने की प्रक्रिया अनवरत जारी है । अपनी सक्षमता और समर्थता के प्रति घोर अविश्वास ही इसका मूल कारण है। लेकिन इफ्फत असगर के शब्दों में कहें तो।" कवि अपने साहस को जीवित रखना चाहता है और अपनी असफलताओं, सीमाओं के साथ भरकर, बिखरकर अपनी आतंरिक शक्ति अर्जित करना चाहता है।"[10] इस तथ्य से जितना ज्यादा हो सके खुद को दूर रखने का मोह हम छोड़ नहीं पाते हैं और अंतत: वैज्ञानिक दृष्टि पर ही व्यंग्य करते हैं।

स्पष्ट है कि कवि की वैचारिक दृष्टि ही क्रांतिकारी और विद्रोही है। उनका विद्रोही चरित्र ही उनके समस्त कविताओं का केंद्र है। उनके लिए न तो पुरातनता महत्पूर्ण है और न ही नूतनता के नाम पर जड़ता। वे मूलतः साहस और विश्वास से लबरेज होकर समस्त जड़बद्धताओं का माखौल उड़ाते हैं। वे केवल व्यंग्य और आलोचना के लिए उपक्रम नहीं रचते, बल्कि अपने आदर्शों में भी गंभीर हैं, अन्यथा 'प्रार्थना' जैसी कविता का सृजन ही असंभव था। आज सम्पूर्ण विश्व कोरोना ग्रस्त है। ठप्प पड़ती जीवन की धारा में निराशा और आशा आँख-मिचौली खेल रही है। इस आशा-निराशा के आधार आस्था-अनास्था, आस्तिकता-नास्तिकता, और आडंबर-विज्ञान से पिरोए हुए हैं। विज्ञान अपनी पूरी बौद्धिकता के साथ तर्क और प्रमाण के आध ार पर कोरोना महामारी से जंग लड़ रही है, वहीं कदम-कदम पर कोरोना और मानव सामर्थ्य के शह और मात सेपरे ईश्वरीय आस्था के बिगुल बजाते लोग खड़े हैं। वे ईश्वरीय चमत्कार के लिए प्रतीक्षित हैं। ईश्वरीय भक्ति की डफली बजाते लोगों की मानसिकता में कोरोना संक्रमण के फैलते प्रकोप को ईश्वरीय आशीर्वाद से ही नष्ट किया जा सकता है। ऐसे में सर्वेश्वर जी की 'प्रार्थना' कविता-संग्रह जड़ आस्थावादी मनोवृति के मकड़जाल से मुक्ति का राग बिखेरती है। यह नास्तिकता नहीं सामर्थ्य और आत्मविश्वास के पहचान की कविता है। वर्तमान समाज अति अंध-भक्ति, चापलूसी, भ्रष्टाचार और ध ार्मिकता के फंदे में कैद है। मंदिर-मस्जिद जैसे पावन स्थलों में धर्म के नाम पर साम्प्रदायिक उन्मादों का जहर उगला जा रहा है। सामान्य जन-गण-मन अपने हालात परिवर्तन के लिए ईट-पत्थरों से बने दरों-दीवारों पर मत्था टेकने को बाध्य हैं, सबके पीछे सिर्फ एक वजह है।' ईश्वर के काल्पनिक अस्तित्व की परिकल्पना!'इतना अवश्य है कि अति बौद्धिकता के इस युग में धर्म-आस्था, ईश्वर-अल्लाह और मंदिर-मस्जिद आदि, मनुष्य की तार्किक, नैतिक एवं बौद्धिक विवेक को कसने का हथियार मात्र बन गया है, जहाँ लोग अपनी प्रज्ञा, क्षमता को तिरोहित कर संवेगात्मक धारा में बहना अपना परम कर्तव्य स्वीकार करते हैं। सर्वेश्वर दयाल सक्सेना ने इस आधार की आवश्यकता से इन्कार करके ईश्वरीय स्वरूप को महत्वहीन कर दिया है। अतः इस कोरोना काल में ईश्वर, प्रार्थना और आस्था की जड़ता से मुक्ति के रूप में इस कविता को याद किया जाना ज्यादा समीचीन होगा।

संदर्भ सूची :

1. के. एस. चलम, आर्थिक सुधार और सामाजिक अपवर्जन भारत में उपेक्षित समूहों पर उदारीकरण का प्रभाव, सेज पब्लिकेशन, नई दिल्ली, संस्करण। 2017, पृ.172.
2. काबरा, कमल नयन, भूमंडलीकरण के भँवर में भारत, प्रकाशन संस्थान, नई दिल्ली, संस्करण-2008, पृ194.
3. https://www.gaonconnection.com/desh/nearly-52-percent-of-farmers-have-debt-in-india-loan-waiver-2019-lok-sabha-polls-42994](retrivedon -23/08/2020)
4. अग्रवाल, रामगोपाल, भारत 2050 : स्थायी समृद्धि की योजना, सेज पब्लिकेशन, नई दिल्ली, संस्करण ख्र 2017, पृ. 80.
5. सिंह, जे. पी., आधुनिक भारत में सामाजिक परिवर्तनः 21वीं सदी में भारत, पी.एच.आई. लर्निंग प्राइवेट लिमिटेड, दिल्ली, संस्करण। 2019, पृ. 435.
6. https://www.bbc.com/hindiinternational52243699(retrived on 02/07/2020)
7. https://www.jagran.com/editorial/apnibaat-covid-19-will-changethe-face-of-world-jagran-special-20220856-html(retrived on -20/07/2020)
8. https://www.aninews.in/news/business/fiinovation-impacts-million-lives-amid-coronavirus-pandemic20200611180731(retrived on-(20/08/2020)
9. त्रिपाठी, मंजु, सर्वेश्वर दयाल सक्सेना और उनका काव्य-संसार, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, संस्करण 2001, पृ. 59.
10. शर्मा, विजय, सर्वेश्वर दयाल सक्सेना का काव्य, सौरभ प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण 2007, पृ. 45.
11. सक्सेना, सर्वेश्वर दयाल, कविताएँ ख्र दो, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण 1978, पृ. 133.
12. पाण्डेय, कपिल देव, सर्वेश्वर की कविता, प्रिय साहित्य सदन, नई दिल्ली, संस्करण 2010, पृ. 190-191.
13. सक्सेना, सर्वेश्वर दयाल, कविताएँ ख्र दो, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण 1978, पृ. 130.
14. वही, पृ. 133.
15. पाण्डेय, कपिल देव, सर्वेश्वर की कविता, प्रिय साहित्य सदन, नई दिल्ली, संस्करण 2010, पृ. 47.
16. सक्सेना, सर्वेश्वर दयाल, कविताएँ ख्र दो, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण 1978, पृ. 131.
17. वही, पृ. 130.
18. असगर, इफ्फत, सर्वेश्वर दयाल सक्सेना के काव्य में सामाजिक चेतना, नेहा प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण 2004, पृ. 97.

◆◆◆

शोध संचयन
A Refereed Research Journal
And a complete Periodical dedicated to
Humanities & Social Science Research
ISSN 0975 1254 (PRINT)
ISSN 2249-9180 (ONLINE)
www.shodh.net
Vol. 11
Issue 1&2
15 July 2020

Study on Measures to Revitalize State Financial Corporations

Keywords:

Re-financing, Sanction, Disbursement, Monitoring

The SFC Act of 1951 was enacted resulting in establishment of 18 SFCs in the country. These Development Financial Institutions had large social mandate as per the prerogative of the State Government. They are the oldest financial institutions. Over the years, they are in poor financial health with question being raised on their efficiency and functioning. Thus, their role needs to be aligned with operational and decision making freedom, technocrat leadership and with diversification of product/service portfolio. This analytical paper focuses on solutions to be adopted by SFCs for improvement in their performances so that they turn into viable State-Level Developmental Financial Institutions. Annual reports of few SFCs and RBI reports have been referred for the analytical review.

*****

Dr. Neena Tandon
Associate Professor
Faculty of Commerce
P.P.N. (P.G.) College, Kanpur

Study on Measures to Revitalize State Financial Corporations

The necessity for the establishment of SFCs in different had been recognised because it was not possible for institution to satisfy the capital needs of the smaller concerns sprouting all over the country, thus, SFC Act, 1951 was passed. At present there are 18 SFCs operating in the county out of which 17 are constituted as Corporation with the exception of Tamil Nadu Financial Corporation which was registered under Companies Act 1956. Thus, SFCs basically acted as prime engine for growth for MSME sector.

Analysis of Problems and its Suggestions:- The growth of the activities of the SFCs had been show and haulting, because of responsible behaviour of SFCS irksome adherence to red-tapism and indifferent attitude of government and apex bodies towards performance and development of SFCs yet they are rendering services to MSMEs. To improve the performance and functioning of State Financial Corporations the following suggestions have been given:

SFCs may be allowed either to open or operate a "Bank" like IDBI, ICICI or to function is a Commercial Bank to mobilize low cost funds under different types of deposits and to compete with the commercial banks and other financial intermediaries. It should be a National Level Public Sector Bank. This would help the SFCs to utilize their surplus manpower, which can conveniently be shifted to the banking subsidiaries.

The SFCs suffer from inadequacy of share capital. The SFC Act may suitably be amended creating sufficient scope for Government of India and international agencies for infusing of funds for recapitalisation of SFCs.

The Corporations should tap the capital market to the fullest possible, to meet the fund requirement, such finds should be raised through bonds and securities.

SFCs may be allowed to float bond with State Government guarantee by entering into the market in a suitable trance and in such a suitable time depending on favourable market conditions SFCS may be allowed to raise fund at a lower com from international channels too. It must not depend on traditional avenues of resources, the channels of which are dicing up. To cope up with the working capital finance, first hand arrangements should be insisted and a tie-up for working capital finance should be ensured simultaneously with the sanction of term loan to industrial units. If the SFCs are allowed to function as a commercial bank, the paucity of working capital can be solved.

SIDBI does not take any risk on credit given to SFCs as they provide loans to second grade entrepreneurs. It is suggested that the government should take steps to evolve some mechanism so that some relaxation is provided to SFCs in repayment of borrowings/refinance from SIDBI in tune with SFCS, non-recovery of these loans i.e. NPAs.

These development banks should also involve themselves assist the SFCs in timely realization of their loans and for this a joint task force can be more objective and of much use. To enhance the marketability of SFCs/la order to fill up the credit gaps, in case of direct financing by SIDBI, certain amount/limit may be earmarked for SFCs to finance. SFCs have to become more than a single product provider.

The Government of India/RBI should consider allocating substantial share of tax free bonds to SIDBI to ease their fund position, the proceed, of which should be exclusively used to provide refinance support to SFCs at a lower rate of interest.

To limit down NPAs, indiscriminate sanctioning of loans and large-scale concentration of loans in few industries should be avoided. The strategies for containment of NPA's should be to provide security related need based finance to potential/viable sick units for early revival. Separate guidelines for SFCs in the matter of income recognition, provisioning and assets classification should be made considering the default position and realizable market value of available assets. Two broad category of asset classification such as standard and bad & doubtful should be made and reviewed periodically to be realistic.

SFCs should make/evolve some system to identify potential Non-Performing Assets in the lines of commercial banks so that timely corrective/protective measures may be taken up, to reduce the spiral increase of NPAs. Discipline, loyalty and responsibility should be evolved and imposed on first line and second line manager to control the finance to non viable and infeasible projects, which ultimately leads to NPA.

The assets of assisted units should be insured against comprehensive risk by collecting the premium from the borrowers. To improve the poor recovery mechanism, SFCs should cleanse their internal house-keeping and launch a vigorous drive for the recovery of overdue/NPAs. A team of senior executives should monitor the progress of the recovery campaign of NPAs. The staffs so appointed should establish direct contact with the defaulters and explore the possibilities of recovering the dues. Better coordination amongst appraisal, follow up and recovery functions in

SFCs should be evolved, which calls for strong Management Information System. The ABC analysis should be adopted for better results. Special incentive should be given to employees to achieve higher recovery targets.

Emphasis on more recycling of own funds and to improve customers service in terms of cutting down the time consuming lengthy procedure involved in sanction/legal documentation and speedy disbursement of loans, may enable the SFCs to face competition more aggressively. The Government should take necessary steps to provide coverage under Debt Recovery Tribunal to SFCs so that speedy disposal of loans may be ensured thus improving the position of recovery/ reduction of NPAs etc.

SIDBI should issue uniform and comprehensive guidelines to SFCs for resorting to the system of "one time settlement" to compromise dues from individual borrowers. Mechanism should be improved to dispose of the assets acquired under Section 29 of the SFC Act 1951 at the earliest so as to get the best deal out of it. To overcome the delays in recoveries, the state government may set up special courts for disposal of applications made under Section 32 of the SFC Act.

To overcome the problem of project cost over run the procedure for granting loans needs to be stream lined, so that the interval between the receipt of an application and actual date of sanction and disbursement of loans be reduced to the minimum. The lending policy may be adjusted in the light of experience gained regarding the financial position of various industries operating in the respective regions. The Corporation's duty does not cease with provision of credit, but it should continue to exercise and constantly watch over the progress of customer enterprises for enabling them to proceed on right lines.

The procedure of disbursement of loans for various projects should vary with their sizes.

The Corporations should coordinate with the government agencies e.g. pollution board, electricity board etc. for speedy compliance of their formalities If the project is delayed from the borrowers end, close follow-up and in-depth/

step to step monitoring of implementation of project should be made by the SFCs.

SIDBIs criteria of re-finance do not favour SFCs and it is biased. SIDBI should not discriminate between refinance allowed to Commercial Banks and SFCs. SIDBI should raise the limit of refinance to 70% and 100% refinance for working capital. The interest charged or refinance should be the same as for commercial banks to provide level playing field to SFCs.

SFCs need to be nurtured and nourished by a single parent, i.e., single national level organization to make them vibrant and operationally viable, to infuse more accountability in the working. It should discharge its duties towards SFCs honestly and sincerely SIDBI should be assigned with dual role, one operational and other one supervisory. Under the operational role SFCs should function within the operational ambit set by SIDBI, i.e., there should be limit set for SIDBI to provide finance below which SIDBI should not finance and only SFCs to finance below that limit. In its supervisory role, SIDBI should make SFCs function within the policy framework set by it.

Discretionary powers coupled with accountability could speed up credit delivery process. It is the need of the hour to impose accountability on the top-level management; the functionaries and authorities for sanctions and disbursal of loans and advances, Effective surveillance and punishment is not in operation. There should be a committee comprising of professionals and technocrats, which from time to time monitor and observe the appraisals made by the Corporation officials. External influence should be considered while taking a decision. It should be imposed to increase the sense of accountability and responsibility amongst the officials of the Corporations so that contaminated loan portfolio, alarming proportion of non-performing assets and huge amount of assets in the bad and doubtful category could be controlled more effectively.

State Government/SIDBI should guide SFCs in functioning, administration, sanctioning and disbursal of loans. Political interference of the state government in day to day functioning should be stopped rather it should be on professional basis supported with more technical guidance and assistance from SIDBI, i.e. SIDBI should act as guide for SFCS for day to day functioning. SIDBI should take all possible steps to strengthen administrative mechanism and improve internal monitoring, so as to infuse more professionalism and increase more operational interference.

There is lack of close watch from SIDBI on credit appraisal, a system should be developed to re-examine/ re-appraise certain randomly selected cases which are not refinanced by the apex bodies. SIDBI should not only watch but involve themselves in credit appraisal in order to have more effective credit worthy appraisal.

To have a direct administrative control of the Apex Body/ RBI over the functioning of SFCs instead of bureaucratic administrative control of the State Government, a professional person from SIDBI should be appointed as managing director of SFCs and chairman may be appointed from state government. SIDBI officials comprising one from finance and other from technical side should conduct from time to time internal audit of certain randomly selected cases.

Autonomy should be given to the board of SFCs to take decisions regarding resource mobilization policy and Human Resource Development matters, so that the functioning of SFCs could be more smooth and speedy.

Employees of SFCs may be allowed to purchase the shares of their concerned SFCs to boost up their involvement and belongingness towards the organization. Employees should

be represented in the board of SFCs so as to inculcate a sense of involvement/participation in the management of the affairs of the Corporation.

The employees are appointed by the Government so there is dearth of specialized technical staff resulting in inefficiency in implementing policies. SIDBI should prescribe guidelines in the matter of pay, perks and promotion for the employees of SFCs to be considered finally by the board of SFCs, i.e., a comprehensive system should be introduced for better HRD management. To develop a strong second line management based on professional re-orientation, possibility may be explored to accord priorities for selecting senior officers available in SFCs for filling up important posts of Director.

They lack corporate culture, the staff should be exposed to structural programmes to give their best. Such programmes should be two-tier, one for senior executives and the other for junior and middle level officers. The training module will differ, should be interpreted in nature with a mix of both, skill up-gradation and human resource development. It should cope with the new business environment i.e., merchant banking, lease and hire purchase and capital market services, industrial policy and development in science and technology, loan appraisal, recovery monitoring and loan accounting with necessary funding by SIDBI.

In future, persons having a degree in management with specialization in Engineering, Law, Economics, Statistics, Management Accounting, Finance, Costing etc. should be recruited for managerial position. Basic infrastructure should be developed in the backward regions, and programmes of entrepreneurship awareness should be campaigned in the backward regions so that people could be motivated to set-up more and more new industries and in turn credit extension in those areas could be ensured.

For development of backward areas certain amount of deposits should be lent by commercial banks to SFCs at the rate 2% below their prime lending rate for infrastructure development of those areas by SFCs.

To co-ordinate between various agencies, SFCs should improve relations with the entrepreneurs, scheduled banks, cooperative banks, other financial institutions, and various agencies involved, which create hindrance to industries in particular, then, these SFCs shall be more effective. Such co-ordination would help, both SFCs and banks in numerous ways for e.g.- appraisal through common form, joint financing, disbursal of instalments, and recovery of instalments and watch over the affairs of the borrowers. The Commercial Bank's branch, act as an agent of the SFCs at a place where SFCs branch does not exist. SFCs must also coordinate with agencies like trade development authorities for market survey and feasibility reports to enable the beneficiaries to sell in foreign market to earn valuable foreign exchange by exporting the projects.

The Corporation should make endeavour to publicize their new policies/schemes regarding finance through various awareness promotional programmes, so that small industrial enterprises get the benefit.

There is a need for well thought-out range policy of branch expansions. It should not expand branches, and recruit non-professional staff without considering their impact on operations.

All branches should function as profit centres, besides looking at the objective of providing the services with better geographical spread. The follow-up format of the SFCs should be revised and it should also contain current operational parameter as well as the specific problems of the industry, so that cases they may

be taken care of, while sanctioning new cases and symptoms of sickness may be identified.

The SFCs should on a regular conduct Entrepreneur Programmes and give turn the industrialisation of the state. SFCs should continue playing the role of credit/service provider to MSMEs. The role of SFCs should not be confined to the traditional business to MSMEs. Its role need to be broad based to cater to the needs of large-scale sector with judicious mix of advantage with no cap on the limit of accommodation.

Conclusion:-

Presently, Indian financial system is passing through second generation reforms which lay emphasis on I.T. intervention, institutional up-gradation, strengthening internal system, attention in prudential norms, capital adequacy, containment of NPAs, functional autonomy and systematic improvements, aimed at developing effective credit delivery system, i.e., redressing of business processes. The future business canvas of SFCs is likely to be affected by stiff competition offered by commercial banks and sister institutions viz., SIDCs, etc. In the wake of WTO provisions coming into play, MSMEs will have to face new challenge. In this context, SFCs role and their institutional and resource raising capabilities will have to be upgraded accordingly.

As a long-term strategy, after re-structuring and re-capitalization as suggested by the Gupta Committee, even when SFCs attain better health, it is important that they should be self-sufficient and sustainable in the long run. Development Financial Institutions are moving towards gradually converting themselves into Universal Banks, i.e., those banks that offer a wide range of financial services, beyond commercial banking, investment banking such as Insurance.

References:-

1. Reports and website of UPFC
2. Reports and website of MSFC
3. Reports and website of Maharashtra SFC
4. Bhadu SK and Singh M, 2010. Role of State Financial Corporation in Small Scale Industry (July 7, 2010). KEGEES Journal of Social Science, Vol. 2, No. 2, July 2010. Available at SSRN: http://ssrn.com/abstract=1859145
5. Gokaran S, 2004. Future of Development Finance. Economic & Political Weekly, Vol. 39, No. 26.
6. Hudon M, 2008. Norms and values of various microfinance institutions. International Journal of Social Economics. Vol. 35, No. ½, pp. 35-48.
7. Kar B, Shyama Prasad S, Revisiting the Role of State Financial Corporations for Entrepreneurship Finance in India: 'Phoenix'or a 'Swan Song'? Volume 15, Issue 1, January-March, 2015, pp-32-39

◆◆◆

शोध संचयन
A Refereed Research Journal
And a complete Periodical dedicated to
Humanities & Social Science Research
ISSN 0975 1254 (PRINT)
ISSN 2249-9180 (ONLINE)
www.shodh.net
Vol. 11
Issue 1&2
15 July 2020

महाकवि भवभूति की काव्यकृतियों में सामाजिकौचित्य

बीज शब्द :

भवभूति, संस्कृत साहित्य, भारतीय समाज, औचित्य

साहित्य और समाज एस दूसरे के पूरक हैं। साहित्य यदि समाज से सामग्री प्राप्त करता है तो समाज भी साहित्य से दिशा प्राप्त करता है। वास्तविक साहित्य तो वही है जो समाज को प्रतिबिम्बत करे तथा भावी समाज के निर्माण के लिए आधाार प्रदान करे। यह तभी सम्भव है, जब साहित्य में सामाजिकौचित्य का पालन किया जाये। इस अधयाय में भवभूति के रूपक में समाजगत-औचित्य पर प्रकाश डाला गया है। भवभूति स्वयं समाज का एक अंग थे अतः निश्चित रूप से वह भी समाज से प्रभावित थे इसीलिए उन्होंने समाज को अपने साहित्य का एक अभिन्न अंग बनाया।

*****

डा. वन्दना कुमारी
एसो०प्रो०-संस्कृत
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय
हमीरपुर (उ0प्र0)

महाकवि भवभूति की काव्यकृतियों में सामाजिक औचित्य

महावीरचरित : **देषौचित्य** स्थानादि के अनुरूप वर्णन को देशौचित्य कहते हैं। देश का औचित्य काव्यार्थ को अत्यधिाक हृदय-स्पृहणीय बना देता है, जैसे सज्जनों का व्यवहार परिचय बढ़ाने वाला होता है।[1] महावीरचरित के प्रथम अंग का आरम्भ भगवान् कालप्रियनाथ के यात्रेत्सव प्रसंग से होता है[2], जिससे उनकी भगवान शिव के प्रति अनन्य भक्ति अभिव्यक्त होती है। इसी प्रकार ताड़का नामक राक्षसी के वर्णन में सीता, उर्मिला आदि कन्यायों के मन में भय उत्पन्न कर एक अपूर्व औचित्य को प्रकाशित किया है क्योंकि कुलीन जाति की कन्यायें इस प्रकार अंतड़ियों में पिरोई कपालमाला, हड्डियों का कंकण आदि गहनों के शब्द से आकाष को शब्दायमान करने वाली, पीत तथा वान्त रक्तकर्दम से, भयानक स्तनों से भीषणकाय, दर्प से घूमने वाली ताड़का नामक राक्षसी[3] को देखकर भयग्रस्त हो ही जायेगी, अत: यहाँ देशौचित्य है।

जटायु आगमन के वर्णन में कवि ने उसी के अनुरूप शब्दावली का प्रयोग कर मानो इस प्रसंग को सहृदय पाठकों के समक्ष मूर्तिमान कर दिया यथा-पंखों को समेटने और फैलाने के कारण दिशायें कभी दिखाई देती हैं और कभी लुप्त हो जाती है। मेघ चूर्ण-चूर्ण होकर पाले की स्थिति में पहुँच जाता है। जिसकी बिजली स्थायिनी बन गयी है। सामने वाले वाली शिलायें चकनाचूर हो गयी है। इस प्रकार जटायु के पंख चल रहे हैं, जिससे उनका आना अनुमत हो रहा है।[4] इस प्रसंग से जटायु का अलौकिक उत्कर्ष ध्वनित हो रहा है और यह भी ज्ञात होता है कि यह बलवान राक्षसराज रावण से लोहा ले सकता है।

सप्तम अंक में विभीषण राम से कहते है कि ये हिमालय के पवित्र शिखर हैं, जिसके चरणों को सुर-सिन्धु धो रही है और जो कर्पूरखण्ड की तरह स्वच्छ हैं और जहाँ पुरातन मूर्जवल्कल सुशोभित हो रहे हैं। यहाँ अध्यात्म विद्या के प्रेमी तत्त्वज्ञान से अज्ञान को दूर करने वाले ब्रह्मज्ञानियों के स्वभाव में सुन्दर तेज बिखर रहे हैं।[5] यहाँ विभीषण के इस कथन से हिमालय की नैसर्गिक दिव्यता प्रकट हो रही है।

भवभूति ने प्रस्रवण पर्वत की शोभा का वर्णन इतना सुन्दर किया है जैसे वह पर्वत यहाँ के निवासी हो यथा-यही है प्रस्रवण नाम वनमधयस्थ पर्वत, जिसकी कन्दरायें सटे हुए वृक्ष की निरन्तर छाया से हरी वनावली से युक्त गोदावरी द्वारा मुखरित की जाती हैं, और जिस पर सर्वदा बरसते हुए मेघ श्यामल छाया फैलाते हैं। यही तो पंचवटी है।[6] इस वर्णन से प्रस्रवण पर्वत का दृश्य सहृदय के समक्ष के समक्ष उपस्थित हो जाता है अत: यह वर्णन दशौचित्यपूर्ण है। इसी प्रकार लंका दहन[7] में वर्णित शब्दावली से ऐसा प्रतीत हो रहा है कि वास्तव में लंका दहन हमारे समक्ष उपस्थित हो गया है, अत: यहाँ भी देशौचित्य है।

कुलौचित्यः- महाकवि ने महावीरचरित में नायक-नायिका तथा अन्य पात्रें की चारित्रिक उदात्तता के लिए क्षेमेन्द्रोक्त कुलौचित्य का सम्यक् सन्निवेष किया है। कुल के वर्णन में उसकी उत्कृष्टता आदि का वर्णन ही कुलौचित्य है। आचार्य क्षेमेन्द्र के अनुसार जैसे सद्वंश का सम्बन्धी मनुष्यों की बहुत उत्कृष्टता का कारण है और लोकप्रिय होता है, उसी तरह कुलमूलक औचित्य का वर्णन काव्य की उत्कृष्टता का कारण और सहृदयहृदयाभिमत होता है।[8]

महावीर के नायक-नायिका राम तथा सीता यशस्वी तथा प्रख्यात कलोत्पन्न हैं तथा सूर्यवंशी हैं, जो अपनी उदात्तता, प्रजावत्सलता और प्रतिज्ञापालन आदि औदात्त गुणों से युक्त होने के कारण इतिहास प्रसिद्ध है।

भवभूति ने सर्वप्रथम अपने कुल की अतिशय उदात्तता का वर्णन कर स्पष्ट कर दिया है कि वे किसी सामान्य कुल के नहीं है। उनका कुल अत्युच्च है। उनके पूर्वज कृष्णयुजर्वेद की तैत्तिरीय शाखा को पढ़ाने वाले थे उनका गोत्र कश्यप है।

उनके पूर्वज चरणगुरु थे अर्थात् वेद की शाखाओं को पढ़ने वाले वेदज्ञों के गुरु थे वे पंक्तिपावन ब्राम्हण थे। परम्परानुसार पंक्तिपावन सर्वश्रेष्ठ ब्राह्मण माने जाते हैं। जो ब्राह्मण, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद में पारंगत होते हैं, उन्हें ही पंक्तिपावन ब्राह्मण कहा जाता है। वे पंचाग्निहोत्र करते हैं। वे चन्द्रायण आदि व्रतों को करने वाले थे, वे सोमपीथी थे। उनकी प्रसिद्धि उदुम्बर के रूप में थी। वे वेदज्ञ, वेद प्रवचनकर्त्ता तथा ब्रह्मवेत्ता थे।[9] वे शब्दरूपी तत्व के ज्ञानार्थ निष्काम भाव से ष्टाडंग वेद के अध्ययन में प्रेम रखते थे। इष्ट तथा पूर्व के लिए धान सड्.ग्रह करते थे, वंश-परम्परा के लिए जीवन धारण करते थे।[10]

अत: अपने कुल के अनुरूप भी भवभूति भी पद वाक्य प्रमाण यज्ञ थे।[11]

यहाँ भवभूति ने अपने कुल की महत्ता का प्रतिपाद किया है। इससे काव्य की गम्भीरता और गूढ़ता का भान होता है क्योंकि काव्य का कवि उत्स होता है। उसमें कवि के व्यक्तित्व का प्रतिबिम्ब होता है, अत: काव्य की उत्कृष्टता को बढ़ाने के कारण यह वर्णन औचित्यपूर्ण है। इसी प्रकार वशिष्ठ इक्ष्वाकुवंशीय राजाओं के गुरु है। सप्तऋषियों में उनकी गणना की जाती है। वे

ब्रह्मर्षि की संज्ञा से अलंकृत थे। वे धर्मगुरु तथा शिक्षा गुरु थे। शतानन्द अंगिरा ऋषि के पुत्र थे जनक के पुरोहित थे। सदाचारी गृहस्थ और याज्ञवल्क्य के शिष्य थे। वे राजपुरोहित के धर्म को पूर्णत: जानते थे और निभाते थे। इसलिए उनकी प्रशंसा वशिष्ठ भी करते है -

न तस्य राष्ठट्रम् व्यथते न रिष्ठयति न जीर्यति
त्वं विद्वान् ब्राम्हणों यस्य राष्ठट्रगोप: पुरोहित:।।[12]

विश्वामित्र की गणना सप्तऋषियों में की जाती है। वह दशरथ और जनक दोनों के ही पूज्य थे।[13] वे राम के गुरु थे।

रावण महर्षि विशर्वा का पुत्र था। वह वेदज्ञानी था, पराक्रमी था तथा लंका का अधिपति था। इस प्रकार महावीरचरित में पात्रें का चयन उनकी चारित्रिक विशेषताओं के अनुरूप होने के साथ-साथ उनके उच्च कुल की भी अभिव्यंजना प्रस्तुत करता है अत: यहाँ कुलौचित्य है।

व्रतौचित्य:- महावीरचरित में व्रतौचित्य का सम्यक् वर्णन हुआ है। काव्य में पात्र, देश, काल आदि के अनुसार ही व्रताचरण का आधान किया जाता है। आचार्य क्षेमेन्द्र के अनुसार प्रतापाचरण के वर्णन से काव्यार्थ प्रशंसनीय होता हुआ सहृदयों के मन को अपूर्व आहलाद प्रदान करता है।[14]

महावीर प्रसाद के प्रथम अंक में ही सूत्रधार विश्वामित्र द्वारा होने वाले यज्ञ की सूचना देता है कि विश्वामित्र यज्ञ करेंगे।[15] इससे यह ध्वनित होता है कि वह राम के पराक्रम को अस्त्रों से बढ़ाने और संसार की भलाई के निधान सीता को मिलाने के लिए रावणवंश विनाश के उपयुक्त पात्र राम को धनुष और अनुज सहित अपने आश्रम ले आये हैं क्योंकि यज्ञ सम्पादन से राक्षस विघ्न अवश्य उत्पन्न करेंगे अत: उनके विनाश हेतु राम और लक्ष्मण पहले से ही आश्रम में उपस्थित हैं। अत: यज्ञानुष्ठान रूपी व्रत का पालन होन से व्रतौचित्य है।

अन्यत्र जब विश्वामित्र राम को ताड़का के वध का आदेश देते हैं तो पहले भगवन्! स्त्री खल्वियम्।[16] यह कहकर राम उसके वध में हिचकिचाते हैं परन्तु पुन: विश्वामित्र के ''त्वरस्व वत्स! थ्कं न पश्यसि ब्राम्हणजनस्य संघातमृत्युमग्रत:''[17] कहने पर गुरु के आदेशानुसार ताउका का वध कर देते हैं। यहाँ राम के द्वारा गुरु आज्ञापालन रूपी व्रत का पालन करने से व्रतौचित्य है।

पुन: दिव्यास्त्र प्रदान अवसर पर राम की उक्ति कि यही मेरी प्रार्थना है कि ये दिव्यास्त्रसम्प्रदाय हमें लक्ष्मण के साथ प्राप्त हो।[18] यहाँ राम की अनुजप्रेमरूपी व्रत की अभिव्यंजना होने से व्रतौचित्य है।

उत्तररामचरित : सामाजिकौचित्य देशौचित्य:-

उत्तररामचरित के द्वितीय अंक में गोदावरी नदी के तट का वर्णन औचित्यपूर्ण है। वासन्ती कहती है कि गोदावरी क तटवर्ती प्रदेश में हरे-भरे जंगल हैं। उनमें विशाल तथा छायादार वृक्ष हैं। उन वृक्षों की छाया में अनेक पशु-पक्षी एकत्रित हो गये हैं। गर्मी की प्रचण्डता को वृक्षों की छाया नहीं रोक पा रही है। अत: पक्षीगण अपने पंजों से जमीन को खोद रहे हैं। ऐसा करने से वे भूमि के गर्म ऊपरी सतह को हटाकर नीचे से ठण्डी सतह को अपने बैठने के लिए अनावृत कर रहे हैं। वृक्षों के ऊपर रेंगने वाले कीड़े-मकोड़े भी गर्मी का अनुभव कर वृक्षों की छाल के भीतर घुस रहे हैं। वृक्षों के ऊपर कबूतर और जंगली मुर्गे उष्णता से व्याकुल होकर कुल-कुल शब्द नाद कर रहे हैं। जंगली हाथी भी भीषण गर्मी से व्याकुल हैं। गर्मी के कारण उनकी खोपड़ी खुजलाने लगी है। अत: वह वृक्षों से अपनी खोपड़ी रगड़ रहे हैं। हाथी की इस क्रिया से वृक्ष हिलने लगे हैं तथा हिलने से उनके पुष्प झड़ने लगे हैं। ये पुष्प झड़कर गोदावरी के प्रवाह में गिर रहे हैं। गोदावरी में वृक्षों के आपतन को देखकर ऐसा प्रतीत हो रहा है मानो तटाश्रित वृक्ष फूल चढ़ाकर गोदावरी की मधयाहन पूजा कर रहे हैं।[19] यहाँ महाकवि भवभूति ने गोदावरी के तटवर्ती वन प्रदेश का जैसा वर्णन किया है, उससे प्रतीत होता है कि भवभूति प्रतिदिन इस वन प्रदेश में आते थे और यहाँ के वृक्षों तथा जीव-जन्तुओं का अध्ययन करते थे। इस वर्णन में गोदावरी के तटवर्ती वन-प्रदेश का चित्र सामने उपस्थित हो जाता है। अत: यह वर्णन देशौचित्यपूर्ण है।

उत्तररामचरित के इसी अंग में दण्डकारण्य का वर्णन औचित्यपूर्ण है। राम वनवास काल में दृष्टट दण्डकारण्य को देखकर अभिज्ञानपूर्वक कहते हैं कि यह दण्डकारण्य ही है। इसका एक भाग कोमल तथा हरित घास-वृक्षलतादि से नीलवर्ण का दिखाई दे रहा है। स्थान-स्थान पर पर्वतीय झरणों की झंकार सुनाई पड़ रही है, जिससे सभी दिशाएँ झंकृत हो रही हैं। इस वन में ऋषियों के अनेक आश्रम हैं। यहाँ अनेक नदियाँ प्रवाहित हो रही हैं। इसमें अनेक गड्ढ़े हैं। यह प्रदेश अनेक दुर्गम मार्गों से युक्त है।[20]

महाकवि भवभूति ने यहाँ दण्डकारण्य के कोमल तथा कठोर उभयविधा दृश्यों को चित्रित किया है। एक तरु वन प्रदेश कोमल तथा उद्दीपक है वहीं दूसरी तरु कठोर तथा भयावह। परन्तु संस्कृत साहित्य की परम्परा में अधिकांश कवियों ने प्रकृति के कोमल तथा उद्दीपक पक्षों को उभारा है। यहाँ महाकवि

भवभूति ने प्रकृति के उभयविधा पक्षों के चित्रण में जो संतुलन किया है, वह काव्य के सौष्ठव को बढ़ाता है। अतः यह वर्णन देशौचित्यपूर्ण है।

उत्तररामचरित के चतुर्थ अंक में वाल्मीकि आश्रम का वर्णन देशौचित्य की दृष्टि से विचारणीय है। आश्रम में बहुत संख्या में अतिथिगण आये हुए हैं। उनके भोजनार्थ चावल तथा बेरमिश्रित पालक की सब्जी बनाई गई है। चावल को अत्यधिक स्वादिष्ट बनाने के लिए उसमें घी डाला गया है। घी मिश्रित चावल तथा बेर मिश्रित पालक के शाक की भीनी-भीनी सुगन्ध चारों ओर फैली हुई है। चावल से निकला हुआ मांड वहीं जमीन पर बह रहा है। आश्रम में पालित सद्यः प्रसूता मृगी अपनी मृग के साथ मांडपान कर रही है। यहाँ मृग अपनी मृगी के प्रति विशेष प्रीति का प्रदर्शन कर रहा है। पहले मृगी मांडपान करती है, फिर उसके पीने से बचे मांड को मृग पीता है। यह मृगी के प्रति मृग के अतिशय प्रेम का सूचक है। इस प्रकार अतिथियों, आतिथ्य सामग्रियों और आतिथ्यकार्य में लगे हुए लोगों तथा पशु-पक्षियों के कारण वाल्मीकि आश्रम रमणीय लग रहा है।[21] यहाँ वाल्मीकि आश्रम का आश्रमौचित्य वर्णन होने से देशौचित्य है।

षष्ठ अंक में लव-चन्द्रकेतु युद्धभूमि के वर्णन में[22] भी देशौचित्य स्पष्टतया परिलक्षित हो रहा है।

कुलौचित्य

महावीरचरित के समान उत्तररामचरित के नायक-नायिका भी राम तथा सीता सूर्यवंशी है तथा उच्चकुलोत्पन्न हैं।

उत्तररामचरित में प्रथम अंक के प्रकृत श्लोक[23] में सविता को दशरथ के वंश के प्रवर्तक बताकर महाकवि भवभूति ने इस कुल की महनीयता की प्रतीति कराई है, अतः यहाँ कुलौचित्य है।

महर्षि वशिष्ठ के सन्देश [24] में यज्ञ ही सूर्यवंशियों का सर्वोत्तम धान है, यह कहकर भवभूति ने सूर्यवंश के राजाओं की प्रजावात्सल्यता तथा एतदर्थ सर्वस्वत्यागप्रियता की अभिव्यक्ति करायी है। इससे इस कुल की यशस्वी परम्परा की सहृदयाव्हादकारी अभिव्यंजना होती है अतः यहाँ कुलौचित्य है।

अन्यत्र राम-लक्ष्मण वनगमन के अवसर पर ये कहा जाना कि राम ने वानप्रस्थ व्रत को बाल्यावस्था में धाारण कर लिया था।[25] इस कथन में इक्ष्वाकुवंशीय राजाओं के व्यवस्था में वानप्रस्थाश्रम जाने को जो वर्णन किया गया है, उससे इस कुल की महत्ता अभिव्यंजित होती है। भगवान् मनु ने भी कहा है कि ''व्यवस्था में पौत्र के दर्शन होने पर वानप्रस्थ लेना चाहिए।''[26]

इस प्रकार हम देखते हैं कि यह देशकाल मालती और माधाव मे प्रणय अंकुरित करने में अत्यधिक सहायता करते हैं। मालती और माधाव का यह प्रणयांकुर शनैः शनैः विकसित होने लगता है।

तृतीय अंक में अपने पिंजड़े को तोड़कर भयानक सिंह निकल पड़ता है। वह मदयन्तिका की ओर झपटता है।[27] वीर युवक मकरन्द साहस के साथ अपनी तलवार लेकर सिंह से लड़ता है और मदयन्तिका के प्राणों की रक्षा करता है।[28] सिंह के भीषण प्रहार से वह मूर्च्छित हो जाता है।[29]

इस प्रसंग के द्वारा कवि मकरन्द के शौर्य तथा उत्साह को तो अभिव्यक्त करता ही है, साथ ही मदयन्तिका भी इस वीरकार्य से प्रभावित होती है और उसके प्रति अनुरक्त हो जाती है।[30] पंचम अंक में कपालकुण्डला और अघोरघण्ट देवी कराला के मंदिर में मालती की बलि देना चाहते हैं परन्तु इसी समय माधव वहाँ पहुँच जाता है और वह मालती की प्राणरक्षा करता है। इसी योजना के द्वारा कवि मालती और माधव के प्रेम को और प्रगाढ़ कर देता है। अतः यहाँ देशकाल के अनुरूप होने से मालती-माधाव का पुनः मिलन होता है। इसी प्रकार श्मशान वर्णन[31] तथा रात्रिवर्णन[32] आदि स्थलों पर भी कथा के अनुरूप देशौचित्य का वर्णन प्रशंसनीय है।

कुलौचित्यः- प्रकरण के नायक तथा नायिका दोनों ही उच्चकुलोत्पन्न है। माधव विदर्भराज के लब्ध प्रतिष्ठित मंत्री देवरात का पुत्र है। मालती भी पद्मवतेश्वर के मंत्री भूरिवसु की पुत्री है। अतः भवभूति ने उच्चकुलोत्पन्न नायक-नायिका का अपने प्रकरण में वर्णन किया है। अतः यहाँ कुलौचित्य है।

व्रतौचित्यः- कामन्दकी की आज्ञा से बुद्धरक्षिता,सौदामिनी,मकरन्द तथा अवलोकिता, मालती-माधव मिलन में सहायता प्रदान करते हैं। जिससे उनकी आज्ञापालन व्रतौचित्य परिलक्षित होता है। वस्तुतः इन्हीं के प्रयासों के फलस्वरूप मालती और माधव का मिलन होता है ओर अनेक उतार-चढ़ाव के बाद इनका मिलन प्रकरण को सुखान्त बना देता है अतः आज्ञा पालन रूपी व्रतौचित्य के कारण ही प्रकरण का सुखान्त हुआ अतः यहाँ व्रतौचित्य कितना उचित है।

सन्दर्भ :-

1 देशौचित्येन काव्यार्थः ससंवादेन शोभते।
परं परिचयाश्चांसी व्यवहारः सतामिव।। औ0वि0च0का0 27

2 भगवतःकालप्रियनाथस्य यात्रयामार्यमिश्राः समादिष्ठान्ति।
म0च0,पृ0 2

3 अन्त्रप्रोतबृहत्कपालनलकक्रूरक्कणत्कङ्.कण-
प्रायप्रेङ्.खतभूरिभूषणखैराघोषयन्त्यम्बरम्।
पीतोच्छदितरक्तकर्दमघनप्राग्भारघोरोल्लल-

द्वयालोलस्तनभारभरैववपुदर्पो)तं धावति।। म0च01/35

4 पर्यायात्क्षणदृष्टनष्टककुभ: संवर्तविस्तारयो-
र्नीहारीकृतमेघमोचितधुत व्यक्तस्नुरद्विद्युत:।
आरात्कीर्णकणात्कणीकृतगुरुग्रावोच्चश्रेणय:
श्यैनेयस्य बृहत्पतत्श्रधुतय: प्रख्यापयन्त्यागमम्।। वही 5/1

5 एते ते सुरसिन्धुधौतद्दृषद: कर्पूरखण्डोज्ज्वला:
पदा जर्जरभूर्जवल्कलभूतो गौरीगुरो: पावना:।
तत्त्वालोकनिरस्तमोहमसामधयात्मविद्याजुषां
यत्र ब्रह्मविदां निसर्गमधुरं जागत्ति सौम्यं मह:।। म0च07/27

6 अयमविरलानोकहनिवहनिरन्तरस्निगधानीलपरिसराण्य-
परिण)गोदावरीमुखकन्दर:सततमभिष्यन्दमानमेधामेदुरित-
नीलिमा जनस्थानेमधयगोगिरि: प्रस्रवणो नाम। इयं च पंचवटी। वही पृ0203

7 भ्रान्ती: सप्ताधिकानां प्रविदधादरुणैरर्चिषां चक्रवालै-
र्द्राग्वीराणामलक्ष्यप्रसूतिरतिसमुत्तप्तरौक्मालयेषु।
अर्धाष्लुष्टापसर्पद्रजनितचरभटोद्गाठकल्पान्त शंक
लंका प्रौढो हुताशा: सह परिदलितोब्धोस्विकूटेन लीढे।। वही 6/4

8 कुलोपचितमौचित्यं विष्ठोषोत्कर्षकारणम्।
काव्यस्य पुरुषस्येव प्रियं प्राय: सचेतसाम्।। औ0वि0च0का0 28

9(क) तत्र केचिट् तैत्तिरीया: काश्यपाश्चरणगुरव: पंक्तिपावना: म0मा0पृ5
पंचाग्नयो धृतव्रता: सोमपीथिन उटुम्बरनामानो ब्रह्मवादिन:प्रतिवसन्ति। म0मा0,पृ010
(ख)

10 ते श्रोत्रियास्तत्वविनिश्चययाय भूरि श्रुतं शाश्वतमाद्रियन्ते। वही0, पृ0 6
इष्टाय पूर्ताय च कर्मणेर्थान् दारानपत्याय तपोर्थमायु:।।

11 (क) पदवाक्यप्रमाणज्ञो भवभूति:। उ0च0,पृ0 4
(ख)
(ग)

12 म0च0 3/16

13 जनकानां रघूणां च सम्बन्धा: कस्य न प्रिय:। वही 1/57
यत्र दाता गृहीता च कल्याणप्रतिभूर्भवान्।।

14 काव्यार्थ: साधुवादार्ह: सद्व्रतौचित्यगौरवात्। औ0वि0च0का0 29
सन्तोष्ठानिर्भरं भक्तया करोति जनमानसम्।।

15 सतु भगवान् दीक्षिष्यमाण: कौशिको विश्वामित्र

16 म0च0, पृ0 34

17 वही, पृ0 36

18 एष प्रव्होस्मि भगवन्नेष विज्ञापना च न:।
दिव्यास्त्रसम्प्रदायोयं लक्ष्मणेन सहास्तु मे।। वही 1/47

19 कण्डूलद्विपगण्डपिण्डकष्ठाणोत्कम्पेन संपातिभि-
र्धर्मस्रंसितबन्धानै: स्वकुसुमैरर्चन्ति गोदावरीम्।
छायापस्किरमाणविष्किरमुखत्याकृष्टकीत्वच: उ0रा0 2/9
कूजत्क्लान्तकपोतकुक्कुटकुला: कूले कुलायद्रुमा:।।

20 स्निग्धाश्यामा: क्वचिदपरतो भीषणाभोगरूक्षा:
स्थाने-स्थाने मुखरककुभो झांकृतैर्निर्झराणाम्।
एते तीर्थाश्रमगिरिसरित्गर्तकान्तारमिश्रा:
स्ंदृश्यन्ते परिचितभुवो दण्डकारण्यभागा:।। उ0रा0 2/14

21 नीवरौदनमण्डमुष्ठणमधारं सद्य: प्रसूताप्रिया-
पीतादभ्यधिकं तपोवनमृग: पर्याप्तमाचामति।
गन्धोन स्नुरतामनागनुसृतो भक्तस्य सर्पिष्मत:
कर्कन्धूफलमिश्रशाकपचनामोद: परिस्तीर्यते।। उ0रा0 4/1

22(क) झणझ्झणितकंकणक्वणितकिंकिणीकं धनु-
र्धवनद्गुरुगुणाटनीकृतकरालकोलाहलम्।
वितव्य किरतो: शरानविरतरूरच्चूडयो-
र्विचित्रमाभिवर्तते भुवनभीममायोधानम्।। वही, 6/1

(ख) विजृम्भितं च दिव्यस्य मंगलाय द्वयोरपि।
स्तनयित्नोरिवामंद्रं दुन्दुभेर्दुन्दुभायितम्।। वही, 6/2

(ग) अवदग्धाकर्बुरतिकेतुचामरैरपयातमेव हि विमानमण्डलै:।
दहति धवजांशुकपटावलीमिमां नवकिंशुकद्युतिसविभ्रम: शिखी।। वही,6/4

23 येषां कुलेषु सविता च गुरुर्वयं च। उ0रा0, 1/9

24 तस्माद्यशो यत्परम् धानं व:।। वही, 1/11

25 पुत्रसंक्रान्तलक्ष्मीकैर्यद्वृद्वेक्ष्वाकुभिर्धृतम्।
धुतं बाल्ये तदार्येण पुण्यमारण्यकव्रतम्।। वही, 1/22

26 गृहस्थस्तु यदा पश्येद् बलीपलतमात्मन:।
अपत्यस्यैव चापत्यं तदारण्यं समाश्रयेत्।। मनुस्मृति 1,3

27 बुद्धरक्षिता:-परित्रयधवम्। एषा न: प्रियसख्यमात्यनन्दनस्य भगिनी
मदयन्तिकैतेन दुष्टटशार्दूलेन हतविद्रावितपरजिनाभिभूते। मा0मा0 ,पृ0 67

28 दृढ़ च पशुनाहतो व्यसुरसौ कृतश्चामुना।। वही, 3/18

29 कथं व्याकलनखरप्रहारनि:सृतरक्तनिवह: क्षितितलविष्ठाक्तखंगलतावष्टम्भनश्चल: वही, पृ0 70
संभ्रान्तमदयन्तिकावलम्बितस्ताम्यतिवत्सो मकरन्द:।।

30 करालायतनाच्चायमुच्चरन्करुणधवनि:।
विभाव्यते ननु स्थानमनिष्ठटानां तदीदृशाम्।। वही, 5/21

31 पर्यन्तप्रतिरोधिमेदुरधानस्त्यानं चिताज्योतिष्ठा-
मौज्जवल्यं परभागत: प्रकटयत्याभोगभीमं तम:।
संसक्ताकुलकेलय: किकिलाकोलाहलै: संमदा-
दुत्ताला: कटपूतनाप्रभृतय: सारांविणं कुर्वते।। म0मा0, 5/11

32 व्योम्नस्तापिच्छगुच्छावलिभिरिव तमोवल्लरीभिर्व्रियन्ते
पर्यन्ता: प्रान्तवृत्या पयसि वसुमती नूतनेमज्जतीव।
वात्यासंवेगविष्वग्विततवलयितस्कीतधाम्याप्रकाशं
प्रारम्भेपि क्रियामा तरुणयति निजं नीलिमानं वनेषु।। वही 5/6

◆◆◆

शोध संचयन
A Refereed Research Journal
And a complete Periodical dedicated to
Humanities & Social Science Research
ISSN 0975 1254 (PRINT)
ISSN 2249-9180 (ONLINE)
www.shodh.net
Vol. 11
Issue1&2
15 July 2020

Portrayal of women on OTT video streaming platform in India

Key words :

OTT, Webseries, Over the Top, Sexual objectification,Online Streaming, Online Content, Erotica, Women portrayal

Renowned Canadian communication theoristMarshall Mc Luhan Said- "Medium is the Message". With the advent of the 21st Century, there has been exponential Technological advancement and because of this, the mode of media consumption has witnessed a drastic change. This shift from traditional media has resulted in a new form of content being desired by the audience, that is not constrained by the limitation of censorship.

*****

Sagar Kanojia
Research Scholar,
Bhaskar institute of mass communication and journalism,
Bundelkhand university, Jhansi.
Dr. Kaushal Tripathi
Assistant professor
Research scholar
Bhaskar instiute of journalism and mass communication
Bundelkhand University, Jhanshi

Portrayal of women on OTT video streaming platform in India

Media has always been a vanguard for the behaviour of society. The pattern for media consumption is transforming with the advancement in communication technologies in India. The majority of the population has achieved ease of access to the internet. This progression has allowed web-based streaming websites to gain exponential growth in viewership. The phenomenal growth has also resulted in the evolution of the content consumption behaviour of the audience. With this boom in demands, more and more content is uploaded every day on these Over-the-Top (OTT) platforms.

In India, there are more than 40 international and regional OTT platforms. The audience prefers these platforms because they remain unshackled from the chains of censorship and provide the audience exclusive control over the content they wish to watch. The creative freedom that thrives over these platforms allows the creator to implore realism in the content. These freedoms sometimes do not conform to the Indian societal norms. The portrayal of women over these OTT is one of the primary concerns of hostility for these OTT platforms in India. In this research, we will attempt an analysis of the portrayal of women through previously available literature on various sources to expand the cumulative understanding of the condition of the female gender over these OTT platforms.

Renowned Canadian communication theorist Marshall Mc Luhan Said- "Medium is the Message". With the advent of the 21st Century, there has been exponential Technological advancement and because of this, the mode of media consumption has witnessed a drastic change. This shift from traditional media has resulted in a new form of content being desired by the audience, that is not constrained by the limitation of censorship.

In this new age, the world has converged into a global village, and so has the media. This globalisation is because of the perpetual growth of the internet. This medium allows its users to experience versatility in the consumption of media while further allowing them greater independence of choice from an extensive collection of content.

In this technologically advanced age, Over-the-top platforms are the most commonly used medium for the consumption of media. OTT is a media platform that provides service directly to the viewers via the internet, thus bypassing the traditional controllers of the Media service like cable, broadcast, satellite television platforms. The direct access of media by the viewers using the internet allows these platforms an exemption from the censorship laws of the land, thus allowing the creator to practice greater creative freedom for the portrayal of their character. Moreover, because of the on-demand control over the content, these platforms have witnessed an exponential growth in their viewership.

In the context of Indian society, these creative freedoms have been a bone of contention among the traditional society and the Creators of OTT platforms. The portrayal of women over these streaming platforms is among the primary reason for this conflict. In the mainstream media, the portrayal of women has always been limited around the Patriarchal mindset, where in most cases, the female actors are subsumed in the shadows of their male counterparts. They are either encapsulated in an ideal role subjugated to the male actors, or they are portrayed as eye candy for the audience.

The GEC(General Entertainment Channel) broadcaster have operated under

the Censorship law of India, thus building a stereotype pertaining the women in the media industry, and in most cases, their role has only been limited to either a Cultured mother, Wife, daughter or a vixen, courtesan or a vamp. These Stereotypes have seeped into the minds of the Indian audience. But, ever since the onset of the Streaming platforms, the portrayal of women has witnessed a rejuvenation from the old stereotypic role. The content over these platforms- unfettered from the scissors of censor board have started exploring the genre of women Centric content where the women are not merely an object of gratification but a strong-willed protagonist, unwilling to give up. Although, this privilege of uncensored content Creation has also paved the way for intensely violent, nude, vulgar, Sexual, and profane portrayal of women.

OTT platforms has been a boon for the Women Centric content at a global level, being applauded by the viewer for the unique and innovative role for these characters, but, the Indian Creators have withheld themselves in a single mould of portraying the Women in their content either as a victim or Iconoclastic lady of the new generation. If this trend continues, it is hard not to say that women in OTT platforms will soon be restrained in these roles, thus breaking one stereotype and falling into another.

Portrayal Of Women In Ott Platform:- *Since the beginning of the media industry, the women working in front of the camera have been castigated as a supporting cast for the male lead. In a male-dominated industry, women were objectified as eye candy or a character who becomes the motivation for the male lead to finding riches. Besides this, a stereotype has been established in the media industry that Female actors should be fair, slim, tall, and unwary about exposing themselves on the screen. Furthermore, the women were portrayed as an inferior gender who silently accepts the atrocities that befall upon them, and the Confident hero of the film can only save them. Such portrayal of women in media has created a grim image of the female gender in society.*

Throughout this period, only a handful of movies and TV Serials in comparison cast females in the leading role, even then those portrayals were tamed by the patriarchal mindset of the society, and the women were somehow made to seek recognition from the male gender, be it in the form of their father, husband, brother or some other male in the life.

The traditional media also created an unsavoury image about female characters that are firebrand and voluptuous.The audience in general lauds the sexist and vulgar depiction of women on screen, yet, they despise those similar characters in real life. Empirically, these mediocre portrayals of women have also set a vibe in society that sees women as second-class citizens. Apart from all these aspects, the traditional media has also transformed women into objects of sexual gratification while showcasing the bosom and the buttocks, particularly in song and music videos.

OTT platforms have emerged in recent times with a new outlook towards the portrayal of women. The content served over these platforms is much more unprejudiced towards the typical portrayal of women. OTT Streaming platforms like Netflix, amazon prime, Disney Hotstar, Hulu,Voot, and many regional streaming platforms like Hoichoi have begun focusing on the women-centric role. Strangers things, Orange is the new Black, She, Aarya, Skater Girl, Queen's gambit, et cetera are some of the content streamed over these platforms that have portrayed women in ¬a unique and refreshing roles.

The adrift from stereotypical portrayals

of women in GEC channels is bringing in a dynamic and latent change in the perception of the rudimentary image of women in society. Unstrained from censor's, the OTT platforms have allowed the creator to explore Tabooed issues like homosexuality, child abuse, nudity, sex, marital rape, Causal sex, Gender biasedness, etc. more potently and vividly. For women-centric content, OTT could be considered as a boon as these streaming platforms transcend the typical physical aspects of the female character in media, i.e. complexion and physique. Because of such complex subjects selected up by these Streaming platforms, the need for talent in the portrayal of the role becomes utmost necessary, thus providing opportunities for new female actors in the industry.

Despite the creative upliftment, OTT platforms have provided to the Creators, In the Indian context, it seems that the Creators have somehow begun re-castigating the women in the OTT platform as victims taking a stand or vindictive character out for revenge or privileged women having fun while being confused about their Life choice. This trend is evident from a show across all streaming platforms like Bulbbul, Guilty, She, Mirzapur 2, Masaba Masaba, Fabulous Lives of Bollywood Wives, Aarya, and Bhaag Beanie Bhaag, Delhi crime, Bombay Begums, and many more. The Inability of creators to explore innovative roles for female Protagonists has steered the contents towards portraying intense violence, nudity, sexuality, and profanity from and toward women to garner larger viewership.

It is evident that ever since the trend of exploiting the privilege of uncensored content publishing for portraying women through sexuality, profanity, abusive language, violence has boomed, the demand for bringing OTT platforms under censorship law has also gained momentum. In the current scenario, it seems like women are out of one box into another.

Portrayal of women in web series:- *Web series are the most popular segment of all OTT platforms, and binge-watching series has become a fad among OTT users. The wide popularity of web series is because of the elongated dose of intense suspense, thrill, and drama. Although, male protagonists dominate OTT web series, the proportion of women-centric content with strong narratives, portraying women as ambitious, strong, and self-dependent has increased. This diversion from the typical representation of women in Traditional media has been lauded by both the male and female viewers of the streaming platforms, and according to data, the proportion of male viewers is much higher for women-centric content in comparison to females.*

The shift in women's character in the Indian context from typical feminine roles a GEC channels, has received massive appreciation from the audience, but in the last few years, these revolutionary changes in the portrayal of women have become stagnant. Either Rape, Murder, or child abuse, or privileged women's take on life has become a convenient backstory to explain women's mental or physical health issues to make the character interesting and edgy for the viewers.

Consider the characters: Pooja Batra's Character Rani Irani in 'Bombay Begums', who has been sexually abused at workplace in her journey to success. Kiara Advani's character Nanki in 'Guilty' was sexually abused as a child and suffered from those scars in her adulthood. AaditiPohankar's character of Bhumika Pardeshi in 'She', a female cop who has been abused as a child, goes undercover as a prostitute and battles against society's expectations of morally appropriate behaviour. In'Mirzapur', Beena's

character, was raped by her father-in- law. In the non-fictional genre, series like 'Delhi Crimes' explores the Nirbhya Incident, the most gruesome crime against women in recent times, or 'What the Love', where a participant shared that as a child, she has been sexually abused.

In conjunction with the sexual abuse narrative, there is a spectrum of privileged women who fun, confident, independent, Educated, good-looking, and working. They drink, curse, party, and have casual sex. Consider the ladies of 'four more, please' or Swara Bhaskar's role in 'Bhagg Beanie Bhagg' battling with the societal dogma's to achieve her life goal. The anthology series 'Feel the Ishq' revolves around the gambit of female characters struggling for love, and in 'little thing' Mithila Parker plays Kavya, who has to encounter many difficulties in a living relationship.

All these portrayals of women have generalised women either in the ambit of Furiousity or insecurity, while adding the edginess via using sex, profanity, violence, and Substance abuse. In a platform that allows extreme independence to bring out huge diversity, the horizon of the content theme must be broadened. In the Indian context, content creators must push the envelope and expand the possibilities of female-driven narratives instead of succumbing to the temptation of compartmentalising women into easy to 'manage' boxes.

The Portrayal Of Women In Film:- *Films are the most communicative format of media communication. It submerges its audience in the emotion portrayed by the narrative. It can make them laugh, Cry, feel disgusted, or angry. The manner in which film can communicate with its audience has always been a matter of great curiosity for filmmakers. Hence,the message delivered by these films becomes exceptionally crucial in shaping the narrative about any subject.*

According to a report By Geena Davis Insititutereleased at 'Global Symposium on Gender in Media' the gender ratio in the Indian Film industry one woman in every 6.12 men. Subsequently, another 2017 reports unveiled that the screen time received by women was only 31.5% compared to 68.5% for men. These statics can be considered as the ultimate scenario of women in conventional Indian films. (Davis, 2017)

Before the onset of OTT, Conventional media had built up an image about women which portrayedthem as allying mothers, cheerful sisters, obedient wives, or a vamp. According to Srijita Sarkar in her thesis'An analysis of Hindi women-centric films in India.':- In Hindi films, the image of an ideal Indian woman is always glorified as the woman who accepts injustice and violence dispensed out towards her by men and society. Hence, violence against women has always been one of the standard elements of Hindi films.' This analysis of the portrayal of women is grave and ominous.(Sarkar, 2012)

According to Sowmya Nandakumar in 'The stereotypical portrayal of women in commercial Indian Cinema':-'Indian commercial cinema works as a vicious circle in which both audience and filmmakers prefer the films which fall under the socio-cultural framework and power structure of the Indian society'. This is an extremely crucial statementas it dictates the threshold for the portrayal of women in films. (Nandakumar, 2011)

These perceptions of women have slowly but gradually seeped into the minds of the general audience. Despite being an integral part of every film story, this perception has curtailed women's creative talent and has also downgraded their image, constraining them

only to be eye candy for the audience.

With the advancement in the reach of OTT, the stigma towards women's portrayal in the film has seen a receding trend. The streaming platform has allowed women's characters to be portrayed in new light, backed by innovative storylines dedicated to exploring diverse scenarios in women's lives. These unique women-centric story has begun shaping a new perception towards women, that is not fixated to the stereotypes of the traditional film industry. This progress has provided ample opportunity for women in the film industry to rather showcase their talent than merely being eye-candy for the audience.

Almost every prime streaming platform like Netflix, Amazon Prime, Hotstar, Voot, Zee5 has ventured into diverse genres based on strong female-fronted narratives. This is evident through original films like 'Mimi', where a surrogate mother is left with an unclaimed child.'HassenaDilruba', which tells a story of an urban woman struggling with her arranged marriage. 'Kanaa' portraying the character of an aspiring girl who wants to be a cricketer. TriptiDimri's character in Bulbbul narrates a traumatic story of child bride who later seeks revenge or Lust Stories which sheds light on modern relationships from the viewpoint of the Indian woman. This list for women-centric film over OTT platform goes on, films like 'Choked', 'MasabaMasaba', 'Netrikann', 'Mrs. Serial Killer', 'Paris Paris', 'Mohini', 'The Great Indian Kitchen', 'RaatAkeli Hai', 'Dolly kitty aur chamaktesitare', 'Soni', 'Chopsticks', 'Bombay Rose', 'Shakuntala Devi', et cetera. This trend of portraying women as ambitious, Fun, Daredevil, and voluptuous has been applauded by both genders alike, and this phenomenon is compelling filmmakers to develop more female protagonist stories.

The majority of contents in the context of Women-centric films added over OTT platforms are unique, allowing them an upper hand over the conventional film. Being unregulated by the censor is one of the crucial factors which allows the creator to work in-depth on sensitive issues related to women. As the content in these platforms does not restrain from using profanity, nudity, and sexuality, the audience finds the content portraying realism, thus, more interesting, engaging, and relatable.

Films released in the OTT platform has not been able to match the grandeur of traditional Box Offices, though it is evident from the trend that big media house has also begun opting these platforms for the exclusive release of their films. It is quite possible that in the recent future OTT Platform will begin releasing movies exclusively, thus rendering cinema halls obsolete.

Therefore, In the ambit of uniqueness and realism, it can be accurately said that the OTT has been a game-changer in the portrayal of women in media, transcending the pre-defined stereotypes of complexion, and physique. Adding further, if this trend of women-centric narration continues, OTT will help uplift the image of women in the film industry and their issues in society by eliminating the prejudice: how women should behave.

Portrayal of women in erotica:- *In the Indian Context, erotica content has always been synonymous with 'B-Grade' movies. For GEC channels, the censors have always held a tight grip on: what is obscene and what is not. Conventionally, the women working in erotica had always been polarised by the mainstream media. Only a handful of female actors got their names recognised by the general audience. 'Silk Samita' is one among those names that have made a mark in the film industry, but , the semi-biographical film of 2011-'Dirty Picture' shed*

light on society's perception of her real and reel life character. While her career expands over 450 films in 5 different languages, she has always been casted to add the touch of sexuality and edginess to these movies.

The scenario for soft porn platforms in India is booming; there has been a phenomenal growth in the number of platforms that serve the particular content. Platforms like AltBalaji, hotshots, Ullu, Primeflix, Nueflix aka Flizmov, Gup Chup, and many more cater erotica based on the fantasy of Common Indian Middle- class families. Another reson for the popularity of these content is the vernacular that is typical to the audience. According to Sachin Mohite, an erotica content creator for AltBalaji: 'We have seen erotica before, but woh erotica humnesheherkedekhe ha(but those belong to the cities). You have a swimming pool, bikini-clad women, a champagne bottle, and muscular men. Nobody had seen erotica of real India. So, I thought why not make something for Bharat, instead of India'

The portrayal of women in these platforms is extensively sexual, obscene, and crude. They serve women as a commodity for sexual gratification, solely focusing on the breasts and buttocks to compensate for the mediocrity of the story. Referring to Series Like 'Gandi Baat',based on erotic stereotypes in the rural environment or 'Kavita bhabhi' which narrates the life story of a call girl and her customer's sexual fantasies and desires. 'Saheli', casually touches on the issue of homosexuality, perhaps normalising it for the audience, and the list for such content goes on.

While most female actors try to use these platforms as slingshots for their career; gaining fame and money in a short time-span but or the long run, some of these actors believe that exposure to web series of these genres is a significant predictor of sexual objectification, dis-empathy and commenting about women's bodies, and insulting unattractive women behaviour.

Thus the portrayal of women in these platforms plays a significant role in navigating the stance of women representation and perception in society and the media industry.

Conclusion:- *The portrayal of women in the OTT platform can be compared to a two-edged sword. On one side, the boom in women-centric content over the years and the performances of the female actors, and the storyline have received acclaim from both the critics and the audience. On the other side lies the fact that since these OTT platforms don't conform to the standard censorship laws of the land, they have begun exploiting these perks to use sexuality, profanity and nudity to propel their content to the viewer. While, the latter method can be considered a good recipe for commercial success, it jeopardises the character diversification of women. Ultimately, depicting and distorting women in the fold of commoditisation of her body parts which is the biggest violation of human rights.*

In the Indian context, Over-the-top platforms, have brought in a phenomenal change towards the perception of women in the media and society. Especially, the younger generations, who can easily relate to the content served in these OTT platforms. These Platforms have also addressed taboo of Indian society, while depicting women portraying these roles in strong characters. Issues like homosexuality, child abuse, rape, workplace harassment have been boldly addressed by these platforms, which have brought gradual ease in being vocal about these issues that impact women all-around.

Finally, it can be said that OTT platforms empower the women's portrayal in society and have been a prominent tool in eliminating pre-

defined stereotypes of women in the media industry.

Reference

1. Gallagher Margaret *(1979). The Portrayal and Participation of Women in the Media. 4.Brown, M.E (1994): Soap Opera and Women's Talk - The pleasure of resistance. London: Sage*

2. Kuhn, A.(*1985): The Power of the Image - Essays on Representation and Sexuality. London: Routledge &Kegan*

3. Amanda Haraldsson *and Lena Wängnerud. 2019. The effect of media sexism on women's political ambition: Evidence from a worldwide study. Feminist Media Studies 19, 4 (2019), 525–541.*

4. Kumari, A., *& Joshi, H. (2015). Gender,Stereotyped Portrayal of Women in theMedia: Perception and Impact on Adolescent. IOSR Journal of Humanities andSocial Science, 20(4), 44-52. DOI: 10.9790/ 0837-20424452* **5. Sarikakis, K.** *(2013). Media and the Image of Women: Report of the 1st Conference of the Council of Europe Network of National Focal Points on Gender Equality. Retrieved from https://rm.coe.int/1680590587*

6. Davis, G. *(2017). Global Symposium on Gender in Media. Geena Davis Insititute.*

7. Sarkar, S. *(2012). An analysis of Hindi women-centric films in India. S. University of Louisville.*

8. Nandakumar,S*.(2011).THE STEREOTYPICAL PORTRAYAL OF WOMEN IN COMMERCIAL INDIAN CINEMA . University of Houston .*

9. Verma, N. *(2019, Aug 06). Over-The-Top (OTT) Content: The Next-Gen Medium of Entertainment. Retrieved from https://www.kelltontech.com/: https://www.kelltontech.com/kellton-tech-blog/over-the-top-content-next-gen-medium-entertainment*

10. Ali, F., Ashraf, A., Fatima, M*., &Awais, M. (2021). Consumption of Sexually Explicit Content Through Web Series and Emerging. Reproductive System & Sexual.*

11. Datar, S. (*2020, Dec 25). Out of one box into another: Are women in OTT space in danger of being stereotyped? Retrieved from https://indianexpress.com/: https://indianexpress.com/article/entertainment/opinion-entertainment/are-women-in-ott-space-in-danger-of-being-stereotyped-7119585/*

12. HAZRA, P. *(2021, Aug 11). Nine Women-centric Films And Series To Put On Your Watchlist This Month. Retrieved from https://www.shethepeople.tv/: https://www.shethepeople.tv/film-theatre/women-centric-films-ott-platforms-2/*

13. Majumdar, M. *(2020). Uncensored: The Rise Of Indian Erotica On OTT Platforms. Retrievedfromhttps://www.mansworldindia.com/:https://www.mansworldindia.com/currentedition/the-rise-of-indian-erotica-on-ott-platforms-gandii-baat-kavita-bhabhi-ullu-alt-balaji-primeflix-hotshots/*

14. Mukherjee, S. *(2020, Dec 07). Female's the way on OTT: Women-fronted stories rule the web. Retrieved from https://www.hindustantimes.com/:https://www.hindustantimes.com/bollywood/female-s-the-way-on-ott-women-fronted-stories-rule-the-web/story-LAKPLLs95YGRt4wtXga3ZL.html*

15. Roy, T. L. *(2019, March 8). 'OTT platforms a boon for women-centric content'. Retrieved fromhttps://www.exchange4media.com/: https://www.exchange4media.com/digital-news/ott-platforms-a-boon-for-women-centric-content-95199.html*

16. Sharma, M. *(2021, Jan 16). Relatable language, believable bodies: What underpins the popularity of adult content on Indian OTT platforms. Retrieved from https://www.firstpost.com/: https://www.firstpost.com/living/relatable-language-believable-bodies-what-underpins-the-popularity-of-adult-content-on-indian-ott-platforms-9197421.html*

◆◆◆

शोध संचयन
A Refereed Research Journal
And a complete Periodical dedicated to
Humanities & Social Science Research
ISSN 0975 1254 (PRINT)
ISSN 2249-9180 (ONLINE)
www.shodh.net
Vol. 11
Issue 1&2
15 July 2020

वर्तमान संन्दर्भ में साहित्य से अपेक्षाएँ

बीज शब्द :

कोरोना काल मे शिक्षा, साहित्य, भारतीय समाज

प्रस्तुत शोध आलेख में उपभोक्तावादी संस्कृति से उपजी समास्याओं पर विचार किया गया है एवं वर्तमान समय में कारोना महामारी एक मानव जीवन पर प्रभाव को समझाया गया हैं कि कोराना महामारी का मानव पर प्रभाव घातक हैं किन्तु यह प्रकृति के लिए शुभ संकेत है। नदियाँ सदानीरा हो रही हैं। आलेख मे रहीम के दोहे द्वारा समझाया गया है कि आपदा या विपत्ति में ही अपने परायें की पहचान होती है, लेख में साहित्यक प्रवृत्तियों पर विचार किया गया है कि साहित्यकार को आदिकवि बाल्मीकि और वेदव्यास की श्रेणी का होना चाहिए। लेखक जब मनाशक्त भाव से रचना करता है तो उसकी आत्मानुभूति सामान्य जन की अनुभूति हो जाती है। अत: लेखक को अनाशक्त भाव से रचना करनी चाहिए। आलेख में वर्तमान साहित्य के प्रसंग में यह समस्या उठाई गई है कि वर्तमान साहित्य आपसी विद्वेष एवं निम्न जीवन मूल्यों के कारण साहित्य के श्रेष्ठ मूल्यों पर खरा नही उतर रहा है। अत: साहित्यकार को बुद्धि संवेदनाओं के सहचर द्वारा साहित्य सर्जन करना चाहिए। आलेख में भिखारी ठाकुर के लोक नाट्य की प्रस्तुत 'बेटी बेच' कुप्रथा के सत्य को उजागर किया है। अत: साहित्य का लक्ष्य भी समाज में सत्य को उजागर करना है। लेख में विद्यानिवास मिश्र के उदाहरण द्वारा बताया गया है 'वर्तमान समय में ऐसा साहित्य लिखा जाना चाहिए जो लोगों में चेतना जाग्रत करें और भविष्य में एक बेहतर समाज का निर्माण करें और वर्तमान महामारी जनित समास्य से आगे बढ़ने का मार्ग निर्देशित करे।

*****

प्रो० यशवंत सिंह
अध्यक्ष हिन्दी विभाग
मणिपुर विश्वविद्यालय
इफाल (मणिपुर)

वर्तमान संन्दर्भ में साहित्य से अपेक्षाएँ

वर्तमान संदर्भ 'कोरोना काल का हैं। कोरोना एक संक्रमण जनित बीमारी हैं, जो आपदा के रुप में विश्व कें समक्ष उपस्थित हुई है। यह आपदा दैवीय हैं या चीन की साज़िश का परिणाम हैं, इस पर बहस चल रही हैं। लेकिन यह तय हैं कि समय समय पर प्रकृति अपने को समायोजित करती हैं। पिछले सौ वर्षो में आद्यौगिक क्रन्ति जनित विकास ने प्रकृति था इतना विनास किया है? जितना एक हजार वर्षों में नही हुआ था। अब कोरोना संक्रमण से बचाव हेतू 'लाँकडाउन' की निरस्तरता के कारण मानव-गतिविधियाँ एक-सी गयी हैं। जिससे यह देखने-सुनने में आ रहा है कि नदियाँ सदानीरा हो रही हैं। शहर प्रदूषण से मुक्त हो रहे है, आसमान साफ दिखाई पड रहा हैं। मनुष्य भी अत्यधिक उपभोगतावादी प्रवत्तियों पर विराम लग रहा है। वह न्यूनतम जरुरतों पर जीवन-निर्वाह कर रहा है। शारीरिक रुप से अपने-अपने घरों में बन्द रहनें के कारण वह अपने परिवार के साथ सुख-दुख बाँट रहा हैं, जिससे मानसिक तनाव कम हो रहा है। यह प्रकृति एवं मनुष्य के लिए शुभ संकेत है। अत: हमस ब को इस कोरोना रुपी आपदा को अवसर के रुप में बदलने का प्रयास करना चाहियें। जिसके लिए रहीमदास जी का प्रस्तुत दोहा समीचीन शिक्षा प्रदान करता है।

''रहीमन विपदा हुँ भली, जो थोडे दिन होय।
हित-अनहित का जगत में, जान परत सब कोय।।

अर्थात कुछ समय के लिए आयी विपत्ति या आपदा भी भली हैं, क्यों इससे अपने-पराये की पहचान हो जाती है। परम्परा में आपदा को अवसर कें रुप में लेने के साक्ष्य मिलते है। अत्यधिक उपभोगतावादी देव-संस्कृति के विनाश के बाद निराश-हताश मनु ने श्रद्धा से प्रेरणा पाकर देव संस्कृति के विनास के बाद निराश-हताश मनु ने श्रद्धा से प्रेरणा पाकर देव संस्कृति के अवशेषों से श्रम व कार्यशील मानव-संस्कृति का निर्माण किया था। शस्त्रों में भी आपदा कों अवसर मानते हुए' आपदा-धर्म की बात की गयी है-

आपदा काल परखिये नारी,
धीरज,धर्म, मित्र, अरु नारी।'

अर्थात आपदा-काल में अपनें अंदर विद्यमान धैर्य एवं धर्मयुक्त आचरण की परख करनी चाहिए। वही इस समय समाज में विद्यमान अपनें शुभचिंतक मित्रों की एवं परिवार की स्त्री(पत्नी) की पहचान भी हो जाती हैं।

साहित्य''मनुष्य की सर्वोत्तम कृति है। मानव-समाज को उसके समस्त परिवेश के साथ जानने-समझने के जितने माध्यम उपलब्ध है, उनमें सबसे पूर्ण और मधुर उसका साहित्य है। आचार्य भामह ने ''शब्दार्थौ सहितौ काव्यम्'' कहकर शब्द और अर्थ के साहित्य सहित भाव को काव्य यानि साहित्य की संज्ञा प्रदान की। साहित्य में यह भाव शब्द और अर्थ के साथ ही व्यष्टि और समष्टि के रुप में भी परिलक्षित होता है। साहित्य प्रारम्भ में किसी व्यक्ति-विशेष के भावों-विचारों का प्रस्फूटन होता है, जो साधारणीकरण की प्रक्रिया से गुजरकर सभी की समष्टिगत धरोहर हो जाता है। इसे 'स्वात: सुखाय तुलसी रघुनाथगाथा' कहने से व्यक्तितत्व का परिष्कार होने के साथ ही समाज द्वारा उसका अवगाहन करने से सभी का हित संभव हो जाता हैं। गोस्वामी तुलसीदास जी ने 'रामचरितमनास में इसी को लक्षित करते हुए लिखा हैं।

'कीरति भनित भूति भलि सोई।
सुरसरि सम सब कहँ हित होई।।

अर्थात किसी व्यक्ति का अर्जित यश, उसका कथन यानि साहित्य तथा उसकी उपलब्धियाँ तभी सार्थक है, जब वे सुर-सरि गंगा के समान सभी के लिए हितदायंक हो। लेकिन साहित्य का लक्ष्य सब का हित साधने के साथ ही सत्य एवं प्रिय का निरुपण करना भी होता है। साहित्य ब्रम्ह के समान सत्य का अनुसरण करता है, वह ऐसे सत्य को कहने से बचता है। जो किसी को अप्रिय लगे ,उससें हानि होने की सम्भावना हो। अत: वह सत्य को मधुर कथन से प्रिय बनाता है तथा कभी-कभी हित साधने के लिए सत्य कथन की भंगिमा को बदल देता हैं। जो सत्य कथन सभी को प्रिय लगे, निश्चित ही वह सुरसरि गंगा के समान सब के लिए हित या कल्याणकारी होता है। बिहारीलाल ने नई पर आसक्त जयसिंह को राज निसुरता को लक्षित करते हुए ऐसे ही सत्य एवं प्रिय बचाने से युक्त सदा लिखकर भेजा था।

'नही पराग नहि मधुर रथ,नहि विकास रहि काल।

टति कक्षि दी जों निधयों, अनजो कौन हवाज।।

कहते है कि इसी दोहे को पढकर महाराज जयसिंह की आजसक्ति कही भी तथा में युक्त हुए थे।

भारतीय मनीसियों का आदर्श रहा है कि 'लिखना उसी को चाहिये जों अपने जीवन में संघर्ष की अवस्था को पार कर चुका हो। जो समदर्ज़ी न अनासक्त हो ,विदेह भाव को प्राप्त कर चुका हो। आदिकवि वाल्मीकी एवं महर्षि वेदव्यास को इसी श्रेणी में रखा जाता हैं। जिन्होने अपने जीवन के संघर्षे को पार करते हुए रामायण एवं महाभारत महाकव्यों की रचना की। लेकिन पश्चिमी विचारकों का ध्येय रहा हैं कि संघर्षो से रुबरु हो रहा व्यक्ति ही अधिकार हो सकता है। महाकवि 'सूर्यकान्त त्रिपाठी' निराला का साहित्य इन दोनों का अनुपम संगम है। उन्होने अपने जीवन में अनेक अभावों उपेक्षाओं से संघर्ष करते हुए भी अनाशक्त भाव से अपनी पुत्री की मृत्यु पर 'सरोज-स्मृति' कविता लिखी। जिसमें उनका व्यक्तिगत कथन-

''दुज ही जीवन की कथा रही,
क्या कहूँ आज, जो नही कही।''

साधारणीकृत होकर समष्टिगत अनुभुति के रुप में अभिव्यक्त हुआ। जो कमावेश रुप में अधिकांश साहित्यकारों की कव्यगाथा बन गया।

साहित्यकार की दृष्टि में सभी मनुष्य समान हैं। उनके सुख-दुख को समझना, उन्हें मनुष्यता के पवित्र आसन पर भेजना साहित्य के रचनाकार का दायित्व कुछ अधिक बढ़ जाता है। क्यों की वह समाज के अन्य व्यक्तियों की अपेक्षा अधिक संवेदनशील व सजग व्यक्ति श्रमशील है, अपने श्रम के माधयम से जीविका प्राप्त करते है, वे किसान मजदूर कहलाते हैं। (श्रम के साथ जीवका) का प्रयोग करने वाले कारीगर, डाँक्टर, इंजीनियर, व वैज्ञानिक कहलाते है। लेकिन श्रम व बुद्धि के साथ अपनी संवेदनाओं का साहचर्य करने वाले कलाकार, साहित्यकार कहलाते है। वे अपनी तूलिका- लेखनीवाणी के द्वारा मनुष्य को उसकी मनुष्यता का एहसास दिलाने का कार्य करते हैं। (सुप्रसिद्ध) लोकनाट्यकर्मी भिखारी ठाकुर के समय बिहार के भोजपुर क्षेत्र में अधिकांश गरीब-लाचार पिता दहेज न चुका पाने के कारण अपनी बेटियों को प्रोढ़ या वृद्ध वर के हाथों बेचने को मजबूर हो रहे थे। इसी 'बेटी-बेच' कुप्रथा को जब भिखारी ठाकुर ने लोकमंच पर प्रदर्शित किया तो नवविवाहिता बेटी के कारण करुण प्रलाप को देख-सुनकर सभी उपस्थित दर्शकों की आँखों में आँसुओं की झड़ी लग गयी। जिन्होंने अपने घर की बेटियों के साथ ऐसा कुकृत्य किया था, उन्हें अपनें द्वारा की गयी गलतियों का अहसास हुआ तथा उन सबने आगें से ऐसा बुराकृत्य न करने तथा ऐसा करने वाले को रोकने का संकल्प लिया।

आचार्य विद्यानिवास मिश्र कें अनुसार-'साहित्य की पहचान धूप की तरह होती हैं। जों निरन्तर बदलती रहती है।' जाड़े की मीठी-मीठी धूप का आनन्द निश्चय ही वैशाख-जेठ की प्रखर धूप से विल्य होता है। साहित्य कंचन नही है, जिसकी परख के लिए एक ही कसौटी का आचार्य विद्यानिवास मिश्र कें अनुसार- (साहित्य की पहचान धूप की तरह होती हैं। जों निरन्तर बदलती रहती है।' जाड़े की मीठी- मीठी धूप का आनन्द निश्चय ही वैशाख-जेठ की प्रखर धूप से विल्य होता है। साहित्य कंचन नही है, जिसकी परख के लिए एक ही कसौटी काफी हो। बल्कि साहित्य कंचन के पानी की तरह है), वह जिस पर चढ़ता है, उसी के अनुसार निखार पाता है। साहित्य का स्वर प्रश्नाकुल बालिका की तरह कोमल व मधुर होता है, जो मन में अहलाद पैदा करता हैं। वही साहित्य का मर्म व्यक्ति को उसकी कुहनी में लगी चोट की तरह बेघता रहता है। एक हिन्दी लोकगीत के भावार्थ वर्णन में 'नवविवाहिता बहन पहली बार अपने मायके आती है। उसके साथ बचपन से खेलने वाला छोटा भाई पूछता है- बहन तुम्हें ससुराल में मेरी याद आती है। बहन जवाब देती है- हाँ मुझे ससुराल में तुम्हारी बहुत याद आती है। तब छोटा भाई पूछता है कि मेरी किस तरह की याद आती है, तो बहन कहती है मुझे तुम्हारी याद कुहनी मे लगी चोट की तरह आती है। इस तरह के जवाब सुनकर छोटा भाई बहन सें नाराज हो जाता है कि मेरी तुलना कुहनी में लगी चोट से करती हों अब बहन के पुनः ससुराल चले जाने के बाद एक बार छोटा भाई खेलते समय जमीन पर गिर पड़ता है, जिससे उसकी कुहनी में चोट से उठे भयंकर दर्द से जब-तब कराह उठता है तो उसे अपनी बहन द्वारा कही गयी बात याद आती है। उस समय उसकी चोट युक्त कुहनी में उठता भयंकर दर्द बहन के विदोह में परिवर्तित हो जाता हैं। वह

बहन की याद में बिसूरने लगता है। इस तरह मनुष्य को सुख-दुख का एहसास कराना , उसे मानवीय सम्बन्धों से युक्त करना यही साहित्य का परम लक्ष्य एवं कर्तव्य हैं।

मानवीय गुणों से युक्त होने कें कारण साहित्य मानव समाज को आगे ले जाने में समर्थ होता है। मनुष्य द्वारा निर्मित अन्य कृतियाँ उसे वर्तमान काल में ही सुख से संयुक्त करने का आभास देती है। लेकिन साहित्य मनुष्य को वर्तमान से आगे ले जाकर उसके भविष्य की दिशा निर्धारित करता है। इसी लिए मुंशी प्रेमचन्द्र ने साहित्य को समाज व राजनीति के आगे -आगे चलने वाली मशाल कहा है, जो समाज को निरंतर आगे बढने के लिए प्ररित करता है, उसे अधंकार से प्रकाश की ओर ले जाता है। समाज में जिन दुष्टप्रवृत्तियों का प्रकाश हो जाता है।उन्हें पूरकर समाज को गतिशील बनायें रखता है। कोरोना काल में साहित्य को अपने इसी दायित्व का बखूबी निवर्हन करना होगा । उसे मनुष्य के जीवन में आयी क्षणिक निराशा को दूरकर आशा का संचार करना होगा। जिससे मनुष्य अन्य आपदाओं की तरह इससे भी पार पाने में सक्षम हो सके -

‘ झुका दिया है अगर सर यकीन रख प्यारे,
बनेगा तेरा भी मुकददर यकीन रख प्यारे।
पहाड़ काट दिये है गुजरती मौजो ने तो क्या है राह का पत्थर
यकीन रख प्यारे ।
तेरी खुदी ही उबारेगी हर मुसीबत से,
किसी से हो न हो खुद पर यकीन रख प्यारे।
झुका दिया है अगर सर यकीन रख प्यारे।
बनेगा तेरा भी मुकददर यकीन रख प्यारे।।

सहायक ग्रन्थ - सूची

1. हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास, रामस्वरुप चतुर्वेदी, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण ,
2. श्री रामचरितमानस, टीकाकार- हनुमान प्रसाद पोद्दार गीताप्रेस,गोरखपुर , एक सौ आठवाँ पुनर्मुद्रण,; संवत 2072
3. एक बूँद सहसा, उछली , सचिदानन्द बाटस्यामन' अज्ञेय'
4. भारतीय व्यायशास्त्र डा0तारकनाथ बाली वाणी प्रकाज़न नयी दिल्ली , आशन्ति 2017
5. तमात्र के झरोल से विद्यानिवास मिश्र , राधाकृष्ण , नई दिल्ली तृतीय संस्करण,1992
6. प्रेमचंद साहित्य: कुछ विचार प्रेमचंद, डायमण्ड पाकेट बुक्स, नई दिल्ली, संस्करण,2002
7. आवारा मसीहा, विष्णु प्रभाकर , राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली, संस्करण 2009

◆◆◆

शोध संचयन
A Refereed Research Journal
And a complete Periodical dedicated to
Humanities & Social Science Research
ISSN 0975 1254 (PRINT)
ISSN 2249-9180 (ONLINE)
www.shodh.net
Vol. 11
Issue 1&2
15 July 2020

जाति का प्रश्न और हिंदी दलित आत्मकथाएँ

बीज शब्द :

*****

प्रोफेसर रामचंद्र
भारतीय भाषा केन्द्र
जे.एन.यू, नई दिल्ली-110067

जाति का प्रश्न और हिंदी दलित आत्मकथाएँ

भारत के पिछड़ेपन और अवरूद्ध विकास की वजह क्या है? विश्व के विकसित देशों की तुलना में भारत की अवस्थिति क्या है? भारत एक संसाधन सम्पन्न देश है, फिर भी इसके विकास की गति इतनी धीमी क्यों है? लम्बे अर्से से हम भारत को विकासशील देश के रूप में पढ़ते-जानते आ रहे हैं, इस प्रत्याक्ष में कि आने वाले वर्षों में यह भी विकसित देशो की श्रेणी में शामिल हो जाएगा परन्तु यह सपना मृगतृष्ण ा सरीखा है। आजादी के 71वें वर्ष में हम आज कहां खड़े हैं? जाति-पांति, छुआछूत, जातिगत अपमान-अवमानना-घृणा-हिंसा, बलात्कार-यौन-पितृसत्तात्मक हिंसा, साम्प्रदायिक-जातिगत दंगे, धार्मिक उन्माद, सामंती एवं जाति आधारित सेनाओं के तांडव, कट्टरता, मॉब लिंचिंग, खाप पंचायतों के बर्बर निर्णय, लव जिहाद आदि जैसे अमानवीय कृत्य के माहौल में हम जी रहे हैं। बेहद असंवेदनशील परिवेश में आम जनता को विकास का सपना दिखाकर शासन करने वाले राजनीतिक दल हैं, जो गरीबी, भुखमरी, बेरोजगारी, भ्रष्टाचार से मुक्ति का मैनिफेस्टो लेकर आते तो हैं परन्तु सब कुछ ढकोसला साबित होता है और आम जनता को उनके सपने मृगमरीचिका सदृश लगते हैं। आजादी के इतने वर्षों बाद आज भी आम जनता ठगी चली आ रही है। परिवर्तन और मुक्ति की आकांक्षा का सपना लिये न जाने अभी कितनी पीढ़ियां गुजरने वाली हैं। बहुलतावादी संस्कृति की जटिलताएं और घनीभूत होकर संकीर्णता का दायरा बढ़ाती जा रही हैं। इस तथ्य को स्वीकार करने में कोई हर्ष नहीं होना चाहिए कि भारत में जाति की समस्या और उसकी मनोवैज्ञानिक जटिलताएं मनुष्य, समाज एवं देश के विकास में बाधक हैं। जाति आधारित सामाजिक व्यवस्था को बदलने का खाका तैयार करके उसको पूर्णतः समाप्त करने के लक्ष्य का संधाान किये बगैर जो भी विकास होगा वह एकांगी, अधूरा और क्षणिक होगा। 'ब्राह्मण धर्म' से 'हिंदू धर्म की सामाजिक-सांस्कृतिक यात्र के नेपथ्य में असमानता-विषमता आध ाारित जो अवैज्ञानिक-अव्यवहारिक ढांचा तैयार किया गया है तथा जिसको शास्त्र अनुमोदित करके संरक्षित रखा जाता रहा है, उससे वैचारिक होड़ लिये बगैर कोई भी परिवर्तन और विकास सम्भव ही नहीं है। साहित्य भी इससे होड़ लेने का एक सशक्त माध्यम है, जिसकी प्रतिबिम्बन हैं दलित आत्मकथाएं। दलित आत्मकथाकारों ने अपने भुक्तभोगी जीवन के कड़वे अनुभवों को साझा करके वर्ण जाति आधारित समाज की आंतरिक तस्वीर से रू-बरू कराया है। दलित स्वानुभूतियां आईना हैं जिससे साक्षात्कार करके सामाजिक-राजनीतिक परिवर्तन को संभाव्य बनाया जा सकता है। भारत की सामाजिक संरचना और उसकी जटिलताओं से टकराए बिना समतापरक समाज और अखंड राष्ट्र का निर्माण असंभव है।

किसी भी समाज की सरंचना से ही उस समाज की विकासधारा निकलती है। विकास के सभी तंत्र भी उससे ही निर्धाारित होते हैं। इस आलोक में भारत की विकासधारा और उसकी सामाजिक संरचना बहुत ही जटिल है, जहां सभी विकास तंत्र विज्ञान और वैज्ञानिकता की जगह असमानतापरक सामाजिक मान्यताओं, परंपराओं एवं वर्चस्ववादी सिद्धांतों से निर्मित और निर्धारित होते हैं जिसमें वैज्ञानिकता का घोर अभाव है। हालांकि यह अभाव दुनिया के सभी देशों में देखा जा सकता है लेकिन भारत के अतिरिक्त अन्यों ने एकके बाद एक करके अपने विकास तंत्र को वैज्ञानिकता से सम्बध किया है, परन्तु भारत आज भी इससे काफी दूर है। भारत के विकास की धीमी गति की वजह मुख्य रूप से विषमतापरक यहां की सामाजिक संरचना है जो वर्ण और जाति आधाारित है। जिसे कुछ खास इतिहासकार और वर्चस्ववादी ऐतिहासिक दृष्टि से संपृक्त समूह अब वैज्ञानिक भी बताने लगे हैं जिसपर पुनर्विचार करने की सख्त जरूरत है। हकीकत यह है कि भारतीय समाज की यह संरचना पूरी तरह से अवैज्ञानिक है और इससे सिर्फ और सिर्फ इस समाज के एक समूह, जिसे इस जातिवादी सरंचना ने सबसे श्रेष्ठ बनाया है। उसी समाज और वर्ग समूह को ही फायदा होता रहा है। अन्य समाजों के लिए यह व्यवस्था शोषण, दमन, अन्याय एवं गुलामी का पर्याय रही है। इससे मुक्ति यानी असमानतापरक इस अवैज्ञानिक सामाजिक सरंचना के अंत के साथ ही भारत सचमुच में एक विकसित 'राष्ट्र' की ओर बढ़ सकता है।

सामाजिक संरचना और राष्ट्र के स्वरूप को समझने में साहित्य की भूमिका भी अहम होती है। इस भूमिका में आत्मकथाओं का योगदान सबसे गंभीर और गूढ़ होता है। साहित्य की अन्य विधाओं में यह पात्र के विचारों एवं उसके संबंधों के माध्यम से होती है वहीं आत्मकथाओं में यह अभिव्यक्ति संघर्षों की अनुभूति से उत्पन्न ज्ञान होता है। एक लेखक, रचनात्मक जीवन संघर्ष के माध्यम से समाज एवं राष्ट्र के बीच अपने आपको जिस रूप में पाता है, उसी को वह व्यक्त करता है। इन जटिल संबंधों की पड़ताल करने में दलित आत्मकथाओं में अभिव्यक्त संघर्ष और सामाजिक-सांस्कृतिक संबंधों का तानाबाना न केवल एक दस्तावेज़ की तरह होता है बल्कि उसमें समाज और राष्ट्र

के विकास की एक दृष्टि भी होती है। यह दृष्टि जीवन मूल्यों के लिए किए गए श्रम और संघर्षों से निर्मित होती है, क्योंकि दलित समाज एक श्रमशील समाज रहा है और इतिहास के पन्नों में हमेशा से जीवन मूल्यों के लिए अनवरत संघर्ष करता रहा है। अपनी छोटी-छोटी इच्छाओं, आकांक्षाओं और स्वप्नों की पूर्ति के लिए उन्हें जिस प्रकार से समाज एवं राष्ट्र के विभिन्न तंत्रें तथा व्यवस्थाओं से संघर्ष करना पड़ता है और इस संघर्ष एवं टकराहट के बरक्स व्यवस्था और तंत्रें की मशीनरियों के द्वारा जिस प्रकार से श्रमशील बहुजन समाज कादमन और उत्पीड़न होता है, उससे भुक्तभोगी समाज की रीढ़ ही टूट जाती है। तत्पश्चात इन संघर्षों के बीच जब वह उठकर खड़ा होता है तब उनमें एक नई चेतना का संचार होता है। यहीं से प्रतिरोध की संस्कृति और वैज्ञानिक चेतना का भी जन्म होता है। अम्बेडकरवादी चिंतन एवं दर्शन इसी प्रतिरोध की संस्कृति और वैज्ञानिक चेतना से उपजा हुआ चिंतन-दर्शन है। अम्बेडकरवादी चिंतन और दर्शन से उपजा तथा प्रेरित दलित साहित्य जो अब बहुजन साहित्य बनने की ओर अग्रसर है, वह न केवल दलित चेतना का साहित्य है बल्कि उसका सौन्दर्यबोध भी पूर्व स्थापित साहित्य के सौन्दर्यबोध से भिन्न है। केवल इस भिन्न सौन्दर्यबोध को ही नहीं बल्कि प्रतिरोध की संस्कृति और उसकी वैज्ञानिक चेतना को स्थापित करने में दलित आत्मकथाएं एक मजबूत आधार स्तंभ की तरह रही हैं।

दलित आत्मकथाएं न केवल एक व्यक्ति की बल्कि पूरे दलित समाज की चिंता, चिंतन और संघर्षों के अन्वेषण की दस्तावेज हैं, जो समाज अस्तित्व में तो था लेकिन, वर्ण-जाति आधाारित ब्राह्मणवादी व्यवस्था और उसके द्वारा निर्मित संस्कृति के इतिहास में खो गया था। या फिर वर्चस्ववादी षड्यंत्रो द्वारा उसे खत्म कर दिया गया था। पीड़ाजनित अन्वेषण की यह प्रक्रिया सिर्फ व्यक्तिगत नहीं है बल्कि वह आत्मकथाकार का समाज और 'राष्ट्र' की व्यवस्थाओं के बीच जीवन संघर्षों के साथ-साथ उसके सामाजिक संबंधों का भी प्रक्तिलन है। दलित आत्मकथाएं इन्हीं संघर्षों और संबंधों की गाथा है। दलित आत्मकथाएं समाज और राष्ट्र की विकास गाथा को ऊपर से नहीं नीचे से देखने की समाजशास्त्रीय दृष्टि पैदा करती हैं और वैज्ञानिक दृष्टि से एक समृद्ध तथा विकसित राष्ट्र की ओर बढ़ने के लिए वैकल्पिक दृष्टि का निर्माण करती हैं। यह वैकल्पिक दृष्टि फुले-अम्बेडकरवादी सामाजिक चिंतन एवं दर्शन पर आधारित है।

दलित आत्मकथाओं में गुणात्मक रूप में चेतना जाग्रत करने की शक्तियां हैं। 'शून्य' का महत्व स्वयं में नहीं पता चलता है लेकिन वह जिसके साथ भी जुड़ जाता है उसका मूल्य परिवर्तित कर देता है। दलित आत्मकथाएं भी ऐसी ही हैं। वह आत्मकथाकार के व्यक्तित्व को कितना महत्वपूर्ण बनाती हैं, यह कहना तो मुश्किल है परंतु प्रामाणिक तौर पर यह कहा जा सकता है कि आत्मकथाएं पाठक को झकझोर कर उसे 'यू कैन डू' की शक्ति से न केवल रू-बरू कराती हैं बल्कि उसे जड़ता से मुक्त कर शिखर की ओर बढ़ने के लिए प्रेरित भी करती हैं।

अब तक हिंदी और गैर हिंदी भाषाओं में जितनी भी आत्मकथाएं लिखी जा चुकी हैं। वे सभी आत्मकथाएं दलित समाज को एक नई दिशा प्रदान करती हैं। असमानपरक ब्राह्मण ावादी व्यवस्था व जातिवादी मानसिकता के कारण मानव जीवन और मानवीय मूल्यों से दलित समाज की सामाजिक स्थिति कितना विषम और विपरीत है (उसकी कथा प्रस्तुत करती हैं दलित आत्मकथाएं। इन आत्मकथाओं को पढ़ने से न केवल भारतीय समाज का यथार्थ सामने आता है बल्कि दलित समाज की मानवीय मूल्यों की वंचना की तस्वीर स्वत: चलचित्र की भाँति आंखों के सामने प्रकट हो जाती है। इसके बावजूद कोई 'इंडिया शाइनिंग' का नारा दे और कहे कि हम प्रबुद्ध समाज की ओर बढ़ रहे हैं तो इससे बड़ा झूठ और क्या हो सकता है? इस देश की लगभग एक चौथाई आबादी गरीबी रेखा से नीचे जीवन यापन कर रही है। आधा आबादी असुरक्षा और भय के साए में जीवन जी रही है। किसान आत्महत्या कर रहे हैं। बहुजन समाज दिन-प्रतिदिन लोकतांत्रिक मूल्यों से वंचना का शिकार हो रहा है। जिस देश में श्रमशील समाज का बहुसंख्यक हिस्सा दहशत का जीवन जी रहा हो और जिन्हें जाति-धर्म की राजनीति से आतंकित और दहशत के माहौल में जिंदगी जीने के लिए मजबूर किया जा रहा हो, उस देश में दलित आत्मकथाएं जीने की शक्ति देती हैं। ये स्वानुभूतियां जीवन मूल्यों से वंचित समुदाय को आगे बढ़ने की कला सिखाती हैं, क्योंकि इन आत्मकथाओं में जिस समाज की तस्वीर-ए-बयां है वे इसी देश की बहुजन आबादी हैं, जिन्हें ब्राह्मणवादी मानसिकता ने छलबल से पराजित कर उसे गुलामी की दासता में जीवन जीने के लिए मजबूर किया है। उसी गुलामी की दासता से मुक्त होने की कथा दलित आत्मकथाएं कहती हैं। दलित आत्मकथाओं में व्यक्त दलित समाज की स्थिति सामाजिक-राजनीतिक व्यवस्था में शून्य की रही है। सभी प्रकार की शून्यता के यथार्थ की तस्वीरें खींचती तथा दर्शाती हैं दलित आत्मकथाएं। उस सामाजिक शून्यता के बीच से निकलकर दलित आत्मकथाकार समाज को नई दिशा और नई ऊंचाई की ओर ले

जाते हैं। वे अपने-अपने क्षेत्र में मिशाल बनकर उभरते हैं और राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर स्वयं अपनी पहचान बनाते हैं। यही चेतना दलित समाज की नई पीढ़ी को प्रेरित कर उसे आगे बढ़ने की शक्ति देती है। बुद्ध, फुले और डॉ. अम्बेडकर के दर्शन, चिंतन और वैचारिकी से ऊर्जान्वित दलित आत्मकथाएं व्यक्तित्व और समाज-राष्ट्र के विकास के लिए न केवल चेतना उत्पन्न करती हैं बल्कि उसे सुव्यवस्थित दिशा प्रदान कर समाज-राष्ट्र के विकास के लिए प्रतिबद्ध भी करती हैं। सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, राजनीतिक, शैक्षणिक आदि सभी क्षेत्रें में दलित आत्मकथाओं ने अपनी नई उपस्थिति के साथ नए प्रतिमान को स्थापित किया है। यह नए प्रतिमान न केवल साहित्य के पुराने सौन्दर्यशास्त्र को नकारते हैं बल्कि नवीनता के साथ साहित्य के नए सौन्दर्यशास्त्र को निर्मित भी करते हैं।

'जूठन' पूरी शिक्षा पद्धति और शिक्षकों की घिनौनी मानसिकता को उजागर करती है। गुरु-शिष्य की जो पवित्र छवि हमें दी गई है या जिस छवि का निर्माण किया गया है, वह बाहर से देखने पर बहुत सुहावनी, निर्दोष और स्पृहणीय लग सकती है, लेकिन गुरु-शिष्य के इस पवित्र रिश्ते को वही जानता है, जो ऐसे गुरुओं के पास से गुजरा हो। इतिहास इसका कोई आंकड़ा नहीं दे सकता कि अब तक कितने एकलव्यों का अंगूठा काटा गया होगा। ओमप्रकाश वाल्मीकि 'जूठन' में लिखते हैं, अध्यापकों का आदर्श रूप जो मैंने देखा था वह अभी तक मेरी स्मृति से मिटा नहीं है। जब भी कोई आदर्श गुरु की बात करता है तो मुझे वे तमाम शिक्षक याद आ जाते हैं जो मां-बहन की गालियाँ देते थे। सुंदर लड़कों के गाल सहलाते थे और उन्हें अपने घर बुलाकर उनसे वाहियातपन करते थे। ओमप्रकाश वाल्मीकि जिस स्कूल और कॉलेज में पढ़ने जाते हैं, उन्हें 'अबे, चूहड़े का', 'कितना भी पढ़ लियो रहेगा तो चूहड़ा ही' कहकर उनकी हैसियत बता दी जाती है। जब कभी भी वे शिक्षक से किसी समस्या पर बात करने जाते तो सबसे पहले उन्हें 'भंगी' होने का एहसास कराया जाता। धाार्मिक कर्मकाण्डों और गढ़ी हुई ऐतिहासिकता पर ओमप्रकाश वाल्मीकि ने जब-जब अध्यापकों से प्रश्न करने की कोशिश की, तब-तब उन्हें मार खानी पड़ी। परीक्षा में अंक तो कम मिले ही, साथ ही सवर्ण सहपाठियों एवं अध्यापकों द्वारा बींधाने वाले शब्द भी मिले-देखो चूहड़े का, बार्मन बन रहा है।

शिक्षा तंत्र में व्याप्त वर्णव्यवस्था की ठोकरों से ओमप्रकाश वाल्मीकि बार-बार घायल होते हैं, उसकी पीड़ा से कराहते भी हैं, लेकिन टूटते नहीं। बल्कि चेतना का वेगमयी प्रवाह निरन्तर बढ़ता जाता है, जो कि हर दलित और दलित चेतना के लिए स्पृहणीय है। हिंदू व्यवस्था की दी हुई चोटें इनके मन में तरह-तरह के सवाल पैदा करती हैं, मैं हिंदू भी तो नहीं हूँ। यदि हिंदू होता तो हिंदू मुझसे इतनी घृणा, इतना भेद-भाव क्यों करते? बात-बात पर जातीय-बोध की हीनता से मुझे क्यों भरते? जातीय श्रेष्ठता-भाव अभिमान बनकर कमजोर को ही क्यों मारता है? क्यों दलितों के प्रति हिंदू इतना निर्मम और क्रूर है।[3]

हमारी शिक्षा व्यवस्था ने हिंदू सामाजिक व्यवस्था के ऊपरी पायदान पर बैठे हुए लोगों के मन में जन्मजात श्रेष्ठ होने के भाव को दिलोदिमाग में बैठाने का ही काम क्या इसलिए किया है, ताकि दलित और अन्य उत्पीड़ित वर्ग स्वाभाविक रूप से अपने को हीनतर मानते हुए मुकाबले से बाहर हो जाएं तथा बराबरी करने की जुर्रत न कर सकें? इसीलिए डॉ. अम्बेडकर द्वारा शुरू की गई दलित अस्मिता और आत्म-सम्मान की लड़ाई प्रासंगिक है, जिसने आज दलितों के मन-मस्तिष्क में चेतना के बीज बो दिए हैं। वह अपने हकों के लिए आज संघर्षशील है। दलित आत्मकथाकार इस चेतना के प्रतिनिधिा के रूप में दिखाई देते हैं। 'जूठन' में लिखते हैं कि बुद्ध के मानवीय स्वतंत्रता के विचार ने मुझे प्रभावित किया था। परिवर्तित समष्टि में कुछ भी अपरिवर्तनीय नहीं है। मानव ही सर्वोपरि है। करुणा और प्रज्ञा व्यक्ति को उच्चता की ओर ले जाती है।[4]

'जूठन' ने प्रेम की सारी परिभाषाओं एवं उसके अर्थों पर प्रश्नचिन्ह लगा दिया है। दो युवा मनों में उपजे प्रेम के टूटते तार ने नस-नस में समाई 'जाति-व्यवस्था' को बड़ी तल्खी से उजागर किया है। प्रेमी-प्रेमिका के बीच में 'जाति' आते ही वह सब कुछ बिखर जाता है, जिसे दो जवांदिल भविष्य के लिए संजोकर रखते हैं। इस 'व्यवस्था' में मानव की स्वाभाविक मनोवृत्तियाँ दफन कर दी जाती हैं और सारी स्वतंत्रताएं छीन ली जाती हैं। यह अकारण नहीं है कि इसके शिकार दलित और स्त्री ही होते हैं। इन अर्थों में दोनों पर्यायवाची से लगते हैं। ऐसा लगता है जैसे ऐसे समाज में स्त्रियों को घर की चहारदीवारी में बंद करके जातिगत मानसिकता से संस्कारित किया गया हो। महाराष्ट्र की कुलकर्णी ब्राह्मण परिवार की लड़की सविता को उसके मां-बाप ने क्या बचपन से यही सिखाया और बताया था कि एस. सी. अनकल्चर्ड (असभ्य) होते हैं, गंदे रहते हैं, एस. सी. से घृणा करो? कुलकर्णी खानदान की बेटी सविता ओमप्रकाश वाल्मीकि की ओर इसलिए आकृष्ट हुई थी कि वे एस. सी. हो ही नहीं सकते। इतने सभ्य और सुशील तो सिर्फ ब्राह्मण ही होते हैं। ब्राह्मणवादी संस्कृति ने सदियों तक

रिसने वाला सिर्फ दर्द ही तो दिया है जिसका भुक्तभोगी पूरा दलित समाज है। इस सभ्यता ने न जाने कितने ओमप्रकाशों और सविताओं को दफ्न किया है। इस पथराई, जड़ीभूत संवेदना को जगाने की ओर 'जूठन' संकेत करती है। दिलो-दिमाग पर छाई हुई भीरुता और आतंक को मिटाने के लिए एक सामाजिक-सांस्कृतिक आंदोलन की आवश्यकता हेतु 'जूठन' प्रेरित करती है। ओमप्रकाश वाल्मीकि और सविता कुलकर्णी का प्रेम संबंधा जाति के कारण ही बलि चढ़ जाता है। ''हम दोनों के बीच कई तरह के फासले थे, जो लगातार मुझे रोकते थे। 'कुलकर्णी परिवार की आत्मीयता मुझे आकर्षित भी कर रही थी, फिर भी पारिवारिक स्थितियों के कारण संकोच था।''[5]

'जूठन', 'दोहरा अभिशाप' और 'शिकंजे का दर्द' में प्रेम व अन्तर्उपजातीय विवाह का चित्रण है। 'जूठन' में सौन्दर्य के सहज आकर्षण के साथ अन्तर्जातीय प्रेम की शुरूआत होती है लेकिन जाति के कारण वह प्रेम असफल रहता है। 'दोहरा अभिशाप' में सामाजिक सांस्कृतिक आंदोलन के तौर पर अंतर्उपजातीय विवाह की प्रक्रिया शुरू होती है जो दलित आंदोलन की वैचारिकता को पुष्ट करती है। कौसल्या बैसंती लिखती हैं कि ''मेरी शादी रजिस्ट्रार के माध्यम से हुई, क्योंकि मुझे गाजा-बाजा, बारात वगैरह पसंद नहीं था'' यहां अंतर्जातीय विवाह का एक संवैधाानिक स्वरूप प्राप्त होता है। यद्यपि दूसरी तरफ सामाजिक-सांस्कृतिक स्वरूप का भिन्न पक्ष भी आत्मकथा में व्यक्त है। ''मां यह शादी चोरी-छिपे नहीं करना चाह रही थी। उन दिनों अंतरप्रांतीय और अंतरजातीय शादी करना और वह भी हमारे समाज में कोई आसान बात नहीं थी।''[6] इस प्रकार जाति व्यवस्था को तोड़ने की प्रक्रिया का दलित आत्मकथाओं में एक सशक्त सामाजिक-सांस्कृतिक व वैचारिक सौन्दर्यबोध की अभिव्यक्ति भी है।

दलित आत्मकथाएं वह पन्ना खोलती हैं जहां किसी साहित्यकार, इतिहासकार और समाजशास्त्री की दृष्टि नहीं पंहुच सकी थी। इस अर्थ में 'मुर्दहिया' साहित्य, इतिहास और समाजशास्त्र के अधूरेपन एवं एकांगीपन को संबधित कर खालीपन को संपूरित करती है। यही नहीं बल्कि हिन्दू व्यवस्था की जड़ता एवं विद्रूपता के तह तक जाती है। इस संदर्भ में दलित साहित्य भाषा, साहित्य एवं संस्कृति के विकास में अमूल्य योगदान भी कर रहा है। 'मुर्दहिया' जैसी रचनाएं विषमतापरक समाज को बदलने के लिए पृष्ठभूमि तैयार कर रही हैं। संपूर्ण दलित साहित्य परंपरागत साहित्य के खालीपन को संपूरित करने और विषमता को पाटने का साहित्य है। वर्ण और जाति व्यवस्था का आनंद एवं रसास्वादन लेने वाले हित समूह ने दलित साहित्य के प्रति नकारात्मक प्रचार किया है। वर्चस्वशाली तबके के कुछ आलोचकों और बौद्धिकों ने दलित साहित्य लेखन के प्रारंभिक दौर से ही नकार, विकृति एवं समाहार के भाव से दलित साहित्य आंदोलन का विश्लेषण किया है। यह यथास्थिति को मजबूत करने की नकारात्मक दृष्टि है जो समाज में व्याप्त जातिवादी जड़ता, हिंसक प्रवृत्ति और विषमतापरक हिन्दू-व्यवस्था को बदलना नहीं चाहती। दलित आत्मकथाएं बौद्धिकों को भारतीय समाज के सच का आइना दिखाती हैं कि देखो, 21वी सदी के भारत की तस्वीर कैसी है? इसीलिए दलित आत्मकथाएं आमूल परिवर्तन की मांग करती हैं। दलित आत्मकथाओं में अभिव्यक्त वेदना और शोषण के यथार्थ को काल्पनिक साबित करने के उद्देश्य से इन कृतियों को लगातार उपन्यास के रूप में प्रचारित-प्रसारित किया जा रहा है। मराठी से हिन्दी में अनुदित दलित आत्मकथाओं को प्रकाशकों ने उपन्यास या आत्मकथात्मक उपन्यास के रूप में ही छापा है। यह प्रामाणीकरण का अस्वीकार है। लम्बे अर्से से विभिन्न तरह के वैचारिक आवरण और वर्गीय एवं जातिगत हित समूहों में जिस साहित्य और समाज ने खुद को 'मुख्यधारा' बना लिया था, उस 'मोहक' आवरण को दलित आत्मकथाओं ने हटा दिया है। दलित आत्मकथाएं वैकल्पिक सामाजिक-सांस्कृतिक इतिहास का सृजन हैं, जिसका सशक्त प्रमाण है 'मुर्दहिया'। हिन्दी में 'अपने अपने पिंजरे' और 'जूठन' से शुरू हुआ आत्मकथा लेखन 'मुर्दहिया' तक पहुंचकर दलित साहित्य लेखन में आत्मकथा विधाा को और सशक्त एवं प्रभावशाली बनाया है। 'मुर्दहिया' हिंदू-व्यवस्था में व्याप्त हिंसा, घृणा तथा वर्चस्व की राजनीति को बेपर्दा करती है, साथ ही दलित समाज की जटिलताओं एवं विसंगतियों का समाजशास्त्र भी प्रस्तुत करती है।

'मुर्दहिया' दलित जीवन संघर्ष की सिर्फ वेदनामयी गाथा ही नहीं है, अपितु हिंदू जाति-व्यवस्था की जड़ता, अंधविश्वास, कर्मकांड, धर्मन्धिता तथा तमाम विभेदकारी शोषणयुक्त विषम परिस्थितियों के घेरे को तोड़कर उगते सूरज के मानिंद बालक तुलसीराम की संघर्ष-यात्रा है। अपमान, अनादर, उपेक्षा और कड़की की वेदना से गुजरते दलित बालक की मनोदशाओं की सच्ची कहानी है 'मुर्दहिया'। लोकरंग की पच्चीकारी से सनी हुई वेदना और पीड़ा की यह भाषा हिन्दी की अमूल्य धारोहर है। लोकरंग और लोक भाषा में सनी हुई लोक जीवन की ऐसी चित्रकारी हिन्दी भाषा के लिए गर्व की बात है। दलित को अपमानित करने वाली कहावतों का भी जिक्र आत्मकथा के सरोकारों को और सार्थक रूप देता है।

डॉ. तुलसीराम लिखते हैं कि ''लोग अकाल से उत्पन्न दुःख-दर्द को भूल गए थे। धान की अच्छी फसलों के बाद चैत बैसाख के दिनों में जौ, गेहूं, चना, मटर आदि फसलों की कटाई से दलितों के बीच काफी खुशहाली छा गई थी। इसका कारण था कुछ महीनों के लिए उचित भोजन-व्यवस्था, इस संदर्भ में हमारे पूरे क्षेत्र में दूर-दूर तक ब्राह्मण तथा क्षत्रिय जमीदारों के बीच चमारों को लेकर एक काव्यात्मक मुहावरा प्रचलित था- 'भादौ भैसा चैत चमार- इनसे कबहूं लगै न पार' इस निरादरपूर्ण अमानवीय अभिव्यक्ति में चमारों की पेट भर खाने की खिल्ली उड़ायी जाती थी।''[7] यह वह सच्चाई है जिसे इतने प्रामाणिक ढंग से किसी भी परंपरागत भाषा साहित्य ने वर्णित नहीं किया है। 'जाति' कैसे, कबसे और क्यों गाली और अपमान का पर्याय बनी होगी? यह आत्मकथा इस तथ्यान्वेषण के लिए प्रेरित करती है। इस अर्थ में यह एक शोधापरक पुस्तक भी है जो जाति के मूल में मौजूद अपमान और अनादर के कारणों के तह तक ले जाती है।

घर में 'कनवा' और बाहर 'चमरा' की गाली बाल मनोविज्ञान तथा बाल शोषण का ऐसा पहलू है जिसे किसी भी भाषा साहित्य में ढूंढ़ना कठिन है। आखिर बचपन को रौंदने की वह कौन सी संस्कृति है जिसकी ज़िनाख्त कोई भी साहित्य और पद्धतिशास्त्र ठीक से नहीं पहचान पाते? इसकी ही खोज का नाम है 'मुर्दहिया'।

दलित आत्मकथाओं की विशिष्टता इस अर्थ में है कि सभी आत्मकथाओं में प्राइमरी पाठशाला से लेकर विद्यालय और उच्च शिक्षण संस्थानों तक में मौजूद जाति-पांति, छुआ-छूत और विभिन्न तरह के सामाजिक भेदभाव की विषम स्थितियों का मार्मिक चित्रण मिलता है। इस चित्रण से भारत के शिक्षा-तंत्र की नग्नता का भेद खुलता है। जिस शिक्षा व्यवस्था को अर्से से सरस्वती देवी का मंदिर कहकर महिमामंडित किया गया है, उन सारी शुचिता, मूल्य एवं नैतिकता और मान्यताओं को दलित आत्मकथाएं ध्वस्त करती हैं। वर्चस्वज़ाली प्रतिभा और योग्यता के सारे मानकों को 'मुर्दहिया' ध्वस्त करती है। 'मुर्दहिया' में शिक्षा तंत्र की जिस विद्रूपता का वर्णन मिलता है (वह प्रगति के सारे दावों को खोखला साबित करता है। अध्यापक मुंशी रामसूरत लाल विशेषकर, दलित बच्चों को बात-बात पर स्कूल में 'चमरकिट' कहकर अपमानित करते थे।

जिस समाज को सार्वजनिक स्थलों और स्कूलों में पानी पीने तक का अधिकार न हो, उस समाज के मनोविज्ञान को समझने के लिए कौन-सी प्रविधि विकसित की गई है? 'मुर्दहिया' में पानी पीने के अधिकार के अलावा तुलसीराम के स्कूली जीवन के बीच कुछ अन्य घटनाएं भी महत्वपूर्ण हैं। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद संवैधाानिक व्यवस्था के अन्तर्गत दलितों को शिक्षा का अधिकार मिल जाने से दलित वर्ग के लोग अधिकारी बनने लगे थे, लेकिन अधिकारियों की भी पहचान जाति से ही की जाती थी, जैसे डिप्टी साहब को 'चमार डिप्टी' का संबोधन। परन्तु डिप्टी साहब का खौफ सभी शिक्षकों में था।

दलित आत्मकथाएं सभी प्रकार की असमानता और बहिष्कार का विरोध करती हैं और उपजाति के भेद का भी विरोध करती हैं। जाति-उपजाति का सवाल दलित आत्मकथा में केन्द्रीय प्रश्न बनकर आया है। जब ओमप्रकाश वाल्मीकि यह सवाल करते हैं कि 'जाति ही मेरी पहचान क्यों?'[8] वे अपनी पीड़ा व्यक्त करते हुए लिखते हैं कि ''मेरा दलित होना और किसी विषय पर अपने परिवेश, अपनी सामाजिक-आर्थिक स्थिति के अनुसार दृष्टिकोण बनाना ऐरोगैंट हो जाना है, क्योंकि मैं उनकी नजर में सिर्फ एस.सी. हूं, दरवाजे के बाहर खड़ा रहने वाला।''[9] दरअसल यहां सवाल ऐरोगैंट का नहीं है समस्या दलित होने की चेतना से है। पीड़ाजनित यही चेतना दलित सौन्दर्यबोध को निर्मित करती है। दलित चेतना की वैचारिकी के अंतर्गत न तो कोई किसी से कमतर है और न ही कोई किसी से उच्च।

उक्त के संदर्भ में गैर दलित स्त्री की चेतना को रेखांकित करती हुई कौसल्या वसंती बताती हैं कि जातिगत भावना की शिकार स्त्री जाति सबसे ज्यादा है और जातिगत भावना की जड़ भी वही है। 'दोहरा अभिशाप' में इस बात को कौसल्या वसंती उजागर करती हैं कि ''गैर दलित स्त्रियां जातिगत भावना से ज्यादा ग्रस्त रहती हैं।...उन्होंने मुझे मेरी जाति के बारे में पूछा ही नहीं। पूछतीं तो मैं अवश्य ही अपनी जाति के बारे में बताती। मैं अपनी जाति को हीन नहीं समझती, न उनको अपने से ऊंचा। वैसे मैं जाति-पांति को नहीं मानती।...जाति के साथ-साथ जातिगत मानसिकता का विरोध होना चाहिए।...मैंने भी (चिटफंड) में जाना छोड़ दिया। कुछ पैसे देने थे, वे मैंने नौकरानी के हाथ भिजवा दिए और साथ में मैंने उन्हें एक पत्र लिखा कि 'आपने मुझसे मेरी जाति नहीं पूछी। क्या मैं अपनी जाति का पोस्टर अपनी पीठ पर चिपकाकर रखूं? आप सभ्य नहीं लगतीं। सभ्य आदमी जाति-पांति का विचार अपने मन में नहीं रखते और जाति-पांति मानने वाले लोगों से मैं अपना संपर्क नहीं रखती। मुझे पहले पता होता कि आप जाति-पांति मानती हैं तो मैं स्वयं आपके चिटफंड में नहीं आती। आपकी जाति के लोगों ने हमारे बाप-दादा और

हमारी जाति के लोगों को सदियों से सताया-पीने को पानी नहीं, पढ़ाई नहीं, संपत्ति नहीं, काम करने की मनाही। गांव के बाहर चिथड़ों में रहने को मजबूर किया और भी अमानुष अत्याचार किए। फिर भी हमने यह सब सहकर अपने पांव पर खड़े रहकर उन्नति की और आपसे आगे बढ़कर दिखाया है। अब आपसे दबकर नहीं रहेंगे। फिर मैं आपसे क्यों डरूं।''[10] यहां स्पष्ट रूप से यह बात देखी जा सकती है कि दलित चेतना स्व निर्मित है इसमें किसी का डर नहीं। डिक्लास होने का बोधा और संघर्ष के बल पर अपनी पहचान बनाए रखना इसकी विशिष्टता है। वहीं यह बात भी आत्मकथाओं में झलकती है कि जातिगत चेतना ने दलितों के लिए सांस्कृतिक अलगाव का बोधा भी पैदा किया है। जाति व्यवस्था ने ज्यादातर सामाजिक-सांस्कृतिक गतिविधियों को नियंत्रित किया है। इस संदर्भ में आनंद तेलतुमड़े ने अपनी पुस्तक 'साम्राज्यवाद का विरोध और जातियों का उन्मूलन' में लिखा है कि जाति ''सांस्कृतिक प्रतिमानों को भी नियंत्रित करती है। जाति ने अपनी शक्ति केवल उसे अनुकूल बनाने में ही नहीं बल्कि इसे एक अक्खड़पन रूप देकर नए निर्माण में निर्णायक भूमिका अदा की है। जातिगत चेतना ने अपने को नष्ट करने से नकार दिया है न तो शिक्षा न ही देश से बाहर चले जाने की स्थितियां इसे मिटा सकी हैं। जातियों में निहित विभाजक शक्ति वर्गों के पैदा होने का गला घोंट रही हैं। इस तरह जातियां क्रांतिकारी परिवर्तन की संभावनाओं को बाधित करती हैं।''[11] इससे स्पष्ट होता है कि भारत में जाति नियंत्रक और नियंता दोनों की भूमिका में है और जाति की नींव पर कभी भी एक समृद्ध समाज का निर्माण नहीं किया जा सकता है, समृद्ध राष्ट्र की परिकल्पना तो बहुत दूर की बात है। इस संदर्भ में आजादी से लगभग एक दज़क पहले सन 1936 ई. में बाबा साहेब डॉ. अम्बेडकर ने दो टूक राय व्यक्त करते हुए आगाह किया था, ''मेरी राय में इसमें कोई संदेह नहीं है कि जब तक आप अपनी सामाजिक व्यवस्था नहीं बदलेंगे, तब तक कोई प्रगति नहीं होगी। आप समाज को रक्षा या अपराधा के लिए प्रेरित कर सकते हैं, लेकिन जाति-व्यवस्था की नींव पर आप कोई निर्माण नहीं कर सकते आप राष्ट्र का निर्माण नहीं कर सकते, आप नैतिकता का निर्माण नहीं कर सकते। जाति व्यवस्था की नींव पर आप कोई भी निर्माण करेंगे, वह चटक जाएगा और कभी भी पूरा नहीं होगा।''[12]

भारतीय सामाजिक जड़ता का कारण यहां के धर्मशास्त्र जनित पाखंड है। जहां वैज्ञानिकता की पहुंच हो ही नहीं पाती है। धाार्मिक कर्मकांड आम जनता को उसकी स्थिति से उबरने ही नहीं देते है। ब्राह्मणवाद और पूंजीवाद के द्वारा दैनंदिनी में जारी ध ाार्मिक कार्यक्रम उसकी चेतना के ऊपर पड़ी काली परत को हटने ही नहीं देता है। पुरानी धार्मिक पुस्तकों का बाजारीकरण, दूरदर्शन और अन्य माध्यमों से उसका प्रचार-प्रसार जनता को एक नए प्रकार से धार्मिकता का पाठ पढ़ा रहा है। जनता मानसिक रूप से धार्मिक जड़ता का शिकार है जहां उसकी सांस्कृतिक चेतना, उसका पारिवारिक संस्कार आदि उसे मुक्त नहीं होने देता है। वे यह नहीं समझ पाते हैं कि धर्म क्या है? उसका औचित्य क्या है? उसकी सामाजिकता व व्यावहारिकता का स्वरूप कैसा है? दलित आत्मकथाएं इन तमाम कारकों और कारणों पर प्रकाश डालती हैं।

भारत एक बहुल सांस्कृतिक और बहुभाषिक देश है। किन्तु 'हिंदू राष्ट्र' की मानसिकता वाली विचारधारा सांस्कृतिक भिन्नता को स्वीकार नहीं करती है क्योंकि यह उसका राजनीतिक एजेन्डा है। सांस्कृतिक विविधता में एकता तब तक संभव नहीं है जब तक जातिगत भिन्नता है। जातिगत विभिन्नता एकल सांस्कृतिक जीवन को कभी भी परिभाषित नहीं करती है। इस **अर्थ में 'हिन्दू' शब्द एकता का द्योतक नहीं है। यदि एकता का प्रतीक होता तो सबकी संस्कृति समान होती लेकिन ऐसा नहीं है।** इसलिए हिन्दू एक खास वर्ग का प्रतीक है जिसकी संस्कृति और संस्कार हिन्दू धर्मशास्त्र से संचालित है। दलित आत्मकथाएं इस सांस्कृतिक भिन्नता को रेखांकित करती हैं ताकि सांस्कृतिक एकता का सूत्र स्थापित किया जा सके। ओमप्रकाश वाल्मीकि लिखते हैं कि ''कहने को तो बस्ती के सभी लोग हिन्दू थे, लेकिन किसी हिन्दू देवी-देवता की पूजा नहीं करते थे। जन्माष्टमी पर कृष्ण की नहीं जहारपीर की पूजा होती थी या फिर 'पात्र' पूजे जाते थे। वे भी अष्टमी को नहीं, 'नवमी' के ब्रह्ममुहूर्त में।''[13] वे आगे बताते हैं कि हिन्दू संस्कृति हिंसात्मक है। इसका कारण इस सूत्र वाक्य में देखा जा सकता है कि ''क्यों दलितों के प्रति हिंदू इतना निर्मम और क्रूर है? ''मैं हिन्दू भी तो नहीं हूं।''[14] जब वे लिखते हैं कि मैं हिन्दू भी तो नहीं हूं तो बात स्पष्ट हो जाती है कि दलित की भारतीय समाज में अलग पहचान है। इसलिए उसकी संस्कृति हिन्दू संस्कृति से भिन्न है। बाजार के परिदृश्य में कई संस्कृति का बयान है वहीं सामाजिक संरचना में व्याप्त दलित, गैर-दलित संस्कृति, मजदूर और मालिक की संस्कृति है। मजदूर का अनुपात किस रूप में है। डॉ. श्यौराज सिंह बेचैन की आत्मकथा 'मेरा बचपन मेरे कंधों पर' इसका बयान करती है, ''ये भूमिहीन अपने-अपने गांव आकर इस इलाके में कृषि मजदूर के रूप में काम किया करते थे। सौ में से नब्बे चमार-भंगी होते थे और दस प्रतिशत गरीब

मुसलमान थे। कोई बनिया, ब्राह्मण, अहीर, गूजर, जाट, लोधा मैंने इन मजदूरों के रूप में न देखा था न सुना था। मजदूरों की भाषा देहाती हिन्दी और सरदारों की भाषा पंजाबी थी।...यहां बाजार में दो अलग-अलग संस्कृतियों का मिश्रण दिखा। कामगार स्त्रियां धोती कमीज पहनतीं। पुरुष धोती कमीज या पाजामा-कुर्ता पहनते थे। जिस तरह भूस्वामी सरदारों के चेहरे चमकते और हरे भरे थे उसी तरह उनकी स्त्रियों के चेहरों पर चमक होती थी। दुखों-सुखों का फर्क साफ दिखता। मालिक दासों और शोषकों-शोषितों का रिश्ता था। बाजार में भी दो देश, अलग-अलग दिखते थे। एक मालिकों भूस्वामियों का देश, दूसरा मजदूरों-भूमिहीनों बंधुआ गुलामों का देश। भूस्वामी पढ़े लिखे कायदे कानून जानने वाले प्राय: सिख ध र्म वाले थे और मजदूर प्राय: अनपढ़ और हिन्दू धर्म के लोग थे। हिन्दू धर्म में हमारी जगह क्या थी, कहां थी? थी भी या नहीं, यह बात अलग है। जमीन जायदाद वालों में ऊंची जात के सिख थे और अल्पभूमि या भूमिहीनों में रविदासी और मजहबी सिख होते थे। ये छोटी जोत वाले होते थे और अपनी किसानी का काम खुद ही करते थे। सिखों में भी जात-पांत थी पर हिन्दुओं जैसी छुआ-छूत वहां हमारे साथ नहीं थी। किसी भी प्रकार के काम कंधों से कंधा मिलाकर किया करती थी, बल्कि वे खेतों से हारी थकी झुग्गियों में आकर खाना बनाती थीं, कपड़े धाोती थीं और उनके बच्चे साथ-साथ काम किया करते थे। न उनके लिए कोई अवकाश था न बच्चों के लिए स्कूल और न कोई दवा दारू का इंतजाम। कुल मिलाकर अच्छे भविष्य की कोई तैयारी नहीं। जो था सो वर्तमान।' इस सब के बावजूद ब्राह्मणों जैसी छुआ-छूत, इंसान से जन्म के आधाार पर नफरत जैसी नीचता इन लोगों में नहीं थी। ये हमारे श्रम के जितने शोषक थे मान सम्मान के उतने नहीं, हम सरदारों में उनके चौके तक जा सकते थे और उनके बर्तन धो देने के बाद भी छू सकते हैं।''[15]

इस प्रकार यह साफ-साफ समझा जा सकता है कि भारत में सांस्कृतिक विविधता है। संपूर्ण भारतीय संस्कृति में केवल और केवल दो संस्कृति दिखाई पड़ती है। एक दलित संस्कृति जिसमें सभी समुदाय हिन्दू, मुसलमान, सिख और ईसाई आदि के उपेक्षित समुदायों की संस्कृति है दूसरा गैर दलित संस्कृति जिसमें सभी समुदाय के सवर्ण समुदाय है। इस सब के बावजूद इसमें एक संस्कृतिकरण की प्रक्रिया है जिसके माध्यम से वे एक दूसरे के निकट आने का प्रयास करते हैं। लेकिन उनमें वह भावना नहीं आ पाती है जो एक जाति के कारण है। यह शिक्षा की सांस्कृतिक मान्यता है। जिसका संचालन एवं संप्रेषण ब्राह्मणवादी-वर्चस्वशाली लोगों के हाथों से होता है। 'शिक्षाशास्त्र' में वैद्यनाथ प्रसाद वर्मा शिक्षा की सांस्कृतिक मान्यताओं के बारे में लिखते हैं कि ''शिक्षा का सांस्कृतिक उद्देश्य में विश्वास रखने वाले व्यक्ति शिक्षा को एक विशेष वर्ग के लिए ही मानते हैं सार्वजनिक रूप में नहीं। सांस्कृतिक शिक्षा में इस बात की कोशिश की जाती है कि शिक्षा में उन विषयों को रखा जाए, जिनके ज्ञान से एक व्यक्ति औरों की अपेक्षा सुसंस्कृत और सभ्य समझा जाए। शिक्षा का सांस्कृतिक उद्देश्य जीवन की पूर्णता पर आधारित नहीं है। इसमें उन परिस्थितियों का अध्ययन नहीं होता, जिनके आधार पर शिक्षा का उद्देश्य निश्चित किया जाता है। यह जनतंत्रवादी दृष्टिकोण के बिल्कुल विपरीत पड़ती है।''[16] अतएव यह स्पष्टत: कहा जा सकता है कि भारत की शिक्षा व्यवस्था ब्राह्मणवादी व्यवस्था व मानसिकता से संचालित है और उसकी स्थापना करती है।

'शिकंजे का दर्द' दलित के साथ-साथ एक स्त्री की भी आत्मकथा है। सुशीला टाकभौरे 'मनोगत' नामक शीर्षक से भूमिका में लिखती हैं कि ''दलित होने के साथ स्त्री होने की पीड़ा भी मैंने भोगी है। एक स्त्री की आत्मकथा मनुवाद द्वारा निर्मित पुरुषसत्ता प्रधान समाज में स्त्री शोषण को उजागर करती है। जैसे धरती, वैसे ही स्त्री भी सब सहन करती है फिर भी धीरज रखती है और अपनी धुरी पर घूमती रहती है। लेकिन कब तक? आदर्शों के नाम पर स्त्री-शोषण किया जाता है। अपने घर परिवार के शोषण, अत्याचार की बात बताने वाली स्त्री को समाज अच्छा नहीं कहता। अपने अधिकारों की बात करने वाली स्त्रियों के बारे में भी समाज अच्छा नहीं मानता। समाज की यह मान्यता रही है-'स्त्री देवी है या कुलच्छनी।' उसे जीवित इन्सान कभी माना ही नहीं गया। जैसे वह हाड़, मांस की मानव नहीं, आदर्शों की पुतली है जो आदर्शों के लिए जीती है और आदर्शों के लिए मर जाती है। वह समाज से अपने सुख-दुख का हिसाब कैसे मांगेगी भला?''[17] इतना ही नहीं सुशीला टाक भौरे एक मानवीय मूल्य के रूप में स्त्री जीवन मूल्यों की वकालत करती हैं और दलित-स्त्री उत्पीड़न से मुक्ति की बात करती हैं। वे स्पष्ट कहती हैं कि दलित उत्पीड़न से मुक्ति की लड़ाई खुली लड़ाई है जो सबको दिखाई दे रही है। इसी तरह नारी मुक्ति की भी लड़ाई हो जिसे सब देखें, जाने और समझें। समाज में नारी के प्रति 'अबला' की मानसिकता को बदलकर नारी को सबल रूप में स्थापित करना नारी मुक्ति का उद्देश्य है। नारी शोषण की स्थितियों को बदलकर उसे सभी अधिकारों से सम्पन्न बनाना सामाजिक प्रगति और परिवर्तन कालक्ष्य है। सम्पूर्ण दलित समाज और नारी वर्ग को शोषण-अपमान से मुक्ति का

अधिकार मिलना चाहिए। हेमलता महीश्वर अपने आलेख में 'शिकंजे का दर्द' के बहाने: बिर्रे की रोटी उर्फ चल मेरी शीला' में भारतीयता और हिंदुत्व की भारतीयता पर बात करती हुई दलित समाज को आगाह करती हैं। वे लिखती हैं कि, ''यदि कहीं भारतीय होने का अर्थ किसी भी धर्म विशेष के अनुसार संचालित होना है तो हम दलित रचनाकारों के लिए यह 'अलार्मिंग' है और हमें पूरी ताकत के साथ संवैधानिक तंत्र को लागू करने हेतु प्रत्येक स्तर पर गंभीरता के साथ कार्य करना होगा।''[18]

आर्थिक विषमता व असमानता, जल-जंगल और जमीन की समस्याएं, संसाधन विहीनता और उसकी असमान वितरण की प्रणाली का उल्लेख दलित आत्मकथाओं में दिखाई पड़ता है। दलित समाज एक श्रमशील समाज रहा है लेकिन श्रम सौन्दर्य और मूल्यों से हमेशा ही वंचित रहा है। इसलिए जब दलित साहित्य में श्रम मूल्यों की बात की जाती है तो एक तरफ सौन्दर्य के मूल्यों को स्थापित किया जाता है वहीं दूसरी तरु अपने समाज की संसाधन विहीनता, आर्थिक-विषमता व असमानता, उसकी असमान वितरण प्रणाली की बातों को रेखांकित किया जाता है। दलित समाज की आर्थिक स्थिति का पता इस बात से ही लग जाता है कि दलित समाज के पास न ही अपना घर है और न ही अपनी जमीन। आर्थिक विपन्नता दलित आत्मकथाओं में सहज ही देखी जा सकती है। 'तिरस्कृत' में सूरजपाल चौहान लिखते हैं कि ''हमारे पास गांव में जमीन-जायदाद के नाम पर कुछ न था। घूरे से सटी कच्ची मड़ैया ही हमारी एकमात्र निधि थी, जिसे हम अपना घर कहते थे।

गांव में बिरादरी के सभी लोगों का यही हाल था।''[19] 'गांव में बिरादरी के सभी लोगों का यही हाल था' भारतीय ग्रामीण समाज की संरचना में व्याप्त असमानता और द्वेष को ही उजागर करता है। वर्ण-जाति सत्ता ही भारतीय ग्रामीण समाज की असमानता, विद्वेष गैर बराबरी का जनक है। जिसमें श्रम का विभाजन नहीं श्रमिकों का विभाजन की व्यवस्था है अर्थात मानव-मानव के बीच विभाजन की व्यवस्था है। जिसमें एक मालिक दूसरा दास, एक सवर्ण दूसरा अवर्ण आदि की अवधारणाएं हैं। इसी संदर्भ को और स्पष्ट करते हुए श्यौराज सिंह बेचैन लिखते हैं कि ''अपनी और अपने लोगों की युगों-युगों से चली आ रही सामाजिक गुलामी का अहसास मुझे आज और अधिक शिद्दत के साथ महसूस होता है। मैंने आज तक किसी भट्ठे पर किसी ब्राह्मण, बनिये को ईंटों को पाथते नहीं देखा। गांव शहरों की सफाई का काम वे भंगी समाज से अपने हाथों में लें, इसकी तो कल्पना भी नहीं की जा सकती। कोई भंगी चमार किसी मठ मंदिर का पुजारी नहीं देखा। अछूतों को मुक्त कर सम्मानित पेशों में आने के वे कितने खिलाफ हैं हमारे प्रति उनकी भाषा और व्यवहार देखने पर सहज ही मालूम हो जाता है।''[20]

जब इसका समाजशास्त्रीय विश्लेषण किया जाएगा तो यह बात स्वत: सामने आ जाएगी कि भारतीय समाज की मानसिकता और व्यवस्था की संरचना की मानसिकता क्या है? इसलिए डॉ. अम्बेडकर ने गांव को जातिवाद का कारखाना कहा है। गांव की संरचना या उसकी भौगोलिक बनावट ही जाति आधाारित है। उसी के अनुरूप गांव की संस्कृति बहुत ही सहजता से संपन्न होती रहती है। निम्न जाति के लोग जहां अपना संवाद करते रहते हैं वहां यदि ऊंची जाति के लोग पहुंच जाए तो बड़ी ही सहजता से वह जगह ऊंची जाति के लोगों को दे दिया जाता है। श्यौराज सिंह बेचैन लिखते हैं कि ''यह जगह टीले जैसी जैसी ऊंची थी जिस पर भंगी और चमार साथ-साथ रहते थे। हम चमार जानें क्यों खुद को ऊंचा और भंगियों को नीचा समझते थे। एक नीम के नीचे बैठकर भी भेद दर्शाने के लिए चमार मिट्टी के ऊंचे टीले पर और भंगी निचली जगह पर बैठकर लंबे-लंबे किस्से कहानियां सुनाया करते थे। बीच में कोई यादव या मुसलमान आ जाता तो भंगी चमार दोनों अपनी खांटे या ऊंचा टीला छोड़ नीचे जमीन पर बैठ जाते थे। यह सब सहज था। बराबरी के लिए किसी का कोई संघर्ष तनाव या द्वंद्व नहीं था। आर्य समाजी होने से पहले मैं भी इस भ्रम में था कि मैं भंगियों से कुछ ऊंचा हूं, जबकि हमारे घर की आर्थिक स्थिति भंगियों की स्थिति से ज्यादा खराब थी।''[21] यहां मुख्य बातें जो ध्यान देने योग्य हैं वह यह कि 'यह सब सहज था' अर्थात गांव की मानसिकता जाति व्यवस्था को सहज स्वीकार करती है। दूसरी बात बराबरी के लिए किसी का कोई संघर्ष तनाव या द्वंद्व नहीं था। इससे यह साफ़ होता है कि जाति व्यवस्था बराबरी के लिए संघर्ष की चेतना पैदा नहीं होने देती है। तीसरी बात आर्य समाजी की मानसिकता जो कि गैर बराबरी को बरकरार रखती है। और सबसे महत्वपूर्ण बात यह कि भारतीय समाज में आर्थिक व्यवस्था सामाजिक सम्मान का आधार नहीं रहा है। पता नहीं वह नीम हमारी कितनी पीढ़ियों की विरासत था। यह नीम का पेड़ समाज में व्याप्त विभाजन को ही नहीं उजागर करता है बल्कि सामाजिक अंतर्विरोधों को भी दिखाता है। ''कई मामलों में तो इन शूद्रों का अछूतों के प्रति व्यवहार ठाकुर, जाटों और जाटवों से भी अधिाक सामंती था।''[22]

शूद्रों अर्थात पिछड़े वर्गों (बहुजन समाज) में यह जो अछूतपन की भावना आई उसका कारण सामाजिक नीतियों और वर्चस्व का संस्कृतिकरण है। संस्कृतिकरण की प्रक्रिया में वे अपने को श्रेष्ठ समझने लगे और सामने वालों को निम्न जिसका नकारात्मक प्रभाव तो दूसरों पर पड़ा ही स्वयं को भी इससे अछूता नहीं रख पाया। इस अंतर्विरोध को समतापरक आंदोलन की प्रक्रिया के तहत खत्म करना होगा, यह नई सामाजिक संरचना के लिए बहुत ही घातक है। यदि शूद्र समाज जिसे आज ओ.बी.सी. कहा जाता है, समय रहते हुए अपनी इस मानसिकता में बदलाव नहीं करता है और दलित आंदोलन, 'जिसका नेतृत्व दलित समाज को करना है' इस मानसिकता को समाप्त करते हुए आंदोलन को व्यापक फलक प्रदान नहीं करता है तो सामाजिक अंतर्विरोध के बीच आंदोलन का स्वरूप प्रभावित होगा और नई संरचना के निर्माण की प्रक्रिया लंबी हो जाएगी। क्योंकि इस अंतर्विरोध की स्थिति का बना रहना शासन व्यवस्था का अपने दायित्व से मुक्त रहना है। दूसरे शब्दों में राज्य ने सामाजिक दायित्व और सामाजिक विकास से अपने को मुक्त रखा। शासन सत्ता एवं सामाजिक दायित्व से मुक्त रहने का प्रमुख कारण यह है कि वह दलित समाज को अंधकार में रखकर अपनी सत्ता बनाए रखना मुख्य मकसद समझता रहा है, क्योंकि यदि दलित समाज शिक्षा प्राप्त कर लेता है तो वह उनका वोट बैंक बनने से इंकार कर देता। इस स्थिति में वह चेतनशील होकर समाज में बराबरी का समान हकदार बन जाता। जो वर्चस्वशाली समाज को पसंद नहीं है। श्यौराज सिंह 'बेचैन' के शब्दों में, ''पिछली ज्ञात पीढ़ियों में कभी किसी को अक्षर ज्ञान प्राप्त करने का भी कोई जीवन मौका नहीं मिला था। वे सब तरह से सामाजिक गुलाम पीढ़ियां थीं। उन्हें पता नहीं देश में कब कौन सुधारक आये कि किसने न्याय किया, कौन तरक्की पसंद रहा। किसी के किसी भी कार्यक्रम ने मेरे पूर्वजों की दुर्दशा को देखा नहीं। वेदना को महसूस नहीं किया, कराहों को सुना नहीं देशी विदेशी अपने पराए हिन्दू मुसलमान सब उनसे काम लेते गये और विपन्नता बेबसी देते गये।''[23] यहां स्पष्ट हो जाता है कि वर्णसत्तावादियों की ब्राह्मणवादी नीति के कारण ही भारतीय समाज में सामाजिक विपन्नता आई है।

सामाजिक विपन्नता के कारणों का संबंध जीवन में अभाव या वंचना के शिकार से लिया जाता है। ''भारतीय समाज में सामाजिक विपन्नता को निर्धारित करने वाले कारक हैं: बौद्धिक क्रियाशीलता में क्रमिक ह्रास, शैक्षणिक उपलब्धि में ह्रास तथा स्कूल में नाम लिखाने के तुरंत बाद पढ़ाई छोड़ देने की प्रवृत्ति। घर का भौतिक पर्यावरण, आर्थिक स्थिति, भोजन, शैक्षणिक अनुभव, लालन पालन के ढंग, प्रेरणात्मक एवं संवेगात्मक अनुभूतियां, धार्मिक अनुभूतियां आदि।''[24]सामाजिक विपन्नता के समाजशास्त्रीय अध्ययन दलित आत्मकथाएं प्रस्तुत करती हैं और इस बात को बहुत ही शिद्दत के साथ रखती हैं कि भारतीय समाज में सामाजिक विपन्नता एवं आर्थिक विषमता वर्णसत्तावादी व्यवस्था के गिरत में मौजूद सांस्कृतिक और आर्थिक संसाधन है। इसके कारणों की पड़ताल करते हुए आनंद तेलतुंबड़े ने लिखा है कि ''भारतीय समाज में आर्थिक संसाधान का वितरण भी जातिगत है। भारतीय सामंतवाद में उत्पादन के संबंध, इस तरह आवश्यक रूप से जातिगत आधार से जुड़े हुए थे। द्विजों ने ऐसा वातावरण बना रखा था कि बौद्धिक श्रम का सारा काम वे ही करेंगे जैसे शासन करना, सेनाओं पर नियंत्रण, विज्ञान, चमत्कार और रीति-रिवाजों पर अपना एकाधिकार बनाए रखना जबकि छोटी जाति के लोग शारीरिक श्रम और दासोचित काम करने तक ही बंधो होते थे।''[25] आनंद तेलतुंबड़े के अनुसार भारतीय समाज में विकास को आधार और अधिसंचरना के आधाार पर नहीं देखा जा सकता है क्योंकि

''आधार और अधिसंरचना दोनों में जातियां एक हिस्सा हैं तो यह भी उचित नहीं।''[26] वे आगे लिखते हैं कि ''सबसे आसान और सही दृष्टिकोण होगा कि जातियों की वास्तविकता को वर्ग-विश्लेषण के साथ अंतर्भूत किया जाए और एक समेकित वर्ग-संघर्ष को बढ़ाया जाए जिसमें जाति-व्यवस्था के विरूद्ध) सभी विश्वसनीय प्रामाणिक संघर्षों को शामिल किया जाए। इस दृष्टिकोण को लेकर चलने से जातियों को और भी सही तरीके से समझने की जरूरत में मदद मिलेगी। और साम्राज्यवाद विरोधी खेमे को जल्दी से जल्दी समझ लेना चाहिए।''[27]

जाति-समस्या की जड़ कहाँ है? इसके मूल में जाये बगैर इसे समाप्त नहीं किया जा सकता। डा0 अम्बेडकर ने 'जाति-प्रथा उन्मूलन' के अंतर्गत शास्त्र अनुमोदित धर्म को ही जाति-प्रथा का दोषी ठहराया है। इस संदर्भ में वे तार्किक ढंग से सुस्पष्ट करते हैं, ''मेरी राय में उनका धर्म दोषी है, जिसके कारण जाति-व्यवस्था की धारणा का जन्म हुआ है। यदि यह बात सही है तो यह स्पष्ट है कि वह शत्रु जिसके साथ आपको संघर्ष करना है, वे लोग नहीं हैं जो जाति-पांति मानते हैं, बल्कि वे शास्त्र हैं, जिन्होंने जाति-धर्म की शिक्षा दी है। रोटी-बेटी का संबंध न करने या समय-समय पर अंतर्जातीय खान-पान और अंतर्जातीय विवाहों का आयोजन न करने के लिये लोगों की

आलोचना या उनका उपहास करना वांछित उद्देश्य को प्राप्त करने का एक निरर्थक तरीका है। वास्तविक उपचार यह है की शास्त्र से लोगों के विश्वास को समाप्त किया जाए। यदि शास्त्रें ने लोगों के धर्म, विश्वास और विचारों को ढालना जारी रखा तो आप कैसे सफल होंगे?''[28]

समग्रत: कहा जा सकता है कि भारतीय समाज की सरंचना ही वर्ण-जाति आधारित नहीं है बल्कि विकास की सभी धाराएं भी वर्ण-जाति आधारित हैं और उसी से नियंत्रित होती हैं। ऐसी स्थिति में किसी भी तरह का निर्माण रेत की ढेर पर निर्माण जैसा होगा जिसे बाबा साहेब हमेशा से कहते और लिखते आ रहे थे कि इस देश में जाति की नींव पर कभी भी एक समृद्ध और समतामूलक राष्ट्र का निर्माण नहीं किया जा सकता। क्योंकि जाति कभी भी दो समुदाय के बीच मैत्री और करूणा का भाव पैदा नहीं होने देती है। इसलिए जाति का प्रश्न सिर्फ किसी एक समुदाय मात्र की समस्याओं का सवाल नहीं है बल्कि राष्ट्र की समस्याओं का सवाल है। इसलिए यदि एक समृद्ध समाज और विकसित राष्ट्र का निर्माण करना है तो जितना जल्दी हो सके जाति और जाति को पुख्ता करने वाले सभी तंत्र धर्म और ध र्मशास्त्र आदि पर विचार करके उसे खत्म करने की पुरजोर पहल करनी चाहिए। इस संदर्भ में सबसे बेहतर विकल्प यह है कि सभी राजनीतिक दलों के एजेंडे में यह शामिल हो। इस संदर्भ में अजमेर सिंह काजल ने 'दलित आत्मकथाएं वेदना, विद्रोह और सांस्कृतिक रूपांतरण' में ठीक ही कहा है, ''हिंदू समाज और ध र्म द्वारा दलित समाज को हजारों वर्षों से असंख्य दंड दिए गए हैं जो इनके सांस्कृतिक पिछड़ेपन और जाति संबंधी मनोरोग का परिणाम हैं। इनकी समाप्ति तभी संभव है जब सत्ताएं वोट बैंक से नजरें हटाकर देश के सभी लोगों के बारे में सोचें।''[29]

इस तरह के संकल्पिक प्रयास से ही जाति की समस्या के अंत की ओर हम बढ़ सकते हैं। जाति की व्यावहारिक समस्या को दलित आत्मकथाएं प्रामाणिक तौर पर प्रस्तुत कर रही हैं। स्वानुभूतियों से उपजे जाति के प्रश्न बृहत्तर स्तर पर बदलाव की मांग करते हैं। दलित साहित्य आंदोलन अब बहुजन स्वरूप ग्रहण कर रहा है। धीरे-धीरे दलित शब्द शबहुजनश में अर्थान्तरित होकर सामाजिक परिवर्तन को गति प्रदान करने की ओर उन्मुख है।

संदर्भ :

1.ओमप्रकाश वाल्मीकि, जूठन, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली,1997, पृ. 14

2.वही,पृ. 77

3.वही, पृ. 54

4.वही, पृ. 121

5.वही, पृ. 114

6.कौसल्या बैसंती, दोहरा अभिशाप, परमेश्वरी प्रकाशन, दिल्ली, 2009, पृ. 98

7.डॉ. तुलसीराम, मुर्दहिया, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2010, पृ. 105

8.ओमप्रकाश वाल्मीकि, जूठन, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, 1997, पृ. 160

9.वही,पृ. 160

10.कौसल्या बैसंत्री, दोहरा अभिशाप, परमेश्वरी प्रकाशन, दिल्ली, 2009, पृ. 116

11.आनंद तेलतुमडे, साम्राज्यवाद का विरोध और जातियों का उन्मूलन, ग्रंथ शिल्पी, दिल्ली, 2010, पृ. 32

12.बाबा साहेब डॉ. अम्बेडकर संपूर्ण वाड.मय, प्रकाशन विभाग भारत सरकार, दिल्ली, 1993 पृ. 89

13.ओमप्रकाश वाल्मीकि, जूठन, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, 1997, पृ. 53

14.वही,पृ. 53-54

15.श्यौराज सिंह बेचैन, मेरा बचपन मेरे कंधों पर, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2009, पृ. 140

16.डॉ. वैद्यनाथ प्रसाद वर्मा, शिक्षाशास्त्र, बिहार हिंदी ग्रंथ अकादमी, पटना, 1975, पृ. 13

17.सुशीला टाकभौरे, मनोगत (भूमिका), शिकंजे का दर्द, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली

18.हेमलता महीश्वर, 'शिकंजे का दर्द' के बहाने उद्धृत........, राम चंद्र, प्रवीण कुमार, दलित आत्मकथाएं: स्वानुभूति एवं सर्जना का परिप्रेक्ष्य, खण्ड-दो, एकेडमिक पब्लिकेशन, दिल्ली, 2017 पृ. 24

19.सूरजपाल चौहान, तिरस्कृत, अनुभव प्रकाशन, गाजियाबाद, 2005, पृ. 13

20.श्यौराज सिंह बेचैन, मेरा बचपन मेरे कंधों पर, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2009, पृ. 68

21.वही, पृ. 84

22. वही, पृ. 402

23. ग्रंथ अकादमी, पटना, 1991, पृ. 530

25. आनंद तेलतुंबड़े, पृ. 42

26. वही, पृ. 48

27. वही, पृ. 49

28. बाबा साहेब डॉ. अम्बेडकर संपूर्ण वाड.मय, प्रकाशन विभाग भारत सरकार, दिल्ली, 1993 पृ. 91

29. अजमेर सिंह काजल, 'दलित आत्मकथाएं वेदना, विद्रोह और सांस्कृतिक रूपांतरण, (भूमिका से), अनामिका प्रकाशन दिल्ली, 2017, पृ. 11

◆◆◆

Vol. 11
Issue 1&2
15 July 2020

ISSN 0975 1254 (PRINT)
ISSN 2249-9180 (ONLINE)
www.shodh.net

A Refereed Research Journal
And a complete Periodical dedicated to
Humanities & Social Science Research

शोध संचयन

नरेंद्र कोहली के रामकथा आधारित उपन्यासों में उत्तरआधुनिकता

बीज शब्द :

नरेद्र कोहली, हिन्दी उपन्यास, रामकथा, पुराण, उत्तर आधुनिकता, उत्तर संरचनावाद

रामकथा पर आधारित उपन्यासों की कथा यद्यपि सभी के लिए सर्वविदित है परन्तु नरेन्द्र कोहली ने प्रचलित रामकथा से बिल्कुल अलग हटकर एवं तर्कयुक्त तथा वैज्ञानिक रामकथा को प्रकट किया। वे कहते है वैसै भी मेरा लक्ष्य अवतार के कारणों का वर्णन न होकर अन्याय का विरोध करना था। ल्योतार टोटेलिटी के विरुद्ध है। उत्तर आधुनिकता की परिभाषा देते हुए वह कहते है हमें सकलता के खिलाफ युद्ध छेड देना चाहिए, इसकी अपेक्षा हमारी सक्रियता विशिष्टता के प्रति होनी चाहिए। इस शोध पत्र में रामकथा के ऐसे ही पहलुओं पर प्रकाश डाला गया है।

*****

डॉ० राजनारायण शुक्ल
हिन्दी विभाग
शंभुदयाल पी0जी0 कालेज, गाजियाबाद

नरेंद्र कोहली के रामकथा आधारित उपन्यासों में उत्तर आधुनिकता

बीसवी शताब्दी के सातवें दशक में जब हिंदी के साहित्य जगत में आधुनिकता बोध के सभी बिंदुओं का चित्रण हो रहा था। वही दूसरी ओर उस पर अस्तित्ववाद का प्रभाव भी पड़ रहा था। परिणामतः साहित्य में पारिवारिक विघटन के साथ-साथ भय, त्रस, पीड़ा, मृत्युबोध, निराशा, कुंठा जैसी संवेदनाएं चित्रित की जा रही थी। भारतीय समाज की स्थिति भी यही थी। नगरों और महानगरों में सामूहिक परिवार टूट रहे थे। सामाजिक घुटन की स्थिति यहां तक पहुंच गयी थी कि एकाकी परिवार भी टूटने लगा था। लहदू एकाकी परिवार में तलाक के मुकदमों की संख्या बढ़ने लगी थी।

भारतीय समाज और साहित्य की जो स्थिति थी कमोवेश वैसी ही स्थिति पूरे विश्व की सभी भाषाओं के साहित्य और समाज की भी थी। आठवें दशक में चरम भौतिकता और उसके परिणामों का बहिष्कार करती थी जिसके परिणामस्वरुप समाज की अपनी संस्कृति की पहचान खोने लगी थी। इस तथ्य को जानने हेतु क्यूबेक सरकार द्वारा समाज की वर्तमान स्थिति जानने के लिए ल्योतार को यह कार्यभार सौंपा गया। ल्योतार ने सर्वप्रथम यह बताया कि विज्ञान, साहित्य और कला के क्षेत्र में परंपराओं का पालन न किए जाने के कारण संकट की स्थिति उत्पन्न हो गई है। ल्योतार ने कहा कि नई प्रौद्योगिकी के कारण महाआख्यान तत्व, समीक्षा, दर्शन आदि विलुप्त हो गई है। उसने बताया कि समाज एकरूपता को नही अपनाना चाहता यही कारण है कि लोग अब अपनी पुरानी परंपराओं और ज्ञान की ओर आकृष्ट हो रहे हैं । इसी को उसमें उत्तर आधुनिकता का नाम दिया।

यह सर्वमान्य, सर्वभौमिक और सार्वकालिक सत्य है कि एक ही प्रकार के विचार एक ही समय में विभिन्न राष्ट्रों के बौद्धिक प्राणियों के मन में उत्पन्न होते हैं। 1979 में ल्योतार ने समाज की जिस स्थिति को देखा था, वह एक दिन में उत्पन्न नही हुई थी अपितु लगभग एक दशक से उसका आरंभ हो चुका होगा। आठवां दशक भारत में प्रतिक्रियाओं का दशक था। लहदी काव्य में राजनीतिक कविताएं लिखने की परंपरा चल पड़ी थी, उसी प्रकार भारत के नैतिक व्यद्रियों की प्रतिक्रियाएं भिन्न-भिन्न रही। ल्योतार ने कहा था कि मानवता के विकास के लिए कार्य करने की आवश्यकता है।

इधर हिंदी के महान उपन्यासकार नरेंद्र कोहली भी आठवें दशक में पहुंचकर उपभोक्तावादी संस्कृति के कुप्ररिणामों से विचलित हुए और उन्होंने मानवतावादी कथा राम- कथा पर उपन्यास लिखने का निश्चय किया। रामकथा को औपन्यासिक शैली में प्रस्तुत करने के पीछे निश्चय ही आधुनिकता की अपसंस्कृति के विरुद्व मानसिक प्रक्रिया थी। वे स्वयं दीक्षा उपन्यास की भूमिका में इस तथ्य को मानवतावादी दृष्टि के द्वारा अभिव्यद्रि देते हैं, और मैंने अपने शैशव से राम को एक अत्यंत सहज मानवीय चरित्र के रूप में देखा था मेरे मन के राम ने मुझे सदा एक जनवादी समता तथा न्याय पर आधृत चेतना दी थी। सामंती और पूंजीवादी चुनाव के सर्वथा विरुद्ध राम मुझे सदा जनवादी नैतिकता के ध्वज वाहक दिखे थे।

नरेंद्र कोहली के मानस में जब राम के उच्च मानवीय मूल्यों पर आधारित उपन्यास जन्म ले रहा था तब तक न तो उत्तर आधुनिकता का जन्म हुआ था और न ही तथा कथित वामपंथी इसे उचित मानते थे कि राम और कृष्ण पर कोई वामपंथी उपन्यासकार उपन्यासों की रचना करें। स्वयं नरेंद्र कोहली ने वापपंथियों के इस विरोध पर प्रकाश डाला था।

'एक विशेष राजनीतिक संप्रदाय के लोग दीक्षा के प्रकाशन के समय से ही मुझे समझा रहे हैं की राम कथा लिखने के कारण मेरे लेखन ने एक गलत मोड़ ले लिया है जो मेरे साहित्यिक जीवन का अवसान है। वे मुझे यह भी समझाते हैं कि वे मेरी इस रचना से प्रसन्न नही है और अब वे क्षमता भर मेरा, मेरी कृतियों का, मेरे लेखन का और मेरे अस्तित्व का विरोध ही करेंगे।

हिंदी साहित्य का पाठक वर्ग हमारे कथन की पुष्टि करेगा कि नरेंद्र कोहली ही हिंदी के प्रथम उत्तर आधुनिक साहित्यकार हैं। लहदी के पाठक वर्ग मैं नरेंद्र कोहली के इन परंपरावादी उपन्यासों का जो स्वागत किया है, वह सर्वविदित है। उनके विरोधी स्थिति यहां तक पहुंच गम्र कि उत्तर आधुनिकता का झंडा उस राजनीतिक विचारों के समर्थकों को उठाना पड़ा है, जिन्होंने नरेंद्र कोहली को चेतावनी दी थी। 1975 में राम कथा पर आधारित उनका पहला उपन्यास दीक्षा प्रकाशित हुआ।

अब हम नरेंद्र कोहली के उपन्यासों में चित्रित राम के उत्तर आधुनिकतावाद स्वरूप पर विचार करेंगे।

राम कथा पर आधारित उपन्यासों की कथा यद्यपि सभी के लिए सर्वविदित है परंतु नरेंद्र कोहली ने प्रचलित रामकथा से बिल्कुल अलग हटकर एवं तर्कयुद्र तथा वैज्ञानिक रामकथा को प्रकट किया। वे कहते हैं वैसे भी मेरा लक्ष्य अवतार के कारण ाों का वर्णन ना होकर अन्याय का विरोध करना था। ल्योतार टोटेलिटी के विरुद्ध है। उत्तर आधुनिकता की परिभाषा देते हुए

वह कहते हैं हमें सकलता (टोटेलिटी) के खिलाफ युद्ध छेड़ देना चाहिए, इसकी अपेक्षा हमारी सक्रियता विशिष्टता के प्रति होनी चाहिए।

नरेंद्र कोहली के उपन्यास दीक्षा में रावण का चरित्र सकलता को स्थापित करता है। वह भौतिकवादी संस्कृति का प्रतीक है। दीक्षा में नरेंद्र कोहली रावण के शासन को सुस्पष्ट करते हुए लिखते हैं– 'पर रावण के सैनिक अभियानों के पीछे सुशासन का लक्ष्य नही है। वह तो अपने लिए विलास, संपन्नता, अधिकार चाहता है उसके लिए न्याय अन्याय का द्वंद्व नही है। उसका शासन एक व्यद्रि सर्वशद्रिमान अधिनायक का शासन है वह न अपनी मंत्री परिषद का परामर्श मानते हैं न विद्वानों का। निर्धन प्रजा की सुनवाग्र नहह्न है उसके राज्य में उसके तंत्र के मूल में स्वर्ण है पुत्र।

रावण के इसी अधिनायकवादी शासन संपूर्ण ब्राह्मण को एवं राज्य करने की इसकी मनोकामना के विरुद्ध नरेंद्र कोहली के जननायक राम खड़े होते हैं। यहां में पुनः स्मरण चाहूंगा कि ल्योतार विखंडन अर्थात स्थानीयता के पक्षधर है, वे विविधता के हामी है। दीक्षा के नायक राम इस कसौटी पर बिल्कुल खरे उतरते हैं। अयोध्या के राजकुमार होते हुए भी रावण के विशाल साम्राज्य के विरुद्ध खड़े होने के लिए उन्होंने अयोध्या से सेना नही बुलाई। अपितु उन्होंने अपने वनवास क्षेत्र की जनजातियों शबर, किलात, वानर आदि को एकत्र किया। रावण के अत्याचारों से निर्भीकतापूर्वक लड़ना सिखाया जोश भरा। स्थानीय ग्रामीणों के प्रति राम के विश्वास को व्यद्र करते हुए नरेंद्र कोहली दीक्षा में लिखते हैं कि इससे भी बड़ा आश्चर्य था कि साथ लगते ग्रामों के प्रायः समस्त सभी पुरुष अपने परिवारों के साथ सिद्धाश्रम में उपस्थित थे। राम के नेतृत्व में राक्षसों के विरुद्ध लड़ने के लिए तैयार लोग कौन थे। नरेंद्र कोहली दीक्षा में लिखते हैं 'रंग रूप से वे लोग निषाद जाति के लगते थे। इनके पास कुछ रोटी, पुरानी तलवारे, कुछ कुल्हाड़ियाँ और छोटे–छोटे धनुष थे। इनके बाण बिना ?ल के थे। परंतु इनका पराक्रम अद्भुत था।'

उत्तर आधुनिकता स्थानीयता के साथ –साथ उपेक्षित या नकार दिए गए, व्यद्रियों या समूहो की भी पक्षधर है रिचर्ड गोट कहते हैं। उत्तर आधुनिकता मनुष्य की मुद्रि के रूप में जिसमें विखंडन, संस्कृतियों की बहुलता या समूहो की विविधता है। यह इसके विभाग में ही है कि अगणित समूह पिछड़े और कमजोर वर्ग, स्त्रियों और नाना प्रकार के संप्रदाय आगे पाएंगे।

उत्तर आधुनिकता की यह स्थिति राम के द्वारा अहिल्या जैसी उपेक्षित नारी को सामाजिक सम्मान दिलाने मैं स्पष्ट होती है। 'मेरी प्रतीक्षा आज पूर्ण हुई। मेरी साधना सफल हुई। मेरा आत्मश्विास लौट आया है। राम तुमने मेरे मन को विश्वास दिया है कि मैं अपराधिनी नही हूँ।'

इस प्रकार हम यह कह सकते हैं नरेंद्र कोहली के राम कथा कथात्मक उपन्यासों में आधुनिकता की अनेक दशाएं स्पष्ट रूप से चित्रित हुई है।

संदर्भ सूची

1. दीक्षाए नरेंद्र कोहलीए पृष्ठ 191
2. वही
3. आधुनिकताए उत्तर आधुनिकता व नव समाजशास्त्रीय सिद्धांतए दोषीए पृष्ठ 183
4. अवसरए नरेंद्र कोहलीए पृष्ठ 85

◆◆◆

पुस्तक समीक्षा

डॉ योगेन्द्र नाथ शर्मा ''अरुण''
पूर्व प्राचार्य एवं अध्यक्ष, हिंदी विभाग 74/3, न्यू नेहरु नगर, रूडकी-247667 (उत्तराखंड) भारत

हिंदी के अनन्य अनुरागी सेवी और अंतर्राष्ट्रीय ख्याति के रचनाकार श्री सुरेशचन्द्र शुक्ल ''शरद आलोक'' के कविता संग्रह ''लॉक डाउन'' की कई कविताओं को पढकर मुझे लगा कि कवि 'शरद आलोक' को वागीश्वरी माँ शारदा का आशीर्वाद मिला है, जिसके बल पर उन्होंने विश्वव्यापी संकट की इस घड़ी को भी उत्सव बना कर हिंदी-जगत को अपने ह्रदय का नवनीत दे दिया है।

''लॉक डाउन'' में माँ शीर्षक से रची गई उनकी भावपूर्ण रचना की अंतिम पंक्तियों में जो गंभीर प्रश्न आया है, उसे मैं वैश्विक चुनौती ही कहूँगा। कविता देखिए-

''850 किलोमीटर की दूरी को
सड़क पर
पैदल चलकर तय कर रही माँ।
ब्रिटेन में कोरोना से पीड़ित माँ
जन्म देकर खुद चल बसी।
भारत में जन्म देकर कोरोना पीड़ित माँ
अपनी संतान से वीडियो पर
कर रही संवाद।
कश्मीर में महीनों कर्फ्यू में खिड़की से
अपने बच्चे को दुनिया दिखाती माँ।
अपने बच्चे को दूध पिलाती
दुनिया की अनेक जेलों में बन्द,
कोरोना से बचाने के लिए
हाथ-सिलाई मशीन से
मास्क सिलती माँ।
महिलाओं की आधी आबादी होने,
फर भी संसद तक
आधा प्रतिनिधित्व नहीं ले सकी औरत।
अपने बच्चों को पालना छोडकर
राजनीति में उतरने की सोच रही औरत।
शायद कुछ समय तक
औरत नहीं बनेगी माँ?''

माँ की वात्सल्यमयी छवि देकर एक बेहद ज्वलंत प्रश्न उठाने वाले कवि ''शरद आलोक'' निस्संदेह आने वाले समय में ''माँ'' की बदलती छवि हमें दिखा रहे हैं। कवि का प्रश्न कुरेदता जरूर है।

एक दूसरी कविता है ''जोखिम में सफर'' जो व्यक्ति की अदम्य जिजीविषा को हमारे सामने मूर्तिमान कर देती है। इस कविता का कथ्य एवं शिल्प मेरी तरह आपको भी प्रभावित अवश्य करेगा-

''कोरोना से अब रहा न पहले वाला डर।
वायदों के न निभाने से परेशान?
चल पड़े मजदूर हैं, अपने-अपने घर,
हाथ पर लेकर जानउठाने
जोखिम से भरा सफर।
अभी भी निरंतर चल रहे,
अपनी सीमा लाँघते
प्रवासी मजदूर उठाने।
गाड़ियों पर चढ़े,
जैसे हों एवरेस्ट की चींटी,
जीवन को जोखिम में डालना
सीख गए प्रवासी मजदूर।
आज नहीं कल पास आ जाएंगे,
अपने-अपने मुकाम।
छूट गई नौकरी और काम।
संघर्ष है चलना मनुज का,
चाहे जितना कठिन हो मार्ग।
दशरथ मांझी सा जाग रहा पुरषार्थ,
उठो, अभी रुकना नहीं हे श्रमिक।
देश-दुनिया में सदा चलें,
जो प्रगति का सन्मार्ग।-ुनवज;

इस विचारोत्तेजक कविता ने अभी अभी बीते ''मई दिवस'' की याद ताजा करा दी है, जहाँ श्रमिक के संघर्ष की गाथाओं को भी ''लॉक डाउन'' इस बार निगल गया है। मैं बंधुवर श्री सुरेशचन्द्र शुक्ल 'शरद आलोक' को ह्रदय से बधाइयाँ देना चाहता हूँ कि उन्होंने हिंदी-जगत को अपनी कविताओं का उपहार देकर विश्व-त्रासदी को यादगार बना दिया है।

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 0975 1264
RNI NO. DELBIL / 2010 / 31292

International Journal (Bi-lingual)
B-9, Second Floor, Gagan Apartment, Gagan Vihar Extension, Delhi-51
Editorial Office:
Dr. Sunita Singh, 409, Shantivan, 2A/244A Azad Nagar, Kanpur-2088002
shodhsanchayan@gmail.com, info@shodh.net

MEMBERSHIP FORM

Dated ....

The Editor,
Shodh Sanchayan
New Delhi-110051

Dear SirhaMadam,

Please enroll me as a

Life *member (Rs. 4000/- for Institution and Rs.3000/- for Individual) / 1
5 Year (Rs. 1500/- for Institution and Rs.1400/- for Individual) /
3 Year (Rs. 1000/- for Institution and Rs. 800/- for Individual) /
Annual member (Rs. 400 /- for Institution only)
of Shodh Sanchayan.

I am sending here with Rs............... in cash/multicity cheque/bank draft No............... Dated.............

Bank ....on account of above membership.

Name: ....

Designation : ....

Address: ....

....

Tel,/Mob. No: ....

E-MAIL...

Yours faithfully

(Signature)

Note : - Please send your subscription cheque in favour of Shodh Sanchayan and add Rs. 110/- for outstation cheques (Not for Multicity Cheques). *Subscription fee may be revised according to Editorial Board Decision. Life subscription for ten years or servival of the journal, which is less; Excluding Postage charge.

Address:- Dr. Sunita Singh, Editor, Shodh Sanchayan, 409, Shantivan, 2A/244A Azad Nagar, Kanpur - 208002